।। श्री हरिहरो विजयतेतराम् ।।

श्री हरिहर पंञ्चाङ्ग

वि0 संवत् 2082 सन् 2025-26 ई0





ब्र. श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज

ॐ

॥卐॥ श्री गणेशाय नमः॥卐॥

॥श्री हरिहरो विजयतेतराम्॥

श्री हरिहर कैलास ज्ञानसागर के प्रथम रत्न की चतुस्त्रिशतम् किरण

वैदिक सनातन धर्म के व्रत पर्वादि का बोधक

श्री हरिहर पञ्चाङ्ग

विक्रम सम्वत् - 2082

शकाब्द - 1947

ईस्वी सन्-2025-26

"सिद्धार्थी"

राजा-सूर्य

मन्त्री-सूर्य

श्री हरिहर कैलास ज्ञानपीठ (न्यास)

श्री हरिहर कैलास मार्ग, मुनि की रेती, ऋषिकेश

टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) पिन -249137

दूरभाष-स्वामी जी 9412998360, कार्यालय- 9410925552

Email: hariharteerth@gmail.com

Website: hariharkailas.org.in.

नोटः आपके द्वारा दी गई दानराशि आयकर अधिनियम 1961 के अन्तर्गत 80जी व 35एसी धारा के द्वारा कर से मुक्त होगी।

विषय-सूची

भूमिका

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् । तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

वेद पुरूष के छः अंगो में ज्योतिष शास्त्र को वेद का नेत्र कहा गया है। अर्थात् ज्योतिष वेद का मुख्य अंग है।

वेदा हियज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वाऽभिहिताश्च यज्ञाः।।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ।।

वेदों की रचना यज्ञों के लिए हुई है। यज्ञानुष्ठान सुनिर्णीत काल की अपेक्षा रखता है। ज्योतिषशास्त्र काल का निर्णायक है, अतः ज्योतिष तत्व को जानने वाला ही अच्छी प्रकार यज्ञ को जान सकता है। वही सुखस्वरूप यज्ञों को विधि–विधान से कराने में सक्षम है। हमारे प्राचीन ऋषि महर्षियों ने लौकिक एवं पारलौकिक सुखों के लिए यज्ञ–अनुष्ठान और उपासना का मार्ग बताया है।

दिव्य प्रकाश पुंज्ज रूपी ज्योतिष शास्त्र की पांच किरण तिथिवारादि हैं। उन समस्त अवययों का यर्थाथ ज्ञान कराने वाला पाँच अंगो से परिपूर्ण पंचाग आदरणीय है।

श्रौतं स्मार्तं च गार्हस्थयं यद्विना नैव सिद्धयति।
तत्कालाख्येश्वरस्याङ्गं वन्दे तिथ्यादिपञ्चकम् ।।

ग्रहस्थ के वैदिक तथा स्मार्त कोई भी कार्य बिना तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन **पंञ्च अंग** के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। देवभूमि हिमालय के द्वार पर स्थित पुण्य क्षेत्र ऋषिकेश में पुण्य सलिला भगवती भागिरथी के पावन तट पर लौकिक एवं ब्रह्मविद्या का सुविदित केन्द्र '' श्री हरिहर कैलास ज्ञानपीठ'' प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी यह ' श्री हरिहर **पंञ्चाङ्ग** प्रकाशित कर रहे हैं। जो कि सम्पूर्ण मानव जीवन के सुचारू कर्म प्रवाह

की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। 'गागर में सागर' न्याय से सरलीकरण हेतु इस **पंञ्चाङ्ग** की उपादेयता स्वत: सिद्ध है। हमें विश्वास है कि पूर्व वर्षो की भांति इस वर्ष भी धर्म प्रेमी जिज्ञासु एवं भक्तवृन्द इस परमार्थ कार्य से लाभान्वित होकर पुण्य के भागी बनेंगे।

।। पंञ्चाङ्ग देखने के लिए आवश्यक निर्देश ।।

यह पंचाग 30 अक्षांश के ऊपर आधारित है। तिथ्यादि का नाम घण्टा–मिनट में होने से सर्वत्र उपयोगी है। पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्र के समाप्तिकाल तथा चन्द्रमा का राशि प्रवेश (प्रारम्भ) काल भी घण्टा –मिनट में दिए गए हैं। पंचक, भ्रदा, संक्रान्ति तथा पुण्यकाल आदि के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल भी दिये गये है। तिथि आदि के घण्टा–मिनट में जहाँ 28:08. लिखा हो वह रात्रि 4:08 मिनट समझना चाहिए।

इस **पंञ्चाङ्ग** में करण सूर्योदयव्यापी ही लिखे गये हैं पक्ष वाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कॉलम में 15 की पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष में 30 को अमावस्या समझना चाहिए।

'गते' से वैशाख आदि मासों के प्रविष्टा समझना चाहिए।

जिस दिन अग्निवास भूलोक में है उस दिन के आगे आग का चिन्ह अंकित किया गया है।

दैनिक हवन, पर्व आदि शुभ कार्यो में तथा दुर्गानुष्ठान, मुण्डन,विवाह आदि में अग्निवास न होने पर भी हवन कर सकते हैं। आशय यह है कि उक्त कार्यो में अग्निवास विचारणीय नहीं है।

यात्रा शुभ दिशा के कॉलम में प्रतिदिन राशियों के अनुसार शुभ दिशा दी गयी है, दिन के जिस घं मि. से राशि प्रवेश प्रारम्भ होगा, वही घं. मि. से शुभ दिशायें लागू होंगी। जिस राशि के सामने घं. मि. की संख्या नही है उस राशि का प्रारम्भ काल सूर्योदय काल समझे।

।। पंञ्जाङ्ग देखने के लिए आवश्यक निर्देश ।।

दि = दिन, रा = रात्रि, प्रा. = प्रात: सा. = सांयकाल

अथ नवसंवत्सर (सिद्धार्थी) का फल
(वि. सं 2082 सन् 2025-2026)

कल्पादि से गत वर्ष 1972949126 सृष्टि संवत् 19555885126, श्री विक्रम संवत 2082, शक संवत 1947, श्रीकृष्ण जन्म संवत 5126, सप्तर्षि संवत 5101, काले संवत 5126, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत 2550-51, श्रीबुद्ध संवत 2648-49, वर्षारम्भ 2082 विक्रम संवत में (सिद्धार्थी) नामक संवत्सर का प्रवेश हो रहा है। वर्षारम्भ में रुद्रविंशति के अनुसार एकादश युग का सिद्धार्थी नामक संवत प्रारम्भ होगा । इसकी अवधि 15 मार्च 2025 से 10 मार्च 2026 तक रहेगी । विक्रम संवत 2032 का आरम्भ 28 मार्च 2025 को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र , ब्रह्म योग एवं सिंह लग्न में होगी इसी के अनुसार वर्ष का प्रथम वार रवि होने से राजा का पद सूर्य को मिलेगा वसन्त नवरात्र का आरम्भ 30 मार्च 2025 के रेवती नक्षत्र में होगा , इसी दिन से पूजा - पाठ , दान - यज्ञ आदि संकल्पों में सिद्धार्थी नामक संवत का उच्चारण

'सिद्धार्थी' नामक संवत्सर का फल विचार-

1. राजा-सूर्य	2. मन्त्री-सूर्य	3. सस्येश-बुध
4. धान्येश-चन्द्र	5. मेघेश सूर्य	6. रसेश-शुक्र
7. नीरसेश-बुध	8. फलेश-शनि	9 धनेश-मंगल
10. दुर्गेश-शनि		

''सद्धार्थवत्सरे भूयो ज्ञानवैराग्ययुक प्रजाः।
सकलावसुधाभातिबहु सस्यार्धवृष्टिभिः॥''

अर्थात-जिस वर्ष राजा एवं मत्री का पद एक ही ग्रह को मिलता है। उस वर्ष राजनेता अधिक मनमानी करते है। वर्षा कम होना , अग्निकाण्ड , भूकम्प , सामाजिक उपद्रवी से जनता त्रस्त होती है । प्रतिकूल जलवायु के बाद भी धान्यादि प्रचूर मात्रा में होते हैं । प्रजा में ज्ञान-वैराग्य की वृद्धि होती है । सस्येश बुध होने से मेघ अधिक बरसे, ब्राह्मण भक्ति में तत्पर हो, महगाई बढे, धान्येश चन्द्र होने से जनसंख्या के साथ, कपास, चना, सोयाबीन, सरसो, गेहूँ तथा दूग्ध उत्पादन में वृद्धि हो , नदी तालाब में जलस्तर बढे । मेघेश रवि होने से संसार मे भय व्याप्त हो लेकिन धान्य में वृद्धि हो । रसेश शुक्र होने से पृथ्वी पर सुर्भिक्ष, एवं सुविधाओं में वृद्धि हो। नीरसेश बुध होने से रंगीन वस्त्र, रत्न, धातू शंख व चन्दन के मूल्य बढे । फलेश शनि होने से जंगली वनस्पति में कमी, पहाड़ो में प्रतिकूल वातावरण होने से हानि, प्रदूषण के कारण श्वसन रोग बढे। घनेश मंगल होने से वस्तुओं के मूल्य मे कमी-वृद्धि होने से शेयर व व्यवसाय में अस्थिरता आयेगी शासन की नीतियों से प्रजा परेशान होगी। दुर्गेश शनि होने से विभिन्न देशो मे युद्ध की स्थिति बने , प्रजा पलायन करे प्राकृतिक प्रकोपो से जन-धन -कृषि की हानि होगी ।

सारांश-वर्षेश अर्थात राजा का प्रभाव काश्मीर-अफगानिस्तान में सर्वाधिक मंत्री का पूर्व एवं कलिंगादि प्रदेश में, सस्येश का ईशान व मध्यप्रदेश में, धान्येश का नर्मदा तट, मेघेश का मगध (बिहार) में , रसेश का कोंकण व गोवा , नीरसेश का मालवा , उज्जैन- इन्दौर आदि में , फलेश का

काश्मिरादि पश्चिमी भाग में , तथा धनेश व दुर्गेश का फल सर्वत्र समान होता है । उपरोक्तानुसार ही संवत्सर का फल जाने ।

वि.स. 2082 में लाभ-हानि विचार (राशि अनुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	14	08	11	05	08	11	08	14	02	05	05	02
व्यय	14	08	05	05	11	05	08	14	02	02	02	08

देखने की विधि : स्वयं की राशि के आय-व्यय को जोड़कर 01 घटावे, शेष में 8 का भाग दें अंत में शेष 01 बचे तो लाभ, 02 शेष बचे तो सुख-समृद्धि, 03 बचे तो क्लेश, 04 बचे तो रोग, 05 बचे तो मान हानि, 06 बचे तो सम्मान, 07 बचे तो विजय, 08 या 00 बचे तो पूरे वर्ष में परेशानी जानें।

तिथि ज्ञान

तिथि : चन्द्रमा की एक कला को तिथि माना गया है। इसका चन्द्र और सूर्य के अन्तरांशों से मान निकाला जाता है। प्रतिदिन 12 अंशों का अन्तर सूर्य और चन्द्रमा का भ्रमण में होता है। यही अन्तरांश का मध्यम मान है। अमावस्या के बाद प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक तिथियाँ शुक्ल पक्ष की और पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक की तिथियाँ कृष्ण पक्ष की होती हैं।

तिथि	संकेतक	स्वामी	तिथि	संकेतक	स्वामी
प्रतिपदा	1	अग्नि	द्वादशी	12	विष्णु
द्वितीया	2	ब्रह्मा	त्रयोदशी	13	काम
तृतीया	3	गौरी	चतुर्दशी	14	शिव
चतुर्थी	4	गणेश	पूर्णमासी	15	चन्द्रमा
पञ्चमी	5	शेषनाग	अमावस्या	30	पितर
षष्ठी	6	कार्तिकेय			
सप्तमी	7	सूर्य			
अष्टमी	8	शिव			
नवमी	9	दुर्गा			
दशमी	10	काल			
एकादशी	11	विश्वदेवा			

नक्षत्र, वार, योग, करण का ज्ञान

नक्षत्र : चन्द्रमा जिस राशि, अंश,कला,विकला में होता है, उस भाग का स्वामी जो तारा माना गया है वह नक्षत्र कहलाता है। ऐसे नक्षत्र 28 हैं।

क्र.सं.	सांकेतिक अक्षर	पूर्ण नाम	स्वामी
1	अश्वि	अश्विनी	अश्विनी कुमार
2	भर	भरणी	यमराज
3	कृति	कृत्तिका	अग्नि
4	रोहि	रोहिणी	ब्रह्मा
5	मृग	मृगशिरा	चन्द्रमा
6	आर्द्रा	आर्द्रा	शिव
7	पुन	पुनर्वसु	अदिति
8	पुष्य	पुष्य	बृहस्पति
9	आश्ले	आश्लेषा	सर्प
10	मघा	मघा	पित्तर
11	पू.फा.	पूर्वा फाल्गुनी	भग
12	उ.फा.	उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा
13	हस्त	हस्त	सूर्य
14	चित्रा	चित्रात्वष्टा	विश्वकर्मा
15	स्वाती	स्वाती	वायु
16	विशा	विशाखा	इन्द्राग्नि
17	अनु	अनुराधा	मित्र
18	ज्ये	ज्येष्ठा	इन्द्र
19	मूला	मूल	नैॠत्य (राक्षस)
20	पू.षा.	पूर्वाषाढ	जल
21	उ.षा	उत्तराषाढ	विश्वेदेवा
22	श्रव	श्रवण	विष्णु
23	धनि	धनिष्ठा	अष्टवसु
24	शत	शतभिषा	वरूण
25	पू.भा.	पूर्वा भाद्रपद	अनचरण
26	उ.भा.	उत्तरा भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
27	रेव	रेवती	पूषा
28	अं	अभिजित	ब्रह्मा

योग: सूर्य चन्द्रमा के राशि, कला, विकला के जोड़ को योग कहते हैं ये 27 है।

क्र.सं.	पूर्ण नाम	सांकेतिक अक्षर	योगों के स्वामी
1	विष्कुम्भ	विष्क	यम
2	प्रीति	प्रीति	विष्णु
3	आयुष्मान्	आयु	चन्द्रमा
4	सौभाग्य	सौभा	ब्रह्मा
5	शोभन	शोभ	बृहस्पति
6	अतिगण्ड	अति	चन्द्रमा
7	सुकर्मा	सुक	इन्द्र
8	धृति	धृति	जल
9	शूल	शूल	सर्प
10	गण्ड	गण्ड	अग्नि
11	वृद्धि	वृद्धि	सूर्य
12	ध्रुव	ध्रुव	भूमि
13	व्याघात	व्या	वायु
14	हर्षण	हर्ष	भग
15	वज्र	वज्र	वरूण
16	सिद्धि	सिद्धि	गणेश
17	व्यतिपात	व्यति	रूद्र
18	वरीयान्	वरी	कुबेर
19	परिघ	परि	विश्वकर्मा
20	शिव	शिव	मित्र
21	सिद्ध	सिद्ध	कार्तिकेय
22	साध्य	साध्य	सावित्री
23	शुभ	शुभ	लक्ष्मी
24	शुक्ल	शुक्ल	पार्वती
25	ब्रह्मा	ब्रह्म	अश्विनी कुमार
26	ऐन्द्र	ऐन्द्र	पितर
27	वैधृति	वैधृ	दिति

करण : तिथि के आधे भाग को 'करण' कहते है अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं। करणों के नाम नीचे दिये गये हैं।

क्र.सं.	पूर्ण नाम	सांकेतिक अक्षर	योगों के स्वामी
1	बव	ब	इन्द्र
2	बालव	वा	ब्रह्म
3	कौलव	कौ	सूर्य
4	तैतिल	तै	सूर्य
5	गर	ग	पृथ्वी
6	वणिक्	व	लक्ष्मी
7	विष्टि	वि	यम
8	शकुनि	श	कलियुग
9	चतुष्पद्	च	रूद्र
10	नागवान्	नाग	सर्प
11	किंस्तुघ्न	किं	वायु

वार आदि का संक्षिप्त परिचय

वार : ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आज के सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक वार मानते है।

संकेत	बार	संज्ञक
रवि	रविवार	स्थिर
सोम	सोमवार	चर
मंग	मंगलवार	उग्र
बुध	बुधवार	सम
गुरू	गुरूवार	लघु
शुक्र	शुक्रवार	मृदु
शनि	शनिवार	तीक्ष्ण

राशि तथा नक्षत्र चरण से नामाक्षर बोध चक्र

राशि	नक्षत्र	चरणाक्षर
मेष	अश्विनी	चू चे चो ला
	भरणी	ली लू ल लो
	कृतिका	अ 0 0 0
वृष	कृतिका	0 इ उ ए
	रोहिणी	ओ व वि वि
	मृगशिरा	व वो 0 0
मिथुन	मृगशिरा	00 क की
	आर्द्रा	कु च ड छ
	पुनर्वसु	के को हा 0
कर्क	पुनर्वसु	0 0 0 0 ही
	पुष्य	हू हे हो डा
	आश्लेषा	डी डू डे डा
सिंह	मघा	मा मी मू मे
	पूर्वा फाल्गुनी	मो टा टी टू
	उत्तरा फाल्गुनी	टे 0 0 0
कन्या	उत्तरा फाल्गुनी	0 टो पा पी
	हस्त	पू ष ण ठ
	चित्रा	पे पो 0 0

विवाहादी समस्त मांगलिक कार्य, विशेष मुहूर्त यात्रा ग्रह दशा, ग्रहों की गणना दिन दिशा देखने के लिए जन्म राशि की प्रधानता मानी गई है। देश, ग्राम, नगर, घर निवास युद्ध, व्यवसाय, दैनिक व्यवहार, कोर्ट–कचहरी, न्यायालय, रजिस्ट्रीकरण, लेन–देन, आगम प्राप्ति से सम्बन्धित सभी कार्यो में नामराशि मान्य है, जन्मराशि का महत्व नहीं।

राशि	नक्षत्र	चरणाक्षर
तुला	चित्रा	0 0 रा री
	स्वाती	रू रे रो ता
	विशाखा	ती तू त 0
वृश्चिक	विशाखा	0 0 0 तो
	अनुराधा	ना नी नू ने
	ज्येष्ठा	नो या यी यू
धनु	मूल	ये यो भा भी
	पूर्वाषाढ़	भू धा फा ढा
	उत्तराषाढ़	भे 0 0 0
मकर	उत्तराषाढ़	0 भो जा जी
	श्रवण	खी खू खे खो
	धनिष्ठा	गा गी 0 0
कुम्भ	धनिष्ठा	0 0 गू गे
	शतभिषा	गो सा सी सू
	पूर्वाभाद्रपद	से सो द 0
मीन	पूर्वाभाद्रपद	0 टो पा पी
	उत्तराभाद्रपद	दू थ झ ञ
	रेवती	दे दो चा ची

गर्भाधानादि षोडश संस्कार सुसम्पन्नता हेतु जन्मराशिस्थ चन्द्रबल का विचार करना चाहिए। अन्य सभी कार्यो में नामराशि देखनी चाहिए।

यदि जन्मराशि ज्ञात न हो तो नामराशि नक्षत्र से ही विवाहादि सम्पादन में लग्न ग्रहबल का विचार कर लेनी चाहिए।

भारत में दृश्य एवं अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण (वि.सं. 2082, सन् 2025-26 ई0)

1. पूर्णचन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) - सोमवर 07-08 सितम्बर 2025

2. आंशिक सूर्य ग्रहण (भारत मे अदृश्य) - रविवार 21 सितम्बर 2025

3. वलयाकार सूर्यग्रहण (भारत मे अदृश्य) - मंगलवार 17 फरवरी 2026

4. पूर्ण चन्द्र ग्रहण (भारत मे दृश्य) - मंगलवार 03 मार्च 2026

पूर्णचन्द्र ग्रहण 07 सितम्बर रविवार- यह ग्रहण अंटार्कटिका, पश्चिमी प्रशांत महासागर, आस्ट्रेलिया, एशिया, हिन्द महासागर, यूरोप , पूर्वी अटलांटिक महासागर के कुछ हिस्सो मे दिखाई देगा। आइसलैण्ड, अफ्रीका के पाश्चिमी भाग और अटलांटिक महासागर के कुछ भाग में उपच्छाया का अंत चन्द्रोदय के समय दिखाई देगा । यह ग्रहण भारत के सभी हिस्सो में दिखाई देगा। पूरे देश मे ग्रहण के आरम्भ से अंत तक सभी चरण दिखेगें इसका सूतक दोपहर 12:56 से आरम्भ हो जायेगा।

उपच्छाया प्रवेश- रात्रि 08:56 से

ग्रहण प्रारम्भ - रात्रि 09:56 से

पूर्णता प्रारम्भ- मध्यरात्रि 11:00 से

ग्रहण मध्य- मध्यरात्रि 11:41 से

पूर्णता समाप्त - मध्यरात्रि 12:23 से

ग्रहण समाप्त (मोक्ष) - मध्य रात्रि 01:26 पर

उपच्छाया अन्त - मध्यरात्रि 02.26 पर

ग्रहण (परिमाण) - 1:368

ग्रहण की अवधि - 3 घण्टे 30 मिनट

पूर्णता की अवधि - 01 घंटा 23 मिनट

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव-

मेष-धनलाभ-उन्नति, वृष- रोग, पीड़ा, मिथुन- संतान व गुप्त चिंता, कर्क- शत्रु भय, साधारण लाभ व व्यय, सिंह-जीवन साथी चिंता, कन्या-रोग, गुप्त-चिंता, संघर्ष, तुला-व्यय अधिक, कार्य विलम्ब, वृश्चिक-कार्यसिद्धि-लाभ, धनु-धनलाभ, उन्नति, मकर-धनहानि, व्यर्थ यात्रा, कुम्भ-दुर्घटना, शत्रुता, मीन, धनहानि-चिंता।

आंशिक सूर्य ग्रहण (भारत में अदृश्य) रविवार 21 सितम्बर 2025 ई0-यह ग्रहण न्यूजीलैण्ड,पूर्वी मेनालेशिया, दक्षिणी पोलिनेशिया, पश्चिमी अंटार्कटिका आदि क्षेत्रों में दिखाई देगा, यह ग्रहण भारत में कही भी दिखाई नही देगा, अत: ग्रहण के सूतक सम्बन्धित यम-नियम मान्य

नही होगें।

वलयाकार सूर्य ग्रहण मंगलवार 17 फरवरी 2026 (भारत में अदृश्य)- यह ग्रहण दक्षिणी अर्जेंटिना, चिली, दक्षिणी अफ्रीका और अंटार्कटिका के क्षेत्रों में दिखाई देगा, यह ग्रहण भारत के किसी भी प्रदेश में दिखाई नहीं देगा, अत: ग्रहण के सूतक नियम भी मान्य नहीं होंगे।

पूर्ण चन्द्रग्रहण मंगलवार 03 मार्च 2026 (भारत में दृश्य)–यह ग्रहण पूर्वी एशिया, आस्ट्रेलिया, प्रशान्त महासागर और अमेरिका के क्षेत्रों में पूर्ण रूप से तथा अर्जेंटिना–पेराग्वे के कुछ भाग, बोलिविया, ग्रीनलैण्ड, ब्राजील और उत्तरी अटलांटिका महासागर में उपच्छाया प्रवेश का प्रारम्भिक चरण चन्द्रास्त के समय दिखाई देगा। रूस, कजाकिस्तान, अफगानिस्तान, भारत, श्रीलंका, मालदीव और हिन्द महासागर में ग्रहण की उपच्छाया का अन्त चन्द्रोदय के समय दिखाई देगा। भारत में ग्रहण का सूतक प्रात: 06:20 से आरम्भ हो जायेगा।

ग्रहण की परिस्थितियां :-

उपच्छाया प्रवेश–दोपहर 02:12 से। **ग्रहण (स्पर्श)**–दोपहर 03:20 से, **पूर्णता प्रारम्भ**–सायं 04:34 से। **ग्रहण मध्य**–सांय 05:05 से, **पूर्णता समाप्त**–सायं 05:33, ग्रहण **समाप्त (मोक्ष)**–सायं 06:47 पर, **उपच्छाया अन्त**- सायं 07:55 पर, **ग्रहण परिमाण**–1:55, **ग्रहण की अवधि**- 03 घण्टे 28 मिनट, **पूर्णता की अवधि**–59 मिनट।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव- मेष–व्यय अधिक, व्यर्थ परिश्रम, वृष- कार्यसिद्धि धन–लाभ, मिथुन–प्रगति, पुरूषार्थ वृद्धि, कर्क–धनहानि–कष्ट, सिंह–चोट–भय, धनहानि, कन्या–धनहानि–कष्ट, तुला–धन व सुख लाभ, 08 वृश्चिक–रोग–कष्ट–चिंताभय, धनु–संतान्त कष्ट, मकर–शत्रु, दुर्घटना भय, अपव्यय, कुम्भ–जीवन साथी कष्ट, 12 मीन–रोग चिंता, कार्य विलम्ब।

नोट–यह ग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र तथा सिंह राशि में होने से इस नक्षत्र के जातकों को ग्रस्तोदय ग्रहण विशेष रूप से कष्टकारी रहेगा। जिन राशियों के लिए ग्रहण अशुभ है उन्हें यथाशक्ति जप–पाठ एंव दानादि द्वारा अशुभ प्रभाव को कम करने के प्रयत्न तथा ग्रहण के उपरान्त भी औषधि स्नान करने से अरिष्ट शान्ति होती है।

मीन राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल विचार
(29 मार्च 2025 ई0 से 19 मार्च 2026 ई0 तक)

दिनांक 29 मार्च 2025 रात्रि 09:40 पर शनि देव मीन राशि में प्रवेश करेंगे। इस अवधि में 28 अप्रैल 2025 को प्रात: 06:16 पर उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। 13 जुलाई 2025 को प्रात: 09:36 पर वक्री होंगे। 03 अक्टूबर 2025 को मध्यरात्रि 11:45 पर पूर्वाभाद्रपद में प्रवेश तथा 28 नवम्बर 2025 को प्रात: 09:21 पर मार्गी होगें तथा 20 जनवरी 2026 को प्रात: 10:46 पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश केरेंगे। इस वर्ष मेष, कुम्भ व मीन राशि साढेसाती तथा सिंह व धनु राशि के जातक ढैय्या के प्रभाव में रहेंगे।

राशि	ढैय्या या साढ़ेसाती,	पाद	साढ़ेसाती		शुभाशुभ प्रभाव
			किस अंग पर	चढती/उतरती	
सिंह	ढैय्या	लौह	-	-	शारीरिक कष्ट, रक्त विकार,स्त्री संतान-पशु पीड़ा, राजपक्ष से कष्ट, व्यवसाय में हानि, अधिक संकट रहे।
धनु	ढैय्या	लौह	-	-	शरीर-रक्त विकार स्त्री-पुत्र-पशु कष्ट व्यापार में हानि, अर्थिक संकट भी रहे।
कुम्भ	साढ़ेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धन-धान्य व अनेक सम्पदा लाभ, घर में मंगल कार्य हो, राजपक्ष में सम्मान व प्रभाव क्षेत्र बढे।
मीन	साढ़ेसाती	सुर्वण	हृदय	मध्य	निजजन विरोध, शत्रु बढे, गृह क्लेश, अनेक विविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।
मेष	साढ़ेसाती	लौह	मस्तक	चढती	शरीर कष्ट हो, स्त्री-पुत्र-पशु हानि, व्यापार में हानि, रक्त विकार, राजपक्ष से भय व आर्थिक संकट रहे।

2739 दिनों की शनि साढेसाती का प्रभाव		
कालावधि दिनों में	प्रभावित अंग	फल विचार
1 से 100	मुख	धनहानि हो, मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो
101 से 500	दायी भुजा	व्यवसाय में परिर्वतन, विजय मिले, बीमारी, धनहानि व सफलता मिले।
501 से 912	चरण	यात्राऐं, गृह क्लेश, शत्रुभय, धनहानि अथवा लाभ, भाग्योदय

913 से 1600	उदर	निवास स्थान में परिर्वतन, अपमान, शत्रुभय, धननाश।
1601 से 1825	बांयी भुजा	भाग्यहानि, अपमान, रोग,धननाश, व्यवसाय में परिवर्तन।
1826 से 2300	मस्तिष्क	दाम्पत्य व गृह क्लेश, पितृ-सन्तान-कष्ट, सफलता-लाभ।
2301 से 2500	दोनों नेत्र	उन्नति व सौभाग्य, दूरदृष्टि, विवेक वृद्धि, स्थिरता, सही निर्णय।
2501 से 2739	गुदा	शारीरिक व मानसिक कष्ट, अकेलापन, धनहानि, विविध क्लेश।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतः अशुभ फल कब होगा –

मेष राशि वालों के बीच के अढ़ाई वर्ष खराब है। वृष को पहले अढ़ाई वर्ष, मिथुन को अन्त में अढ़ाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब है। कन्या को पहले 5 वर्ष उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ है। तुला को आखिर अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट है उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ है। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहले अढाई वर्ष विशेष खराब है। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ है। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट है। उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते है।

शनिजन्य नेष्टफल – शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीच मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवानादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा–दान, लौहपात्र में छायादान,शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ बेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्न धारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीच मंत्र :– ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।''

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले''अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करिष्ये'' इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्त के समय (गोधुलि वेला में) शनि–मन्त्रजाप स्त्रोत्र पाठ करें एवं लौहे के पात्र में तेल भरकर उस तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधिः– अनुष्ठान शनिवार को शुरू करें। सूर्यास्त के समय स्नान करके कम्बल के आसन पर बैठकर, (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लौह के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली,धूप,लाल चन्दन,, दो अपूप (पूडे) भी साथ लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्जवलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर ''ऊ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'' इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें –

'' ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नमः ।।''

इस मन्त्रोच्चारण के बाद ''दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग'' से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' या 'नीलम' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष निवारण के लिए अनेक व्यक्ति 'नीलम' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध 'नीलम' रत्न कम मिलता है। उसकी भले–बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अतः सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते । ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में 'बिच्छू बूटी' की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अतः इसका नाम बिच्छू बूटी है। शुक्ल पक्ष शनिवार को प्रातः (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू बूटी को जड़ से उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की संध्या को निमन्त्रण दे आये।

इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्थे वैदिक मन्त्र :-

"ऊँ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नंः। शं शनये नमः।।"

शनिजन्य नेष्टफल -शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र पिप्पलाद उवाच-

"ऊँ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसायं शनैश्चर नमोऽस्तु ते ।।
प्रसादं कुरू देवे देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।"

इस स्तोत्र का पाठः शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिव मन्दिर या घर में भी बैठकर प्रातः करने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल परिहार्थ तुलादान करायेः-

विधिः- शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या शनैश्चरी अमावस के दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह) जौ, मूंग, आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें।

नोट :– तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

(1) भगवान् परशुराम जन्मोत्सव (29 अप्रैल, मंगलवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया को भगवान् परशुराम जयन्ती मनाई जाती है । भविष्यपुराण अनुसार वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में भगवान् परशुराम का अंशावतार हुआ था।

इस वर्ष 29 अप्रैल मंगलवार को तृतीया तिथि सायं 5 बजकर 32 मिनट (17:32) बाद रात्रि प्रथम प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है। अतएव भगवान् परशुराम जयन्ती 29 अप्रैल, मंगलवार, 2025 ई. को ही शास्त्रसम्मत होगी । अगले दिन 30 अप्रैल को तृतीया तिथि प्रदोष व्यापिनी नहीं है ।

(2) श्रीगंगा - जन्मोत्सव (3 मई , शनिवार)

बैशाख शुक्ल सप्तमी को श्रीगंगा जी की उत्पत्ति हुई थी। श्रीगंगा-पूजन, भागीरथ आदि देव ऋषि पूजन मध्याह्न-व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि में करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य है,

इस वर्ष वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि केवल 3 मई, 2025 ई. को ही मध्याह्न- व्यापिनी है । तद्नुसार उपरोक्त शास्त्र वाक्यानुसार 'श्रीगंगा - जन्मोत्सव' 3 मई, 2025 ई. को मनाया जाएगा। (3 मई , 2025 ई.) को हरिद्वार में मध्याह्न -काल लगभग प्रात: 10 बजकर 55 मिं. से दोपहर 01 बजकर 34 मि. तक रहेगा ।

(3) श्रीजानकी (सीता) जन्मोत्सव (5 मई , सोमवार)

श्री सीता (जानकी) जी का आविर्भाव बैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार, पुष्य-नक्षत्र कालीन तथा मध्याह्न के समय हुआ था।

इस वर्ष यह नवमी अष्टमीयुता वाले दिन (5 मई 2025 ई0) मध्याह्न-काल को व्याप्त है। 6 मई मंगलवार को यह मध्याह्न व्यापिनी नहीं है। अत: शास्त्र-नियमानुसार यह पर्व अष्टमीयुता तथा मध्याह्न-व्यापिनी नवमी वाले दिन 5 मई सोमवार को ही मनाया जाएगा।

(4) श्रीनृसिंह जन्मोत्सव (11 मई , रविवार)

'धर्मसिन्धु' अनुसार सूर्यास्तकाल-व्यापिनी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन 'नृसिंह जन्मोत्सव' मनायी जाती है। (दोनों दिन सूर्यास्त काल में चतुर्दशी की व्याप्ति या अव्याप्ति की स्थिति में यह जन्मोत्सव दूसरे दिन होगा।)

इस वर्ष वैशाख शुक्ल चतुर्दशी दो दिन 10 एवं 11 मई को सूर्यास्त व्यापिनी है। परन्तु उपरोक्त

शास्त्र नियमानुसार 'नृसिंह जन्मोत्सव' दूसरे दिन 11 मई , रविवार को ही मनाया जाएगा। स्वाति नक्षत्र होने से यह पर्व विशेषतया प्रशस्त होगा ।

(5) निर्जला एकादशी व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल) (6-7 जून)

द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने पर स्मार्त्त गृहस्थी द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णव सम्प्रदाय वाले षष्टिघटयात्मक (60 घड़ी) द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। दशमी तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध दोनों स्थितियों में यह नियम समान रूप से चरितार्थ होगा ।

इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी की वृद्धि हुई है। यह 7 जून 2025 ई. को अहोरात्रव्यापिनी है। अतः उपरोक्त बहुसम्मत माधवमतानुसार इस वर्ष निर्जला एकादशी स्मार्तो (गृहस्थियों) हेतु 6 जून, शुक्रवार को तथा वैष्णव सम्प्रदाय हेतु 7 जून, शनिवार 2025 ई0 को मनाई जाएगी।

(6) योगिनी एकादशी व्रत (आषाढ़ कृष्ण) (21-22 जून)

इस वर्ष आषाढ़ कृष्ण एकादशी का क्षय है। अतः स्मार्त्तो (गृहस्थियों)को (योगिनी एकादशी व्रत) दशमी विद्धा एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर द्वादशी के दिन वैष्णवों के व्रत के साथ ही व्रत करने पर उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा वर्जित मानी गई है। इसलिए इस वर्ष यह योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त्तो (गृहस्थियों) के लिए 21 जून, 2025 ई . के दिन तथा वैष्णवों (संन्यासियों, किसी सम्प्रदाय से दीक्षित, विधवाओं द्वारा 22 जून , 2025 ई . के दिन मनाई जायेगी ।

(7) विवस्वत सप्तमी (1 जुलाई , मंगलवार)

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को भगवान् सूर्य 'विवस्वान्' नाम से विख्यात हुए थे । इसदिन रथचक्र के समान गोल मण्डल बनाकर उसमें विवस्वान् का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे और अनेक प्रकार के भक्ष्य, भोज्य और पेय पदार्थ अर्पण करके व्रत करें। यह पर्व पूर्वविद्धा आषाढ शुक्ल सप्तमी में मनाया जाता है। इस वर्ष यह सप्तमी 1 जुलाई , 2025 ई . को पूर्व (षष्ठी) विद्धा है , अतः इस वर्ष यह पर्व 1 जुलाई , मंगलवार को ही मनाया जाएगा ।

(8) कज्जली तृतीया (12 अगस्त, मंगलवार)

यह पर्व परा (चतुर्थी) विद्धा तृतीया में मनाने की शास्त्राज्ञा है । 'निर्णयसिन्धु' कार का वचन है- "भाद्र कृष्ण तृतीया 'कज्जली' संज्ञा" सा परा ग्राह्या । इस वर्ष भाद्र कृष्ण तृतीया 12 अगस्त , मंगलवार को चतुर्थी विद्धा है। अतः उपरोक्त नियमानुसार इसे 12 अगस्त, 2025 ई . को ही मनाया जाएगा ।

(9) श्रीकृष्ण - जन्माष्टमी व्रत

(1) **15 अगस्त, शुक्रवार**–अर्धरात्रि–व्यापिनी अष्टमी (स्मार्त्त)–गृहस्थियों के लिए

(2) **16 अगस्त, शनिवार**, उदयकालिक अष्टमी (वैष्णवों के लिए)

श्रीमद्‌भागवत्, श्रीभविष्य, अग्नि, विष्णु आदि पुराणों संहिताओं एवं व्रतोत्सव–निर्णायक सभी धर्मग्रन्थों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन अर्धरात्रि के समय हुआ था–

''सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले।
मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्धरात्रिके ।
वृषराशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणीयुते॥''

(भविष्यपुराणद्ध उत्तरपर्व ५५/१४)

सिद्धान्तग्रन्थ धर्मसिन्धु में भी पूर्वविद्धा (सप्तमीयुता) अर्धरात्रि–कालीन भाद्र–अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है–

कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथव्यापिनी ग्राह्या । पूर्वदिन एव निशीथयोगे पूर्वा ।।

पंजाब, हिमाचल, जम्मू - कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान आदि उत्तर–पश्चिमी राज्यों के करोड़ों स्मार्त्त धर्मावलम्बी गृहस्थी लोग गत सहस्र वर्षों से इसी परम्परा का–अनुसरण करते हुए सप्तमीयुता अर्धरात्रिकालीन वाली अष्टमी को व्रत, जपोपासना आदि कृत्य करते आ रहे हैं । यथा–

'स्मार्त्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, यर्तिर्भिः निष्कामि, गृहिभिः वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च परै वो पोष्याः ॥

ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार भी सप्तमीयुता अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

इस प्रकार 15 अगस्त शुक्रवार को ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कर्मकाल (अर्धरात्रि अष्टमी) है। अतः इसी समय से पूर्व श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरूप पूजा अर्ध्य–दान व जागरण कीर्तन करना श्रेष्ठ रहेगा।

(10) कुशोत्पाटिनी अमावस्या (23 अगस्त, शनिवार)

भाद्रपद मास की अमावस्या तिथि कुशाग्रहणी के नाम से जानी जाती है। इस दिन कुशा संचय

करने से वर्षभर उसकी शुद्धी रहती है। स्कन्द पुराण के अनुसार कुशों के संचय में संगव काल (दिन के पांच भागों में से दूसरा भाग) व्यापिनी अमावस्या शुभ कही गयी है। इस वर्ष भाद्रपद अमावस्या 22 व 23 अगस्त दोनो ही दिन मध्याह्न व्यापिनी है ता. 23 अगस्त को द्वितीय प्रहर लगभग 10:37 से दोपहर 11:11 तक रहेगा अत: 23 अगस्त को ही कुशोत्पाटन का कार्य प्रशस्त रहेगा।)

(11) श्रीवराह अवतार जन्मोत्सव (23 अगस्त, सोमवार)

भाद्रपद शुक्ल तृतीया तिथि जिस दिन अपरान्ह व्यापिनी हो उसी दिन श्री वराह अवतार जन्मोत्सव मनाया जाता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार तृतीया तिथि यदि दोनो दिन अपरान्ह व्यापिनी हो या ना हो यह पर्व दूसरे दिन ही मनाया जायेगा। इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल तृतीया 25 व 26 अगस्त के दिन अपराह्न व्यापिनी है परन्तु 26 अगस्त के दिन अपराह्न काल को केवल स्पर्श की रही है। अत: यह पर्व 25 अगस्त सोमवार के दिन ही मनाया जायेगा।

(12) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (26-27 अगस्त)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन चन्द्रदर्शन होने पर मिथ्या कलंक लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि चतुर्थी तिथि में चन्द्र-उदय होकर पंचमी-तिथि तक वर्तमान हो (अर्थात् चन्द्र-अस्त पंचमी तिथि में हो), तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन करना या होना दोषकारक नहीं होता तथा यदि पहले दिन सायंकाल से चतुर्थी तिथि की व्याप्ति हो जाए अर्थात् तृतीया में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी तिथि व्याप्ति तक चन्द्रदर्शन हो (चन्द्र अस्त चतुर्थी तिथि में हो), तो चन्द्रदर्शन का दोष पहले दिन होगा, चाहे उस दिन सिद्धि विनायक व्रत न भी हो। निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी में ही चन्द्रदर्शन का दोष है। सिद्धि विनायक व्रत का इससे सम्बन्ध नहीं है। जोकि मध्यान्ह-व्यापिनी ग्राह्य होता है।

इस वर्ष (वि. संवत् 2082) में 'सिद्धि विनायक व्रत' मध्यान्ह-व्यापिनी 27 अगस्त, बुधवार को है। परन्तु चतुर्थी तिथि 26 अगस्त, मंगलवार की दोपहर 01 बजकर 55 मि. से प्रारम्भ हो रही है। तथा इस दिन चतुर्थी के समय ही रात्रि 08 बजकर 45 मि. पर चन्द्रोदय होगा । जबकि 27 अगस्त को चतुर्थी तिथि दोपहर बाद 03 बजकर 45 तक है। तथा इस दिन चन्द्रास्त रात्रि 09 बजे होगा। जबकि उस समय पंचमी तिथि व्याप्त होगी। इस प्रकार उत्तरी भारत में तो लोग शास्त्रनिर्देशानुसार 26 अगस्त, मंगलवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे। परन्तु महाराष्ट्र आदि कुछ राज्यों में 27 अगस्त, बुधवार को चन्द्रदर्शन निषेध का विचार करेंगे तथा कलंक चतुर्थी, पत्थर-चौथ आदि इसी दिन मनाई जाएगी।

(13) श्रीसत्यनारायण व्रत (भाद्रपद पूर्णिमा, 7 सितम्बर)

7-8 सितम्बर, 2025 ई. की मध्यरात्रि में घटित होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दृश्यमान होगा। इस ग्रहण का सूतक 7 सितम्बर, 2025 को दोपहर 12 बजकर 57मि. पर प्रारम्भ होगा, यह सूतक इसी दिन प्रदोष काल में जिस समय श्री सत्यनारायण कथा आदि होती है, विद्यमान होगा। अतएव इस व्रत का आचरण करने वालों को चन्द्रोदय के समय स्नान (गंगाजल मिश्रित) करके भगवान् सत्यनारायण की पूजादि करनी चाहिए। ऐसा करने से ग्रहणदोष सम्मार्जित हो जाता है। यहाँ श्रीसत्यनारायण को पक्व अन्न (पंजीरी आदि) का भोग नहीं लगाना चाहिए। इस बारे शास्त्रवचन है- 'स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत पक्वमन्नं विवर्जयेत्॥ अतः यहाँ फल एवं सूखे मेवे आदि का ही भोग लगाना चाहिए और चरणामृत हेतु कुशायुक्त दूध का प्रयोग करना चाहिए।

(14) आश्विन कृष्ण चतुर्थी का महालय श्राद्ध (10 सितम्बर)

आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) के किए जाने वाले सभी श्राद्ध 'पार्वण-श्राद्ध' कहलाते हैं। पित्तरों के निमित्त किए जाने वाले मृत्यु-तिथ्यनुसार सभी श्राद्ध अपराहण-व्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है।

इसवर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्थी तिथि 10 सितम्बर, 2025 ई. को दोपहर 01 बजकर 39मि. से सायं 04 बजकर 07 मि. तक अपराहण-काल को स्पर्श कर रही है। अतएव 'चतुर्थी तिथि' का पार्वण श्राद्ध तो 10 सितम्बर, बुधवार को होगा। क्योंकि 11 सितम्बर को चतुर्थी अपराहण-काल से पहिले ही समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार तृतीया तिथि का श्राद्ध भी 10 सितम्बर, बुधवार को ही होगा। क्योंकि तृतीया तिथि दोपहर 01बजकर 39 मिं. से 03 बजकर 39 मि. तक अपरान्ह-काल को व्याप्त कर रही है।

(15) उपाङ्ग ललिता व्रत (26 सितम्बर, शुक्रवार)

यह व्रत अपराहणव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है-

'अत्र पंचमी अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्नस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः'

(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष आश्विन शुक्ल पंचमी 26 सितम्बर, शुक्रवार को ही अपराहण-व्यापिनी है। अतः यह पर्व इस वर्ष पहिले दिन (26 सितम्बर, 2025 ई.) को ही होगा।

(16) शरद् पूर्णिमा व्रत (6 अक्तूबर, सोमवार)

प्रदोष एवं निशीथव्यापिनी आश्विन पूर्णिमा में शरद् पूर्णिमा व कोजागर व्रत होता है। यदि पहले

दिन पूर्णिमा निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो यह व्रत पहले दिन ही करना चाहिए। यथा–इस वर्ष पूर्णिमा तिथि 6 अक्तूबर, 2025 ई. को पूर्णतया निशीथ (अर्धरात्रि) एवं प्रदोष को व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन 7 अक्तूबर को तो यह प्रदोष को स्पर्श भी नहीं कर रही। अत: 6 अक्तूबर, 2025 ई. को ही ये दोनों पर्व होंगे।

(17) करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत (10 अक्तूबर, शुक्रवार)

शास्त्रानुसार यदि किसी वर्ष तृतीयायुक्त चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो और दूसरे दिन भी चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो, तो परयुक्ता अर्थात् उदय–व्यापिनी चतुर्थी ग्रहण करें। यदि दोनों दिन चतुर्थी व्यापिनी में चन्द्रोदय हो, तो पहली तृतीयायुक्त लें। परन्तु यदि दोनों दिन चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो तो परयुता चतुर्थी ही ग्रहण करें अर्थात् दूसरे दिन ही व्रत करने की शास्त्राज्ञा है–

प्रस्तुत वर्ष 9 अक्तूबर, गुरुवार को तृतीया तिथि रात्रि 10 बजकर 55 मिं. तक व्याप्त रहेगी। परन्तु 10 अक्तूबर, शुक्रवार को चतुर्थी तिथि रात्रि 07 बजकर 39 मिं. तक ही व्याप्त रहेगी। सम्पूर्ण भारत में इसदिन चन्द्रोदय (सुदूर पूर्वी भारत को छोड़कर) चतुर्थी तिथि की समाप्ति रात्रि 07 बजकर 39 मिं. के बाद ही होगा। दोनों दिन चतुर्थी तिथि चन्द्रोदय का स्पर्श नहीं कर रही है। (अर्थात् चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि नहीं होगी।)

अत: शास्त्रीय–निर्णयानुसार करक–चतुर्थी व्रत (करवा चौथ) दूसरे दिन ही अर्थात् (10 अक्तूबर, शुक्रवार) को ही किया जाएगा।

(18) गोवत्स द्वादशी (17 अक्तूबर, शुक्रवार)

प्रदोष व्यापिनी कार्तिक कृष्ण द्वादशी में 'गोवत्स द्वादशी' मनाई जाती है। इस वर्ष कार्तिक कृष्ण द्वादशी 17 अक्तूबर, 2025 ई. को ही 'प्रदोषव्यापिनी' है। अत: यह व्रत/पूजन इसीदिन होगा।

(19) हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत (1–2 नवम्बर, शनि–रवि)

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण एकादशी द्वादशी व त्रयोदशी तिथि का एक ही वार में संगम होने के कारण निर्णय सिन्धु के मतानुसार स्मार्त (सन्यासि व ग्रहस्थ) शनिवार 01 नवम्बर व वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा रविवार 2 नवम्बर के दिन देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत किया जायेगा।

(20) दीपावली (लक्ष्मी पूजन) (21 अक्तूबर, मंगलवार)

धर्म सिन्धु के अनुसार ''परादिन एवं दिनद्वये वा प्रदोषव्याप्तौ पर पूर्वत्रैव प्रदोष व्याप्तौ लक्ष्मी पूजादौ पूर्वा, अभ्यङ्गस्नानादौ परा, एवमुभयत्र प्रदोष व्याप्तभावपि ।।

अत: धर्मसिन्धु में दिए गए उपरोक्त श्लोक के अनुसार तथा सभी शास्त्र-वचनों के अनुशीलन के पश्चात् हमारे मतानुसार 21 अक्तूबर, 2025 ई., मंगलवार को ही दीपावली पर्व तथा श्रीलक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व इसीदिन होगा। यही निर्णय भारत के अधिकतर पंचांगकारों को मान्य है।

ध्यान दें, कुछ पंचांगकारों के मतानुसार पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरला आदि राज्यों में जहाँ अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से पूर्व ही समाप्त अर्थात् जहाँ सूर्यास्त सायं 05 बजकर 55 मि. के बाद होगा, हो जाएगा, वहाँ दीपावली पर्व 20 अक्तूबर, सोमवार को करना चाहिए, तर्कसंगत नहीं है,

अत: अन्तिम निर्णय यही है कि 21 अक्तूबर, मंगलवार को ही धर्मनिष्ठ लोग सूर्यास्त के पश्चात् अल्पकालिक प्रदोषकाल-व्याप्त अमावस्या के बावजूद सायं काल से प्रदोषकाल समाप्ति तक अर्थात् सूर्यास्त से आधा घण्टा पहिले से सूर्यास्त के बाद लगभग 2 घं.-24मिं. तक की कालावधि में नि:सन्देह होकर लक्ष्मीपूजन कर सकते हैं।

(21) तुलसी विवाह(2 नवम्बर, रविवार)

कार्तिक शुक्ल (देव प्रबोधिनी) एकादशी की पारणा वाले दिन अथवा इससे अगले चार दिन (द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी व पूर्णिमा वाले) किसी भी दिन विवाह नक्षत्र में तुलसी विवाह किया जाता है। ऐसा शास्त्र विधान है। - इस वर्ष 02 नवम्बर 2025 ई0 को देवप्रबोधोत्सव है। इसदिन पूर्वरात्री में विवाह नक्षत्र उ. भा.ही है। अत: इसे इसी दिन तुलसी विवाह शास्त्र सम्मत है।

नोट कुछ शास्त्रकार व्यतीपात/वैद्युति योग, द्वादशी तिथी एवं रविवार को तुलसी दल का स्पर्श एवं तोड़ने का निषेध मानते है। अत: तुलसी विवाह 3 नवम्बर सोमवार विवाह नक्षत्र रेवती में मनाना भी शास्त्र सम्मत ही रहेगा।

(22) वैकुण्ठ-चतुर्दशी (3 नवम्बर, सोमवार)

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्परायें प्रचलन में है (1) कुछ श्रद्धालु निशीथव्यापिनी चतुर्दशी को यह पर्व मनाते ही (2) दूसरी परम्परा के अनुसार पहले दिन उपवास करके अरुणोदय व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा के बाद अरुणोदय के समय पारणा करने का विधान है। इस वर्ष चतुर्दशी 3 नवम्बर सोमवार को अरुणोदय व्यापिनी होने से यह पर्व इसी दिन मनाया जायेगा। 4 नवम्बर को सूर्योदय से पहले भगवान शिव व विष्णु

की पूजा करनी चाहिये।

(23) पद्मक योग (6 नवम्बर, 2025 ई.)

विशाखा नक्षत्र में सूर्य के संचारकालीन जब चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में हो तब– '**पद्मक योग**' होता है। किसी भी तीर्थस्थल, परन्तु विशेष रुप से तीर्थराज पुष्कर (राजस्थान) में इस योग में स्नान–दान–स्तोत्र के पाठ का विशेष म्हातम्य माना जाता है।

इस योग में सूर्य–स्तोत्र, गुरु–स्तोत्र, सूर्य गायत्री, गुरु गायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों सम्बन्धी यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएँ तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद–परायण और धनाढ्य होता है।

वि. संवत् 2082 में कार्तिक पूर्णिमा के आगामी दिवस 6 नवम्बर, 2025 ई. को सूर्य के विशाखा नक्षत्र में दोपहर 02 बजकर 51 मि. से प्रवेश करते ही यह (पद्मक) योग प्रारम्भ हो जाएगा। सायं प्रदोषकाल तक इसका विशेष माहात्म्य रहेगा।

(24) पुत्रदा एकादशी व्रत (पौष शुक्ल 30–31 दिसम्बर)

इस वर्ष पौष शुक्ल एकादशी का क्षय है अतः स्मार्तो को एकादशी व्रत दशमीविद्धा एकादशी में ही करना होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर (द्वादशी के दिन वैष्णवों के व्रत के साथ ही व्रत करने पर) उनको पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी, जोकि उनके लिए सर्वथा निषिद्ध है, इसीलिए इस वर्ष यह पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्तो के लिए 30 दिसम्बर, 2025 ई. को तथा वैष्णवों के लिए 31 दिसम्बर, 2025 ई. के दिन लिखा गया है।

(25) श्रीसत्यनारायण व्रत (पौष पूर्णिमा) (2 जनवरी, 2026 ई.)

शास्त्रानुसार श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष पौष पूर्णिमा 3 जनवरी, 2026 ई. को दोपहर बाद 03 बजकर 33मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इसदिन (सूर्यास्त से पहिले) प्रदोष व्यापिनी नहीं होगी।

ता. 2 जनवरी, 2026 ई. को पूर्णिमा सायं 06 बजकर 54 मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसीदिन प्रदोष एवं रात्रि–व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। अतएवं इस मास का श्रीसत्यनारायण व्रत 2 जनवरी, 2026 ई., शुक्रवार को ही रखना शास्त्रसम्मत होगा।

(26) भीष्म–द्वादशी (29 जनवरी, 2026 ई.)

माघ शुक्ल द्वादशी को '**भीष्म–द्वादशी**' मनाई जाती है। इसमें व्रत को ब्रह्मार्पण करके ब्राह्मणों

को भोजन कराकर पारणा करें। युग्मवाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी-विद्धा ही ली जाती है। '**द्वादशी तु एकादशीविद्धा ग्राह्या ॥**' इसीलिए '**भीष्म-द्वादशी**' 29 जनवरी, 2026 ई. को लिखी गई है।

(27) होलिका-दहन (2 मार्च, सोमवार, 2026 ई.)

प्रदोषकाल-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका दहन किया जाता है। यथा-**सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहित ग्राह्या ॥** (धर्मसिन्धु:)

यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष से पूर्व (सूर्यास्त से पहिले) ही समाप्त हो जाए, तब पहिले ही दिन भद्रामुख को छोड़कर अथवा भद्रापुच्छ में, निशीथकाल से पहिले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो भद्रा की समाप्ति पर '**होलिका दहन**' करना चाहिए। ऐसी शास्त्राज्ञा है।

इस वर्ष (वि. संवत् 2082 में) फाल्गुन पूर्णिमा केवल 2 मार्च, 2026 ई. को ही-प्रदोषव्यापिनी है। ता. 3 मार्च को तो वह प्रदोष को बिल्कुल स्पर्श नहीं कर रही। ता.2 मार्च, 2026 ई. को प्रदोषकाल जो कि लगभग सायं 06 बजकर 22 मिं. से रात्रि 08 बजकर 53 मिं. तक रहेगा, भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) से कहीं आगे जाकर अगले दिन-प्रात: 5:32 तक जाकर समाप्त हो रही है। अत: उपरोक्त शास्त्र निर्देशानुसार इस वर्ष होलिकादहन 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रा के मुख को त्यागकर भद्रा में ही करना होगा। इसदिन भद्रा का मुख रात्रि 02 बजकर 38 मिं. से अतंरात्रि 04 बजकर 34 मिं. तक है। इस प्रकार स्पष्ट है, इसदिन भद्रामुख प्रदोष से बहुत दूर अर्धरात्रि के भी बाद विद्यमान् है। **अत: 2 मार्च, 2026 ई. को भद्रामुख/पुच्छ का विचार न करके भद्रा में ही प्रदोषकाल में 'होलिका-दहन' करना शास्त्रसम्मत ही होगा।**

(28) श्रीसत्यनारायण व्रत (फाल्गुन पूर्णिमा, 2 मार्च 2026 ई0)

इस वर्ष 2 मार्च, 2026 ई. को पूर्णिमा सूर्यास्त के बाद प्रदोषकाल को व्याप्त है, जबकि 3 मार्च को वह सूर्यास्त (प्रदोषारम्भ काल) से काफी पहिले ही समाप्त हो जाएगी अत: यह व्रत, जो नक्तव्रत माना गया है, 2 मार्च, 2026 ई. को ही माना जाएगा।

मेष राशि ARIES (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

मेष राशि के लिए वर्ष 2025 की शुरुआत उत्तम रहेंगी वर्ष के आरम्भ से 14 मई 2025 तक देव गुरु बृहस्पति वृष राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, 15 मई 2025 से मेष राशि में गुरु का तीसरे भाव से गोचर आपके जीवन में बहुत ही शुभ फल लेकर आएगा, आपके भाग्य में वृद्धि होगी। इस वर्ष आपको मनपसन्द नौकरी मिल सकती है। देव गुरु बृहस्पति की शुभ दृष्टि आपकी धन धान्य की वृद्धि करेगी छात्रों के लिए यह वर्ष अपने सपनों को पूरा करने के लिए बहुत ही उत्तम रहेगा। अक्टूबर में देव गुरु बृहस्पति के चौथे भाग में गोचर से आपके बिगड़े कार्य बनने लगेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनने लगेगी। यह वर्ष मकान, भूमि, वाहन आदि की कमी को पूरा कर सकता है।

मेष राशि वालों को वर्ष के प्रारम्भ से अंत तक धन धान्य की कोई कमी नहीं होगी वहीं स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष बहुत ही उत्तम रहेगा। आपको पुराने रोगों से छुटकारा मिल सकता है। आपका मन आध्यात्मिक कार्यो में लगेगा आपके विचार पवित्र एवं सकारात्मक रहेंगे। इस वर्ष आपको बड़े भाई का भी सहयोग मिल सकता है। इस साल आपको विदेश यात्राओं को करने के भी अनेक अवसर प्राप्त होंगे, राहु के द्वादश भाव में आने से कई बार अचानक खर्च भी अधिक होगा लेकिन विदेश से जुड़ी यात्राओं का आपको लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर नव वर्ष मेष राशि वाले जातकों के लिए उत्तम एवं लाभकारी रहेगा।

उपायः-नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें, हनुमान जी का विधिवत् पूजन करें, लाल गाय को गुड़ खिलाये, लाल वस्तुओं का दान करें, नागदामीन और अनन्तमूल का पौधा घर या मन्दिर में लगाये।

वृष राशि TARUS (ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

वृष राशि वालों के लिए यह वर्ष मिश्रित फल लेकर आएगा हांलाकि वृष राशि में वर्ष के आरम्भ में देवगुरु बृहस्पति प्रथम भाव से गोचर करेगें तथा 14 मई 2025 से दूसरे भाव से गोचर करेगें दूसरे भाव से बृहस्पति का गोचर उतार, चढ़ाव लेकर आयेगा आपको अपने आर्थिक फैसले सोच समझकर लेने होंगे आपको बड़े निवेश के लिए किसी अच्छे अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेनी चाहिए शेयर बाजार से दूरी आपके लिए उत्तम रहेगी, योजनाओं की कमी तथा गलत निर्णय आपके लिए धन हानिकारक हो सकते हैं।

इस वर्ष आपके वैवाहिक जीवन में तनाव रह सकता है, घर के सदस्यों में भी आपस में मन मुटाव बढ़ेगा मार्च 2025 में शनि का त्रयोदश गोचर आपके जीवन में राहत लेकर आएगा आपकी

परिस्थितयाँ धीरे-धीरे बदलेंगी आपको किस्मत का साथ मिलेगा आपकी आमदनी में बदलाव आ सकता है। इस वर्ष आपका अधिकांश समय अपने जीवन की सुरक्षा और चिंता को लेकर परेशानी में रह सकता हैं। आर्थिक दृष्टि से वर्ष आरम्भ में धीमी गति रहने वाली है। तथा आपको अपने प्रयासों के परिणाम देरी से मिल सकते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहने वाला है। 2025 के प्रारम्भ में आपके जीवन में प्रेम की नई शुरुआत हो सकती है। इस वर्ष आपको सच्चे प्यार की कमी पूरी होने की सम्भावनाएं है।

उपायः- नित्य तुलसी को जल चढ़ाये। सफेद वस्तुओं का दान करें, मजिष्ठा का पौधा अपने मुख्यद्वार पर लगाएँ, ॐ नमः शिवाय का नित्य जप करे।

मिथुन राशि GEMINI (का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मिथुन राशि वालो का यह नव वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है वर्ष आरम्भ में देव गुरु बृहस्पति 12 वें भाव में गोचर करेंगे और 14 मई 2025 में अपने प्रथम भाव से बृहस्पति गोचर करेंगे जिसके कारण आपका करियर बदलना शुरु हो जायेगा 2025 मई में गुरु प्रथम भाव में गोचर करने से आपके जीवन में सुख समृद्धि और धन वैभव आने की उम्मीद है। वैवाहिक सुख के लिए भी यह उत्तम समय रहेगा आपको शिक्षा के क्षेत्र में भी अपार सफलता मिलेगी आपका धार्मिक कार्यो में मन लगेगा आपके जीवन में आध्यात्मिकता का संचार होगा आप शारीरिक एवं मानसिक रुप से स्वस्थ रहेंगे आर्थिक रुप मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलेगी छात्रों के लिए यह गोचर उत्तम रहेगा आपके जीवन में आय के अनेक नये अवसर आयेंगे समाज में आपको समय बहुत ही उत्तम एवं भाग्यशाली रहेगा विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अपार सफलता के योग बनते दिखाई दे रहे हैं, मार्च 2025 से आपके जीवन में सुख सुविधाओं और वैवाहिक जीवन के लिए उत्तम रहने के प्रबल योग बन रहे हैं। 29 मई को राहू मिथुन राशि के नवम भाव से गोचर करेंगे इस दौरान आप उच्च शिक्षा के लिए विदेश जा सकते हैं। कुल मिलाकर यह वर्ष आपके लिए आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों के लिए उत्तम रहने की उम्मीद है।

उपायः- गाय की सेवा करे, नित्य गरीबों को भोजन कराय, विधारा के पौधे को घर के द्वार पर लगाये भगवान शिव का पूजन करे।

कर्क राशि CANCER (हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

वार्षिक राशिफल के अनुसार यह वर्ष कर्क राशि वालों के लिए मध्यम रहेगा इस साल आपको कड़ी मेहनत के दम पर ही सफलता मिलने की उम्मीद है। वर्ष आरम्भ से लेकर 14 मई 2025 तक देवगुरु बृहस्पति आपके ग्यारवें भाव से गोचर करेंगे जिसके चलते वर्ष का आरम्भ आपके लिए शुभ रहेगा, आपके जीवन में खुशियो का आगमन होगा आपके वैवाहिक जीवन में सुख

समृद्धि आएगी और आपकी आर्थिक स्थिति भी स्थिर रहेगी लेकिन 14 मई 2025 के बाद गुरु आपकी राशि से 12वें भाव से गोचर करेंगे इस दौरान खर्चों पर आपको नियंत्रण करना पड़ सकता है, मार्च 2025 में शनि आपके नवम भाव से गोचर करेंगे जिसके कारण आपका दोस्तों से मेल मिलाप बढ़ेगा आपके वैवाहिक जीवन में आपसी प्रेम और प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष की शुरुआत अच्छी रहेगी लेकिन मध्य समय पर उतार–चढ़ाव भी देखने को मिल सकते है कुल मिलाकर आपको इस वर्ष अलग–2 साधनों से धन कमाने का मौका मिलेगा। देवगुरु बृहस्पति की शुभ दृष्टियाँ आपके कारोबार में निरंतर उन्नति प्रदान करेगी ।इस वर्ष में स्वास्थ्य के आपको मिले जुले परिणाम मिलेंगे इस वर्ष नौकरी पेशा लोगों के लिए थोड़ा दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। वैवाहिक एवं प्रेम सम्बन्धों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा सावधानी से कार्यो में ध्यान दें कुल मिलाकर यह वर्ष आपको आपकी राशि के हिसाब से सभी क्षेत्रों में मिश्रित फल देगा।

उपायः– सफेद वस्तुओं का दान करें, खिरनी का पौधा लगाये, ॐ नमः शिवाय का जप करें, पूर्णिमा का उपवास करें, चाँदी का दान करें।

सिंह राशि LEO (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टू, टे.)

सिंह राशि वालों के लिए यह वर्ष आरम्भ से बहुत उत्तम मध्य भाग में मिश्रित एवं अन्तिम भाग चुनौतियाँ ला सकता है। इस वर्ष के प्रारम्भ में देवगुरु बृहस्पति आपके दशम भाव तथा 4 मई 2025 के बाद एकादश भाव से गोचर करेंगे जिसके कारण आपको जीवन में अनेक प्रकार की सफलताएँ तथा उचित प्रगति की प्राप्ति होने की पूर्ण सम्भावनाएँ है। छात्रों के लिए यह वर्ष बहुत लाभदायक रहने की सम्भावनाएँ है। सितंबर 2025 में गुरु का राशि परिवर्तन थोड़ा समय के लिए आयेगा जो कि आपके लिए सावधानी भरा रहेगा। आर्थिक क्षेत्र के लिए यह वर्ष आपके जीवन में उन्नति लेकर आयेगा आपका व्यापार बहुत ही उत्तम रहेगा भविष्य के लिए नये घर की योजना बन सकती है इस वर्ष आपके हर प्रयास को अच्छी सफलता मिल सकती है। तथा नौकरी पेशा लोगों को तरक्की मिलने की पूर्ण सम्भावनाएँ है, स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिश्रित परिणाम दे सकता है। वर्ष आरम्भ में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा लेकिन मध्य भाग से कुछ मानसिक क्लेश आपको परेशान कर सकती है। करियर के लिए यह वर्ष अनेक शुभ अवसर तथा देव गुरु बृहस्पति का शुभ प्रभाव आपके जीवन में काफी परिवर्तन लेकर आने वाला है। प्रेम सम्बन्धों के हिसाब से यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल देने वाला है।

उपायः– प्रतिदिन सूर्य की उपासना करें, सूर्य को नित्य ताम्रपात्र से अर्ध्य दें, आदित्य हृदय श्लोक का पाठ करे, बेल का वृक्ष किसी शुभ स्थान पर लगाये लाल वस्तुओं का दान करें।

कन्या राशि VIRGO (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

कन्या राशि वालों के लिए यह वर्ष अति उत्तम तथा इच्छाओं की प्रतिपूर्ति करने वाला है। वर्ष के आरम्भ में बृहस्पति नवम भाव तथा मई 2025 के बाद दशम भाव से गोचर करेंगे और अक्टूबर से दिसंबर तक एकादश भाव में गोचर करेंगे देवगुरु बृहस्पति की शुभता पूरे वर्ष आनन्द तथा पूर्ण सुख देने वाली रह सकती है। आपको इस वर्ष अनेक खुशियों का संचार होगा आपके बिगड़े काम बनेंगे इस साल गुरु की कृपा से धन का अभाव नहीं रहेगा। 29 मई 2025 से राहु आपके छठे भाव और केतु 12वें भाव से गोचर करेंगे जिसके चलते आप शत्रु पक्ष पर भारी रहेंगे विरोधियों को परास्त करेंगे।आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए विशेष मंगलकारी रहेगा इस वर्ष अनेक साधनों से आपके पास धन आने की पूर्ण सम्भावनाएँ बनी हुई हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए पिछले वर्ष की तुलना में लाभकारी रहेगा। करियर की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए कल्याणकारी एवं लाभकारी रहने की पूर्ण सम्भावनाएँ है। प्रेम, करियर तथा वैवाहिक जीवन के लिए भी यह वर्ष उन्नति कारक तथा प्रगतिकारक रहेगा कुल मिलाकर यह वर्ष आपके लिए हर क्षेत्र में कल्याणकारी रहने वाला रहेगा।

उपायः– व्यवसाय के लिए गुरु की उपासना करें, केसर का तिलक लगायें, हरी वस्तुओं का दान करें, विधारा और अपामार्ग का पौधा लगाये।

तुला राशि LIBRA (रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते)

तुला राशि वालों को यह वर्ष कुछ बड़े बदलावों वाला रहेगा इस वर्ष आपको अच्छे और बुरे दोनों तरह के अनुभव देखने को मिलेंगे इस साल आपको हर क्षेत्र में काफी मेहनत करने के बाद ही सफलता मिलने के योग बन रहे हैं। वर्ष के आरम्भ में गुरु अष्टम भाव से गोचर करेंगे तथा 14 मई 2025 के बाद नवम भाव से गुरु गोचर करेंगे यह समय आपके लिए अनुकूलता लाएगा आपको प्रयासों में सफलता मिलेगी यदि आप नौकरी पेशा है तो आपका स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। लेकिन वैवाहिक जीवन में तनाव और कलह–क्लेश बना रह सकता है। आर्थिक दृष्टि से आपको इस वर्ष मिले–जुले परिणाम मिल सकते हैं हांलाकि वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, मार्च 2025 में शनि तुला राशि वालों के छठे भाव से गोचर करेगा जो कि कई प्रकार की चुनौतियाँ लेकर आ सकता है। स्वास्थ्य की ओर से यह वर्ष मध्यम एवं मिश्रित फल कारक रहेगा अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी। करियर की ओर से आपको इस वर्ष कड़ी मेहनत – करनी पड़ सकती है। प्रेम सम्बन्धों के लिए यह वर्ष उतार–चढ़ाव भरा रह सकता है।

उपायः– लक्ष्मी साधना करें, श्री सूक्त का पाठ नित्य करें, सफेद वस्तुओं का दान करें, उदयाम्बर

का वृक्ष लगाये, अत्यधिक भावुक होकर कोई निर्णय न लें।

वृश्चिक राशि SCORPIO (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह वर्ष आपके जीवन के हर क्षेत्र के लिए कल्याणकारी रहने वाला हो सकता है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु सप्तम भाव से गोचर करेंगे 14 मई 2025 से गुरु अष्टम भाव से गोचर करेंगे और अक्टूबर से दिसंबर तक नवम भाव में गोचर करेंगे। यह वर्ष आपके लिए सुखद रहने वाला है। वैवाहिक जीवन में खुशियाँ बढ़ेंगी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी अविवाहित लोगों का विवाह होने की सम्भावनाएं है व्यापारियों को उत्तम आर्थिक लाभ हो सकता है। वृश्चिक राशि में गुरु का अष्टम गोचर करने से पारिवारिक जीवन में अशान्ति बढ़ सकती है। आपके व्यक्तिगत रिश्तों में दिक्कतें पैदा हो सकती है। आर्थिक मामलों में भी दिक्कतें आ सकती है। मार्च 2025 में शनि पंचम भाव से गोचर करने से वृश्चिक राशि वालों को आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष धन धान्य देने वाला तथा उन्नति एवं कल्याण करने वाला रह सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा अच्छा रहेगा पुराने रोगों से छुटकारा मिल सकता है, आपका मन शांत रहेगा करियर की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए सर्वोत्तम वर्षों में से एक हो सकता है। अक्टूबर से दिसम्बर तक गुरु आपके नवम भाव से गोचर करेगा जिसके चलते यह वर्ष आपके लिए हर प्रकार से उन्नति और कल्याणकारक रहेगा।

उपायः- मंगलवार का व्रत रखें, बंदरों को गुड व चना खिलायें, हनुमान जी की उपासना करें, लाल वस्तुओं का दान करें, खैर, पीपल, बड़ आदि वृक्षों का रोपण करें।

धनु राशि SAGITTARIUS (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

धनु राशि वालों के लिए वर्ष के आरम्भ के शुरुआती महीनों में कुछ संघर्ष करना पड़ सकता है वार्षिक राशिफल के अनुसार आरम्भ में गुरु धनु राशि के छठे भाव से गोचर करेंगे 14 मई 2025, के बाद गुरु धनु राशि वालों के सप्तम भाव से गोचर करेंगे मई 2025 तक समय कुछ कमजोर रह सकता है। मार्च 2025 से धनु राशि वालों को शनि चतुर्थ भाव से गोचर करेगा इस दौरान आप आपके परिवार से दूर रह सकते है। आपको नई जमीन खरीदने के अवसर प्राप्त हो सकते है नौकरी पेशा लोगों की कार्य क्षमता अच्छी रह सकती है। आपको इस वर्ष विदेश यात्राओं का विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है। अक्टूबर 2025 से दिसम्बर तक गुरु धनु राशि वालों के लिए यह अवधि अत्यन्त शुभ रहेगी यदि आप विदेश जाने के इच्छुक है तो आपको मन से प्रयास करना चाहिए आर्थिक क्षेत्र में यह वर्ष आपके लिए कई परिवर्तन लेकर आ सकता है। वर्ष आर्थिक क्षेत्र में कुछ दिक्कतें कर सकता है। छात्रों के लिए यह समय अच्छा रहेगा आप अपनी कुशलता के बल पर अपना करियर बना सकते हो स्वास्थ्य की ष्टि से यह वर्ष आपके लिए चुनौतियों से

भरा रह सकता है। प्रेम सम्बंध में इस वर्ष आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकते है।

उपायः- आदित्य हृदय स्रोत का पाठ करें, माता-पिता गुरु का अपमान न करें, पीली वस्तुओं का दान करें, भारंगी या केले का वृक्ष किसी शुभ स्थान पर लगायें।

मकर राशि CAPRICORN (भो, जा, जी, खी, खु, खे, खो, गा, गी)

यह वर्ष आपके लिए औसत परिणाम लेकर आ सकता है आपको अपने काम को पूरा करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। वर्ष आरम्भ में गुरु मकर राशि वाले के पंचमभाव से गोचर करेगा 14 मई 2025 के बाद छठे भाव से गोचर करेगा अक्टूबर से दिसम्बर के प्रारम्भ तक गुरु मकर राशि वालों का सप्तम भाव से गोचर करेगा फिर दिसम्बर से छठे भाव से गोचर करेगा वर्ष का प्रारम्भ तो अच्छा रहेगा आपकी आमदनी में वृद्धि का योग है साथ ही विदेश घूमने का भी योग बनता दिखाई दे रहा है। कार्यक्षेत्र में भी परिवर्तन का योग हो सकता है। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी छात्रों के लिए यह समय अत्यन्त उपयोगी है। आपका स्वास्थय भी उत्तम रहेगा। मई 2025 से अक्टूबर 25 तक गुरु गोचर के कारण कुछ परिस्थितियां बदल सकती है। इस अवधी में कार्य में कुछ रुकावटें आ सकती है, तथा आर्थिक क्षेत्र से भी नुकसान होने की सम्भावनाएँ बन सकती है। 2025 के प्रारम्भ में शनि देव आपके द्वितीय भाव से गोचर करेंगे जिससे आर्थिक हालातों में कुछ सुधार देखने को मिल सकता है। स्वास्थ्य पर आपको इस वर्ष विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। तनाव से बचें। योग ध्यान का सहारा आप ले सकते है। करियर को सुन्दर बनाने के लिए आपको अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है, जिससे आप अपने जीवन को प्रभावशाली बना सकते है। प्रेम व वैवाहिक स्थिति के लिए यह वर्ष आपके लिए अति उत्तम रहेगा जो लोग विवाहित नहीं है उनकी शादी का योग इस वर्ष बन सकता है।

उपायः- हर शनिवार को सरसों का तेल का दीपक जलाये, पीपल के वृक्ष में कच्चा दूध पानी मिलाकर चढ़ाये, शमी वृक्ष को किसी भी शुभ स्थान पर लगाये, तेल का दान करें, काली वस्तुओं का भी दान करें।

कुम्भ राशि AQUARIUS (गू गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

कुम्भ राशि वाले जातकों को यह वर्ष मिश्रित परिणाम लेकर आएगा। देवगुरु बृहस्पति आपके चतुर्थ भाव से वर्ष आरम्भ में गोचर करेगा। 14 मई 2025 के बाद पंचम भाव से गोचर करेंगे और अक्टूबर से दिसम्बर के प्रारम्भ तक छठे भाव से गोचर करेंगे वर्ष की शुरुआत आपके लिए अच्छी रहने वाली है. आपके हर कार्य सफलता से पूर्ण होंगे आपकी आमदनी में भी बढ़ोत्तरी होगी सभी कार्य सम्बंधित निर्णय आपके पक्ष में रहेंगे आपका दाम्पत्य जीवन बहुत अच्छा रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने की पूरी सम्भावनाएँ है। आपको वर्ष आरम्भ में नौकरी

सम्बंधी कार्यों में सफलता मिलने के योग बन सकते है। मार्च 2025 से शनि ग्रह आपके प्रथम भाव से गोचर करेंगे जिसके फलस्वरुप आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी आपके मन में नए एवं अच्छे विचारों का आदान-प्रदान होगा जिससे आप अपने कार्यो के पूर्ति अच्छी तरह से करने में सक्षम होंगे। मई 2025 में राहु आपके प्रथम भाव तथा केतु सप्तम भाव से गोचर करेंगे जिसके कारण आपके निजी रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो सकती है। वैवाहिक जीवन में भी उतार चढ़ाव आ सकता है सावधानी बर्ते। आर्थिक क्षेत्र में वर्ष आरम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है मध्य भाग से सावधानी बरतें, स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मध्यम एवं मिश्रित फल कारक रह सकता है। अतः यह नव वर्ष आपको सभी क्षेत्रों में मिश्रित फल देने वाला हो सकता है

उपायः- काली वस्तुओं का दान करें, सतनाजा दान करें, शमी वृक्ष की पूजा करें, तेल का दान करें। सूर्योदय से पूर्व उठें।

मीन राशि PICES (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची)

मीन राशि वालों के लिए यह वर्ष भाग्यशाली रहेगा वर्ष के आरम्भ में गुरु तृतीय भाव से गोचर करेंगे 14 मई 2025 से गुरु चतुर्थ भाव तथा अक्टूबर से दिसम्बर के प्रारम्भ तक गुरु पंचम भाव में गोचर करेंगे वर्ष 2025 में मीन राशि वालों के भाग्य के सितारे चमकेंगे आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा आपको इस वर्ष में कुछ बड़ा नया करने को मिल सकता है। नौकरी पेशा लोग सफलता की विशेष प्राप्ति करेंगे। वैवाहिक जीवन के लिए यह साल खुशियों से भरा रहेगा। वर्ष के शुरुआत में शनि ग्रह आपके बारहवें भाव से गोचर करेंगे। जिसके फलस्वरुप आपको विदेशों से लाभ होगा। मई 2025 से राहु आपकी राशि में 12वें भाव तथा केतु छठे भाव से गोचर करेगा जिसके चलते खर्चो में बढ़ोत्तरी पारिवारिक अशांति तथा बडे विवाद में फंसने की सम्भावनाएँ हो सकती है।आर्थिक क्षेत्र के लिए यह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली है, पैतृक संपत्ति से आपको इस वर्ष अच्छा लाभ प्राप्त होगा जमीन से सम्बन्धित बड़े कार्य होने की पूर्ण उम्मीद है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम है। इस वर्ष आपको मानसिक शांति एवं शारीरिक सुख मिलने के योग बन रहे है। इस वर्ष आपका ध्यान अपने करियर एवं अपने सपनों को पूरा करने में होगा। इस वर्ष आपके ग्रह गोचर से करियर सम्बंधी अनेक राजयोग बनते दिखाई दे रहे है। प्रेम, वैवाहिक स्थिति भी आपके लिए शुभ संकेत लेकर आ सकती है। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त लाभकारी, सुखकारी तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करने का वर्ष रहेगा।

उपायः- गणेश जी की आराधना करें, पीली वस्तुओं का दान करें, सुचेल, केला, भारंगी और नारंगी आदि के वृक्ष शुभ स्थानों पर लगाये, प्रतिदिन घी का दीपक जलाये, काँसे के पात्र में - भोजन करें।

।। सप्तश्लोकी गंगा लहरी ।।

समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधायाः किमपि तन् ।
महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः ।।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ् मूर्तं समुनसां।
सुधासौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु।। 1।।
दरिद्राणां दैन्यं दुरितमथं दुर्वासनहृदां
दुतं दूरीकुर्वन् सकृदुपगतो दृष्टिसरणिः।
अपि द्रागाविद्याद् भयदलनदीक्षागुरूरिह
प्रवाहस्ते वारां श्रियमयमपारां दिशतुनः।।2।।
उदञ्चन्मात्सर्यस्फुटकपट हेरम्बजननी।
कटाक्षव्याक्षेपक्षणजनित संक्षोभनिवहाः।
भवन्तु त्वङ्गन्तो हरसिरसि गंगा पुनरमी।
तरङ्गा प्रोत्तुङ्गा दुरितभर भङ्गाय भजताम् ।।3।।
स्मृतिं याता पुंसामकृततसुकृतानामपि चया।
हरन्त्यन्तस्तन्द्रां तिमिरमिव चन्द्रांशुसरणिः।
इयं सा ते मूर्ति सकलसुरसं सेव्यसलिला
ममान्तः संतापं त्रिविधमथ तापं च हरताम् ।।4।।
तवालम्बादम्ब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा
मया सर्वेऽवज्ञासरणिमथ नीताः सुरगणाः।
इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि तदा ।
निराधरो हारोदिभि कथय केषामिहपुरः ।। 5।।

अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा।
विलालद्वानीरं तव जननि तीरं श्रितवताम्।।
सुधातः स्वादीप सलिलमिदमातृप्ति पिवतां
जनानामानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम् ।। 6।।
प्रभाते स्नान्तीनां नृपतिरमणीनां कुचतटीं
गतो यावन्मातर्मिलति तव तोयैर्मृगमदः।
मृगास्तावद् वैमानिकशतसहस्त्रैः परिवृता
विशन्ति स्वच्छदं विमलवपुषो नन्दनवनम् ।। 7।।

।। श्री गंगा जी की आरती।।

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता। ।। ॐ जय ...।।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ।। ॐ जय ...।।
पुत्र सगर के तारे, सब जग की ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।। ।। ॐ जय ...।।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटा कर, परमगति पाता।। ।। ॐ जय ...।।
आरती मात तुम्हारी जो जन नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता ।। ।। ॐ जय ...।।


myloview

श्री विक्रम संवत् 2082 चैत्र शुक्ल पक्ष
(30 मार्च से 12 अप्रैल तक, सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	12:47	रवि	30 मार्च	सिद्धार्थ नामक नव संवत्सर आरम्भ, चैत्र नवरात्र आरम्भ, घटस्थापना गुडी पडवा, चेटीचंड (झूलेलाल जयन्ती), तैलाभ्यंग (निम्बपत्र प्राशन,) सिंजारा।
2	09:10	सोम	31	गणगौर पूजा, श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी-मनोरथ तृतीया, अरुन्धती व्रत, सौभाग्य शयन व्रत
4	26:31	मंगल	01अप्रैल	अंगारकी विनायक चतुर्थी, गुरु अंगद देव पुण्य दिवस (प्रा. मत), तृतीया तिथिक्षय
5	23:49	बुध	02	श्रीपंचमी, हत्यव्रत, मंगल कर्क में 25:21 से, डोलोत्सव, नागपंचमी (देशाचार)
6	21:40	गुरू	03	स्कन्द षष्ठी, यमुना जन्मोत्सव, सूर्य षष्ठी, अशोका षष्ठी बंगाल
7	20:12	शुक्र	04	नवपद पूजा आरम्भ (जैन)
8	19:25	शनि	05	दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजा, मेला नैना-बृजेश्वरी माता (कांगडा हि.प्र.)
9	19:22	रवि	06	श्री राम नवमी, चैत्र नवरात्र समाप्त, श्री दुर्गानवमी, श्रीरामचरितमानस जयन्ति, बुध पूर्व में उदय 29:23 से
10	19:59	सोम	07	श्री धर्मराज दशमी, नवरात्र पारण, बुध मार्गी 16:39 से
11	21:12	मंगल	08	कामदा एकादशी व्रत (सबका), लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
12	22:54	बुध	09	विष्णु-हरि दमनोत्सव, वामन-विष्णु द्वादशी, शनि उदयपूर्व (13:47 से)
13	25:00	गुरू	10	प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जन्मोत्सव (जैन)
14	27:20	शुक्र	11	शिव दमनक चतुर्दशी, नृसिंह दोलोत्सव, गुरु हरि किशन पुण्य दिवस
15	29:51	शनि	12	श्री हनुमान जन्मोत्सव, श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, वैशाख स्नान आरम्भ, छत्रपति शिवाजी पुण्य तिथि।

श्री सूर्य उत्तरायणे, (उत्तर गोले)
बसन्त - ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
रेवती	16:33	17	ऐन्द्र	बव	06:24	06:39	मेष (16:34)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	13:43	18	वैधृ	कौल	06:23	06:40	मेष	उत्तर-पूर्व
भरणी	11:05	19	विष्कु	वणि	06:22	06:40	वृष (16:30)	दक्षिण-पूर्व
कृति	08:50	20	आयु	बव	06:20	06:39	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहिणी मृगशिरा	07:01 28:50	21	सौभा	कौल	06:20	06:39	मिथुन (18:21)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	29:19	22	शोभ	गर	06:19	06:40	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुनः	29:31	23	अति	विष्टि	06:18	06:41	कर्क (23:25)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	30:25	24	सुक	बाल	06:17	06:42	कर्क	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	06:23	25	धृति	तैति	06:16	06:43	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	07:52	26	शूल	वणि	06:15	06:44	सिंह (07:54)	पूर्व-उत्तर
मघा	09:56	27	गण्ड	बव	06:14	06:44	सिंह	पूर्व-उत्तर
पू.फा.	12:23	28	वृद्धि	कौल	06:13	06:44	कन्या (19:04)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	15:09	29	ध्रुव	गर	06:12	06:45	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	18:06	30	व्या	विष्टि	06:11	06:45	कन्या	दक्षिण-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 वैशाख कृष्ण पक्ष
(13 अप्रैल से 27 अप्रैल तक, सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	00:00	रवि	13	संक्रान्ति सूर्य मेष में (27:21) से (पुण्यकाल अगले दिन दोपहर 12:39) तक, बैशाखी, श्री महावीर रथ यात्रा (जैन) श्री एकलिंग जी पाटोत्सव, शुक्र मार्गी 06:35 से
1	08:24	सोम	14	डॉ अम्बेडकर जयन्ती (134वीं)
2	10:55	मंगल	15	हिमाचल दिवस
3	13:16	बुध	16	वैशाख संकट चतुर्थी, श्रीमत्स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी का 35 वाँ निवार्ण दिवस
4	15:22	गुरु	17	सती अनुसूईया जन्मोत्सव
5	17:07	शुक्र	18	गुरु तेग बहादुर जन्मोत्सव, मलूकदास जी (वृन्दावन) जयन्ती
6	18:21	शनि	19	ग्रीष्म ऋतु आरम्भ
7	19:01	रवि	20	कालाष्टमी, गुरु अर्जुन देव जयन्ती, (प्राचीन मत) भानु सप्तमी, श्रीमत्स्वामी प्रेमानन्द गिरी जी महाराज पपरोला (हि0प्र0) एवं श्रीमत्स्वामी विष्णु देव जी का निवार्ण दिवस
8	18:58	सोम	21	शीतलाष्टमी (बुढा बास्योड़ा), राष्ट्रीय वैशाख मास आरम्भ
9	18:12	मंगल	22	पंचक आरम्भ 24:30 से, विश्व पृथ्वी दिवस
10	16:42	बुध	23	विश्व पुस्तक दिवस
11	14:31	गुरु	24	वरूथिनी एकादशी व्रत (सबका), श्री बल्लभाचार्य जयन्ती
12	11:45	शुक्र	25	प्रदोष व्रत, 725वीं श्री सेन जयन्ती
13	08:27	शनि	26	पंचक समाप्त 27:38 पर, मासिक शिवरात्रि
30	25:00	रवि	27	देव-पितृ कार्य हेतु वैशाख अमावस्या, श्री शुकदेव जयन्ती

श्री सूर्य उत्तरायणे, (उत्तर गोले)
बसन्त-ग्रीष्म ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
चित्रा	21:09	31	हर्ष	बाल	06:10	06:45	तुला(07:38)	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	24:12	1	वज्र	कौल	06:09	06:46	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	27:09	2	सिद्ध	गर	06:08	06:47	वृश्चि. (20:26)	उत्तर-पश्चिम
अनु	29:54	3	व्यति	विष्टि	06:07	06:47	वृश्चि.	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	00:00	4	वरि	बाल	06:06	06:48	वृश्चि.	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	08:20	5	परि	तैति	06:05	06:48	धनु(08:20)	पूर्व-उत्तर
मूल	10:19	6	शिव	वणि	06:04	06:48	धनु	पूर्व-उत्तर
पू.षा.	11:47	7	सिद्ध	विष्टि	06:03	06:49	मकर(18:04)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	12:36	8	साध्य	बाल	06:02	06:49	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	12:43	9	शुभ	तैति	06:01	06:50	कुम्भ(24:31)	पश्चिम-दक्षिण
धनि	12:06	10	शुक्ल	विष्टि	06:00	06:51	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत	10:47	11	ब्रह्म	बाल	05:59	06:52	मीन(27:25)	उत्तर-पश्चिम
पू.भा.	08:52	12	ऐन्द्र	तैति	05:58	06:52	मीन	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	01:18	13	वैधृ	वणि	05:57	06:53	मेष(27:38)	पूर्व-उत्तर
रवती	54:15							
अश्वि	24:37	14	प्रीति	चतु	05:56	06:53	मेष	पूर्व-उत्तर

श्री विक्रम संवत् 2082 वैशाख शुक्ल पक्ष
(28 अप्रैल से 12 मई तक, सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	21:11	सोम	28	वैशाख कृष्ण पक्ष आरम्भ, ऋषिपाराशर जन्मोत्सव (मतान्तर), चन्द्रदर्शन
2	17:30	मंगल	29	श्री परशुराम जन्मोत्सव, 418 वीं श्री शिवाजी जयन्ती
3	14:11	बुध	30	अक्षय तृतीया, श्री बदरी-केदारनाथ यात्रा आरम्भ, श्री मांतगी जयन्ती, विनायक चतुर्थी, त्रेतायुगादि
4	11:23	गुरु	01 मई	महाराष्ट्र-गुजरात दिवस, अगस्तय अस्त 07:04 से
5	09:15	शुक्र	02	1237 वा श्री शंकराचार्य जन्मोत्सव (प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष श्री आश्रम में सन्यास व उपनयन संस्कार सम्पन्न होगा, इच्छुक व्यक्ति एक माह पूर्व सूचित करें) श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती।
6	07:51	शनि	03	गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति), चन्दन छठ बंगाल
7	07:18	रवि	04	भानु सप्तमी
8	07:35	सोम	05	श्री जानकी नवमी, देवी बगलामुखी जयन्ती, दुर्गाष्टमी
9	08:37	मंगल	06	श्री हरि जयन्ती, बुध मेष में 28:06 से
10	10:20	बुध	07	श्री महावीर स्वामी कैवल्यज्ञान (जैन), श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती, बाबा जय गुरूदेव पुण्य
11	12:30	गुरु	08	मोहिनी एकादशी व्रत (सबका), परशुराम द्वादशी, राधा रूकमणी द्वादशी, श्री हित हरिवंश जयन्ती
12	14:55	शुक्र	09	प्रदोष व्रत
13	17:30	शनि	10	बुध पूर्व में अस्त 16:02 पर
14	20:01	रवि	11	श्री नृसिंह जयन्ती, देवी छिन्नमस्तिका जयन्ती, गुरु अमर दास जयन्ती
15	22:25	सोम	12	श्री सत्यनारायण (पीपल पर्णिमा व्रत), बुध एवं कूर्म अवतार जन्मोत्सव

श्री सूर्य उत्तरायणे, (उत्तर गोले)
ग्रीष्म ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
भर	21:37	15	आयु	किस्तु	05:55	06:54	वृष(26:53)	दक्षिण-पूर्व
कृति	18:46	16	सौभा	बाल	05:54	06:54	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	16:16	17	शोभ	गर	05:53	06:55	मिथुन(27:14)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	14:19	18	अति	विष्टि	05:52	06:55	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	13:03	19	धृति	बाल	05:51	06:56	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुनः	12:33	20	शूल	तैति	05:51	06:56	कर्क(06:36)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	12:52	21	गण्ड	वणि	05:50	06:57	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	14:01	22	वृद्धि	बव	05:49	06:58	सिंह(14:01)	पूर्व-उत्तर
मघा	15:51	23	ध्रुव	कौल	05:48	06:58	सिंह	पूर्व-उत्तर
पू.फा.	18:17	24	व्या	गर	05:48	06:59	कन्या(24:57)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	21:05	25	हर्ष	विष्टि	05:47	06:59	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	24:07	26	वज्र	बाल	05:47	07:00	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	27:15	27	सिद्धि	तैति	05:46	07:00	तुला(13:42)	दक्षिण-पश्चिम
स्वा	00:00	28	व्यति	गर	05:45	07:01	तुला	दक्षिण-पश्चिम
स्वा	01:20	29	वरि	विष्टि	05:45	07:01	वृश्चि.(26:27)	उत्तर-पश्चिम

श्री विक्रम संवत् 2082 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
(13 मई से 27 मई तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	24:35	मंगल ♨	13	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष आरम्भ, बुढवा मंगल
2	26:28	बुध	14	संक्रान्ति सूर्य वृष में (पुण्यकाल 12:33 से सूर्यास्त तक), नारद जन्मोत्सव (वीणा दान), गुरू मिथुन में 22:33 से
3	28:02	गुरू ♨	15	माँ आनन्दमयी जयन्ती, बुध पूर्व में अस्त 29:05 से
4	29:12	शुक्र	16	संकष्ट चतुर्थी
5	00:00	शनि ♨	17	
5	05:58	रवि	18	राहु कुम्भ व केतु सिंह राशि में 17:11 से
6	06:11	सोम ♨	19	
7	05:51	मंगल	20	कालाष्टमी, संत दादू दयाल पुण्य दिवस, पंचक आरम्भ 07:35 से बुढवा मंगल
9	27:21	बुध	21	अष्टमी तिथि क्षय
10	25:12	गुरू ♨	22	राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास आरम्भ
11	22:30	शुक्र	23	अपरा एकादशी व्रत (स्मार्त-वैष्णव), बुध वृष में 12:59 से, श्रीमत्स्वामीपूर्णानन्द गिरी जी महाराज आरा (बिहार) का निर्वाण दिवस
12	19:20	शनि ♨	24	शनि प्रदोष व्रत, अपरा एकादशी (निम्बार्क), पंचक समाप्त 13:47 पर, वट सावित्री व्रत आरम्भ
13	15:51	रवि	25	मासिक शिवरात्रि, सावित्री चतुर्दशी (बंगाल), नौतपा आरम्भ
14	12:11	सोम ♨	26	श्री शनैश्चर जयन्ती, पितृ कार्य ज्येष्ठ अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूर्ण, फल हारिणी कालिका पूजा (बंगाल)
30	08:32	मंगल	27	देव कार्य हेतु ज्येष्ठ अमावस्या, भावुका अमावस्या, श्री गंगा दशाश्वमेघ स्नान आरम्भ, संत ज्ञानेश्वर जयन्ती, करवीर व्रत, बुढवा मंगल

श्री सूर्य उत्तरायणे, (उत्तर गोले)
ग्रीष्म ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
विशा	09:09	30	वरि	बाल	05:44	07:02	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
अनु	11:47	01	परि	तैति	05:43	07:02	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	14:07	02	शिव	वणि	05:43	07:03	धनु(14:07)	उत्तर-पूर्व
मूल	16:07	03	सिद्ध	बव	05:42	07:04	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	17:43	04	साध्य	कौल	05:42	07:04	मकर(24:03)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	18:51	05	शुभ	तैति	05:41	07:05	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रव	19:29	06	शुक्ल	वणि	05:41	07:05	मकर(24:03)	दक्षिण-पूर्व
धनि	19:31	07	ऐन्द्र	बव	05:40	07:06	कुम्भ(07:35)	पश्चिम-दक्षिण
शत	18:57	08	वैधृ	तैति	05:40	07:06	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	17:47	09	विष्कु	वणि	05:40	07:07	मीन(12:07)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	16:01	10	प्रीति	बव	05:39	07:07	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	13:47	11	आयु	कौल	05:39	07:08	मेष(13:48)	पूर्व-उत्तर
अश्वि	11:11	12	सौभा	वणि	05:39	07:08	मेष	पूर्व-उत्तर
भरणी	08:23	13	शोभ	शकु	05:38	07:09	वृष(13:40)	दक्षिण-पूर्व
कृतिका	29:32							
रोहि	26:50	14	सुक	नाग	05:38	07:09	वृष	दक्षिण-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
(28 मई से 11 जून तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
2	25:54	बुध	28 मई	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष आरम्भ, चन्द्र दर्शन
3	23:17	गुरू	29	रम्भा तृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयन्ती
4	21:23	शुक्र	30	विनायक चतुर्थी, गुरू अर्जुन देव, शहीदी दिवस
5	20:15	शनि	31	श्रुति पंचमी (जैन), शुक्र मेष में 11:31 से
6	19:59	रवि	01 जून	स्कन्द-आरोग्य-अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, साई टेऊराम पुण्य दिवस, लक्ष्मी बाई पुण्य दिवस
7	20:34	सोम	02	
8	21:55	मंगल	03	दुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर)
9	23:54	बुध	04	महेश नवमी (माहेश्वर वंशीय)
10	26:16	गुरू	05	गंगा दशहरा, बटुक भैरव जयन्ती, रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, आचार्य श्री राम शर्मा पुण्य
11	28:47	शुक्र	06	निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त), वेदमाता गायत्री जन्मोत्सव, रूकमिणि विवाह, बुध मिथुन में 09:25 से, मंगल सिंह में 26:07 से
12	00:00	शनि	07	निर्जला एकादशी व्रत (वैष्णव), भीम एकादशी, चम्पक द्वादशी (बंगाल)
12	07:18	रवि	08	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ, बुध पश्चिम में उदय 20:23 से
13	09:36	सोम	09	
14	11:36	मंगल	10	वट सावित्री व्रत पूर्ण, श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत
15	13:12	बुध	11 जून	स्नान-दान हेतु ज्येष्ठ पूर्णिमा, संत कबीर जयन्ती, वट सावित्री व्रत पारण, गुरूपश्चिम में अस्त 19:29 पर

श्री सूर्य उत्तरायणे, (उत्तर गोले)
ग्रीष्म ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
मृग	24:28	15	धृति	बाल	05:38	07:10	मिथुन(13:36)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	22:38	16	शूल	तैति	05:37	07:10	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	21:29	17	गण्ड	वणि	05:37	07:11	कर्क(15:42)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	21:07	18	वृद्धि	बव	05:37	07:11	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	21:36	19	ध्रुव	कौल	05:37	07:12	सिंह(11:36)	पूर्व-उत्तर
मधा	22:55	20	व्या	गर	05:37	07:12	सिंह	पूर्व-उत्तर
पू.फा.	24:58	21	हर्ष	विष्टि	05:36	07:13	सिंह	पूर्व-उत्तर
उ.फा.	27:35	22	वज्र	बाल	05:36	07:13	कन्या(07:35)	दक्षिण-पूर्व
हस्त	00:00	23	सिद्धि	तैति	05:36	07:14	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	06:33	24	व्यति	वणि	05:36	07:14	तुला(20:06)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	09:39	25	वरि	बव	05:36	07:15	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	12:41	26	परि	बाल	05:36	07:15	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	15:31	27	शिव	तैति	05:36	07:15	वृश्चिक(08:50)	उत्तर-पश्चिम
अनु	18:01	28	सिद्ध	वणि	05:36	07:16	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	20:10	29	साध्य	बव	05:36	07:16	धनु(20:10)	पूर्व-उत्तर

श्री विक्रम संवत् 2082 आषाढ कृष्ण पक्ष
(12 जून से 25 जून तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	14:27	गुरू	12	आषाढ कृष्ण पक्ष आरम्भ, गुरू हर गोविन्द सिंह जयन्ती
2	15:19	शुक्र	13	
3	15:47	शनि	14	संकष्ट चतुर्थी
4	15:51	रवि	15	संक्रान्ति, सूर्य मिथुन में 06:43 पर (पुण्यकाल 06:43 से 12:39 तक)
5	15:32	सोम	16	नाग पंचमी (बंगाल), पंचक आरम्भ 13:07 से
6	14:46	मंगल	17	
7	13:35	बुध	18	कालाष्टमी
8	11:55	गुरू	19	
9	09:49	शुक्र	20	
10	07:19	शनि	21	योगिनी एकादशी (स्मार्त), सूर्य दक्षिणायन आरम्भ, वर्षा ऋतु आरम्भ, विश्व योग दिवस, अयन पुण्यकाल सूर्योदय से 08:11 तक, एकादशी तिथि क्षय
12	25:22	रवि	22	योगिनी एकादशी (वैष्णव), राष्ट्रीय आषाढ़ मास आरम्भ, बुध कर्क में 21:31 से, देवराह बाबा की पुण्य तिथि
13	22:10	सोम	23	सोम प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि, स्वामी विवेकानन्द पुण्य तिथि
14	18:57	मंगल	24	रोहिणी व्रत-जैन
30	16:01	बुध	25	देव-पितृ कार्ये आषाढ़ी अमावस्या

श्री सूर्य उत्तर-दक्षिणायणे, (उत्तर गोले)
ग्रीष्म-वर्षा ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
मूल	21:57	30	शुभ	कौल	05:36	07:16	धनु	पूर्व-उत्तर
पू.षा.	23:20	31	शुक्ल	गर	05:36	07:17	धनु	पूर्व-उत्तर
उ.षा	24:21	32	ब्रह्म	विष्टि	05:36	07:17	मकर(05:38)	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	24:57	01	ऐन्द्र	बाल	05:36	07:17	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	25:13	02	वैधृ	तैति	05:36	07:18	कुम्भ(13:09)	पश्चिम-दक्षिण
शत	25:01	03	विष्कु	वाणि	05:37	07:18	कुम्भ(13:09)	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	24:22	04	प्रीति	बव	05:37	07:18	मीन(18:35)	उत्तर-पश्चिम
उ. भा.	23:16	05	सौभा	कौल	05:37	07:19	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	21:43	06	शोभ	गर	05:37	07:19	मेष(21:44)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	19:50	07	अति	विष्टि	05:37	07:19	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	17:38	08	सुक	कौल	05:38	07:19	वृष(23:03)	दक्षिण-पूर्व
कृति	15:16	09	धृति	गर	05:38	07:19	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	12:54	10	शूल	विष्टि	05:38	07:20	मिथुन(23:45)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	10:39	11	गण्ड	नाग	05:38	07:20	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082, आषाढ शुक्ल पक्ष
(26 जून से 10 जुलाई तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	13:24	गुरू	26	आषाढ शुक्ल पक्ष आरम्भ, गुप्त नवरात्रि आरम्भ, चन्द्र दर्शन, मनोरथ द्वितीया (बंगाल)
2	11:19	शुक्र	27	श्री जगन्नाथ रथ यात्रा (पुरी)
3	09:54	शनि	28	विनायक चतुर्थी ,अनन्त श्री विभूषित नित्य वन्दनीय ब्र. श्रीमत्स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज का चतुस्त्रिंशत् (34 वाँ) निवार्ण महोत्सव, एवं श्री हरिहर कैलास ज्ञानपीठ का द्वात्रिंशत् (32 वाँ) वार्षिकोत्सव
4	09:14	रवि	29	शुक्र वृष में 14:09 से
5	09:24	सोम	30	सांई टेऊराम जन्मोत्सव, द्वारकाधीश पाटोत्सव, श्री वल्लभाचार्य बैकुण्ठ गमन
6	10:21	मंगल	01 जु.	विवस्वत सप्तमी, कुमार-कुसुंबा षष्ठी (बंगाल), श्री महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक (जैन)
7	11:58	बुध	02	मत्यर दिवस (कश्मीर)
8	14:07	गुरू	03	दुर्गाष्टमी, परशुराम अष्टमी (उडीसा) , खरसी पूजा (त्रिपुरा)
9	16:32	शुक्र	04	भडल्या (भडली) नवमी, मेला शरीक भवानी (कश्मीर), गुप्त नवरत्रि समाप्त
10	18:59	शनि	05	आशादशमी, गिरिजा दशमी, उल्टा रथ यात्रा पुरी, गुप्त नवरात्रि पारण
11	21:15	रवि	06	देवशयनी एकादशी व्रत (सबका), विष्णु श्यनोत्सव, चातुर्मास विधान आरम्भ
12	23:10	सोम	07	वामन पूजा, गुरू पूर्व में उदय 15:03 पर
13	24:37	मंगल	08	भौम प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारम्भ (गुजरात)
14	25:37	बुध	09	शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रतारम्भ, मेला ज्वालामुखी (हि0प्र0)
15	26:05	गुरू	10	गुरू पूर्णिमा (व्यास पीठ पूजा), श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा व्रत), सन्यासियों का चातुर्मास विधान आरम्भ

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर गोले)
वर्षा ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
आर्द्रा	08:46	12	ध्रुव	बव	05:39	07:20	कर्क (25:39)	उत्तर-पश्चिम
पुन	07:21	13	व्या	कौल	05:39	07:20	कर्क	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	06:35	14	हर्ष	गर	05:39	07:20	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	06:34	15	वज्र	विष्टि	05:40	07:20	सिंह(06:34)	उत्तर-पूर्व
मघा	07:20	16	सिद्धि	बाल	05:40	07:20	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	08:53	17	व्याति	तैति	05:40	07:20	कन्या(15:23)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	11:07	18	वरि	वणि	05:41	07:20	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	13:50	19	परि	बव	05:41	07:20	तुला(27:19)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	27:53	20	शिव	कौल	05:41	07:20	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	19:51	21	सिद्धि	तैति	05:42	07:20	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	22:41	22	साध्य	वणि	05:42	07:20	वृश्चिक (16:00)	उत्तर-पश्चिम
अनु	25:11	23	शुभ	बब	05:43	07:20	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	27:15	24	शुक्ल	कौलि	05:43	07:20	धनु (27:15)	उत्तर-पूर्व
मूल	28:49	25	ब्रह्म	गर	05:44	07:20	धनु	उत्तर-पूर्व
पु.षा.	00:00	26	ऐन्द्र	विष्टि	05:44	07:20	धनु	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 श्रावण कृष्ण पक्ष
(11 जुलाई से 24 जुलाई तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	26:07	शुक्र	11	श्रावण कृष्ण पक्ष आरम्भ, जीवंतिका व्रत, कॉंवड यात्रा आरम्भ
2	24:45	शनि	12	अशून्य शयन व्रतारम्भ, फल द्वितीया
3	25:03	रवि	13	पंचक आरम्भ 18:52 से, शनि वक्री 09:37 से
4	24:00	सोम	14	संकष्ट चतुर्थी, श्रावण प्रथम सोमवार व्रत, वन सोमवार, स्वर्ण गौरी व्रत
5	22:38	मंगल	15	नागपंचमी (राजस्थान), मंगला गौरी व्रत
6	21:09	बुध	16	संक्रान्ति सूर्य कर्क में 17:30 से(पुण्यकाल सूर्योदय से 17:30 तक)
7	19:09	गुरू	17	कालाष्टमी, शीतला सप्तमी, पंचक समाप्त 27:39 पर
8	17:02	शुक्र	18	बुध वक्री 10:13 से बुध अस्त पश्चिम 20:27 से, श्रीमत्स्वामी आत्मतीर्थ जी महाराज (काली कमली) का निर्वाण दिवस
9	14:41	शनि	19	गुरू हरिकिशन राय जयन्ती (प्रा.मत), कुमारी पूजा
10	12:13	रवि	20	आदित्य पूजन
11	09:39	सोम	21	कामदा (कामिका) एकादशी व्रत (सबका), श्रावण मास द्वितीय सोमवार व्रत
12	07:05	मंगल	22	भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी व्रत, केर पूजा (त्रिपुरा), त्रयोदशी तिथि क्षय
14	26:29	बुध	23	मासिक शिवरात्रि, राष्ट्रीय श्रावण मास आरम्भ, श्री बाल गंगाधर तिलक व चन्द्रशेखर आजाद जन्म दिवस
30	24:41	गुरू	24	देव-पितृ कार्य हेतु श्रावणी हरियाली अमावस्या

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर गोले)
वर्षा ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पू.षा.	05:56	27	वैधृ	बाल	05:44	07:20	मकर (12:07)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	06:35	28	विष्कु	तैति	05:45	07:19	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	06:53	29	प्रीती	वणि	05:45	07:19	कुम्भ (18:53)	पश्चिम-दक्षिण
धनि	06:47	30	आयु	बव	05:46	07:19	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत पू.भा.	06:29 29:43	31	सौभा	कौल	05:46	07:19	मीन (23:58)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	28:50	01	शोभ	गर	05:47	07:18	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	27:36	02	अति	विष्टि	05:47	07:18	मेष (27:39)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	26:12	03	सुक	बाल	05:48	07:18	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	24:37	04	शूल	गर	05:48	07:17	मेष	उत्तर-पूर्व
कृति	22:52	05	गण्ड	विष्टि	05:49	07:17	वृष (06:11)	दक्षिण -पूर्व
रोहि	21:07	06	वृद्धि	बाल	05:49	07:17	वृष	दक्षिण-पूर्व
मृग	19:24	07	ध्रुव	तैति	05:50	07:16	मिथुन (08:14)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	17:53	08	व्या	विष्टि	05:50	07:16	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	16:43	09	हर्ष	चतु	05:51	07:15	कर्क (10:59)	उत्तर-पश्चिम

श्री विक्रम संवत् 2082 श्रावण शुक्ल पक्ष
(25 जुलाई से 09 अगस्त तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	23:23	शुक्र	25	नक्त व्रत आरम्भ, महालक्ष्मी स्थापन-पूजन, श्रावण शुक्ल पक्ष आरम्भ, मेलाचिन्तपूर्णी (हि.प्र.) आरम्भ, श्रीमत्स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज हरिद्वार का द्वितीय (निर्वाण दिवस)
2	22:42	शनि	26	चन्द्र दर्शन, सिंजारा (तीज का), श्री करपात्री जी जयन्ती, शुक्र मिथुन में 08:55 से
3	22:41	रवि	27	मधुश्रवा-हरियाली तीज, स्वर्ण गौरी व्रत, सुकृत तृतीया व्रत
4	23:24	सोम	28	श्रावण तृतीय सोमवार व्रत, वरद (दूर्वा) चतुर्थी, रोटक व्रतारम्भ, मंगल कन्या में 19:56 से
5	24:46	मंगल	29	नाग पंचमी, मंगला गौरी व्रत, शुक्ल यर्जुवेदिय उपाकर्म
6	26:41	बुध	30	कल्की अवतार जन्मोत्सव, वर्ण षष्ठी, ऋगवेदीय उपाकर्म, स्कन्द षष्ठी
7	28:57	गुरू	31	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, शीतला सप्तमी (सिंध)
8	00:00	शुक्र	01 अग.	दुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डा देवी (हि.प्र.) समाप्त
8	07:23	शनि	02	मेला नैना देवी (हि.प्र.), अश्वत्थ मारूती पूजन
9	09:42	रवि	03	आदित्य पूजन
10	11:42	सोम	04	श्रावण चतुर्थ सोमवार व्रत
11	13:12	मंगल	05	पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी व्रत (सबका), मंगला गौरी व्रत
12	14:08	बुध	06	प्रदोष व्रत, बुध-दामोदर द्वादशी, विष्णु पवित्रार्पण
13	14:28	गुरू	07	शिवपवित्रार्पण
14	14:12	शुक्र	08	श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, श्री हयग्रीव अवतार जन्मोत्सव, सूंण मांडना (पुरा दिन शुद्ध) कोकिला व्रत पूर्ण
15	13:24	शनि	09	रक्षाबन्धन, पंचक आरम्भ 26:11 से, संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म, अमरनाथ यात्रा समाप्त

श्री सूर्य दक्षिणायन, (उत्तर गोले)
वर्षा ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पुष्य	16:00	10	वज्र	किंस्तु	05:51	07:15	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	15:52	11	व्यति	बाल	05:52	07:14	सिंह(15:52)	उत्तर-पूर्व
मघा	16:23	12	वरि	तैति	05:51	07:14	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	1735	13	परि	वणि	05:52	07:13	कन्या(23:57)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	19:26	14	शिव	बव	05:53	07:13	कन्या(23:57)	दक्षिण-पूर्व
हस्त	21:51	15	सिद्ध	कौल	05:54	07:12	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	24:41	16	साध्य	गर	05:55	07:12	तुला(11:15)	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	27:40	17	शुभ	विष्टि	05:55	07:11	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	00:00	18	शुक्ल	बव	05:56	07:10	वृश्चिक(23:51)	उत्तर-पश्चिम
विशा	01:38	19	शुक्ल	कौल	05:56	07:10	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
अनु	09:12	20	ब्रह्म	गर	05:57	07:09	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	11:22	21	ऐन्द्र	विष्टि	05:57	07:08	धनु(11:22)	उत्तर-पूर्व
मूल	12:57	22	वैधृ	बाल	05:58	07:08		उत्तर-पूर्व
पू.षा.	14:01	23	विष्कु	तैति	05:58	07:07	मकर(20:11)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	14:28	24	आयु	वणि	05:59	07:06		दक्षिण-पूर्व
श्रव	14:23	25	सौभा	बव	05:59	07:05	कुम्भ(26:11)	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण पक्ष
(10 अगस्त से 23 अगस्त तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	12:00	रवि	10	भाद्रपद कृष्ण पक्ष आरम्भ, अशून्यशयन व्रत पूर्ण, बुध पूर्व में उदय 29:07 से, मेला गोगामेडी (राज.) आरम्भ, गायत्री पुरश्चरण आरम्भ
2	10:34	सोम	11	बृहद गौरी व्रत, बुध मार्गी 12:54 पर, विशालाक्षी यात्रा काशी
3	08:41	मंगल	12	कज्जली (सातुडी) तीज, बहुला चतुर्थी
4	06:36	बुध	13	रक्षा पंचमी, पंचमी तिथि क्षय
6	26:07	गुरू	14	हल चन्दन षष्ठी, बलदेव जन्मोत्सव, पंचक समाप्त 09:03 पर
7	23:50	शुक्र	15	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त) निशिथ काल 24:21 से, 79 वाँ स्वतन्त्रता दिवस, शीतला सप्तमी
8	21:34	शनि	16	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव), कालाष्टमी, दूर्वाष्टमी, संक्रान्ति सूर्य सिंह में 25:51 से, मेला गोगामेडी (राज.) समाप्त
9	19:24	रवि	17	गोगा (गुग्गा) नवमी, नंद महोत्सव, संक्रान्ति पुण्य काल सूर्योदय से दिन 21:40 तक
10	17:22	सोम	18	श्रीमत्स्वामी यशोदानन्द तीर्थ जी का निर्वाण महोत्सव
11	15:32	मंगल	19	अजा एकादशी व्रत (सबका)
12	13:58	बुध	20	प्रदोष व्रत, बछ बारस (गौवत्स पूजा), पर्युषण पर्व आरम्भ (जैन), शुक्र कर्क में 25:17 से
13	12:45	गुरू	21	मासिक शिवरात्रि, अघोरा चतुर्दशी व्रत
14	11:56	शुक्र	22	पिठौरी अमावस्या, पितृ कार्य हेतु भाद्रपद अमावस्या, शरद ऋतु आरम्भ
30	11:36	शनि	23	देव कार्य हेतु शनैश्चरी भाद्रपद (कुशोत्याटिनी)कुशाग्रहणी अमावस्या, लोहागर्ल यात्रा, राष्ट्रीय भाद्रपद मास आरम्भ

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर गोले)
वर्षा-शरद ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
धनि	13:52	26	शोभ	कौल	06:00	07:04	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत	13:00	27	अति	गर	06:00	07:04	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	11:52	28	सुक	विष्टि	06:01	07:03	मीन(06:10)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	10:32	29	धृति	बाल	06:01	07:02	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेव	09:05	30	शूल	गर	06:02	07:01	मेष(09:05)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	07:15	31	गण्ड	विष्टि	06:02	07:00	मेष	उत्तर-पूर्व
कृति	28:36	32	वृद्धि	बाल	06:03	06:59	वृष(11:43)	दक्षिण-पूर्व
रोहि	27:17	01	व्या	तैति	06:03	06:59	वृष	दक्षिण-पूर्व
मृग	26:05	02	हर्ष	वणि	06:04	06:58	मिथुन(14:40)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	25:07	03	व्रज	बाल	06:04	06:57	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	24:56	04	सिद्ध	तैति	06:05	06:56	कर्क(18:35)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	24:08	05	व्यति	वणि	06:05	06:55	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	24:16	06	वरि	शकु	06:05	06:54	सिंह(24:16)	उत्तर-पूर्व
मघा	24:54	07	परि	नाग	06:06	06:53	सिंह	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल पक्ष
(24 अगस्त से 07 सितम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	11:47	रवि	24	चन्द्र दर्शन, मौन व्रतारम्भ, नक्त व्रत पूर्ण, भाद्रपद शुक्ल पक्ष आरम्भ, अगस्त्य उदय 15:02 से
2	12:35	सोम	25	श्री वराह अवतार जन्मोत्सव, बाबा रादेव दूज
3	13:55	मंगल	26	हरितालिका (केवडा) तीज, गौरी तृतीया, सामवेदीय उपाकर्म, गुरू रामदास पुण्य दिवस (चन्द्र दर्शन निषेध)
4	15:44	बुध	27	श्री गणेश (कलंक) चतुर्थी, श्री गणेश जन्मोत्सव (चन्द्र दर्शन निषेध)
5	17:57	गुरू	28	ऋषि पंचमी, गर्ग-अंगिरा, ऋषि जन्मोत्सव, रक्षा पंचमी बंगाल
6	20:22	शुक्र	29	चम्पा-सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ (जयन्ती) मतान्तर, ललिता षष्ठी व्रत
7	22:47	शनि	30	मुक्ता भरण सन्तान सप्तमी, बुध सिंह में 16:41 से, मेला पाण्डूपोल अलवर (राज0)
8	24:57	रवि	31	ऋषि दधिची जयन्ती, राधाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत आरम्भ, मेला भर्तहरी आरम्भ (अलवर राज0)
9	26:43	सोम	01 सित.	अदु:ख नवमी, (उदासीन)
10	27:53	मंगल	02	दशावतार (व्रत) जयन्ती, तेजा दशमी, बाबा रामदेव की 400 वीं जयन्ती, धूप दशमी (जैन), मेला सांवलिया सेठ (3) दिन, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
11	28:22	बुध	03	पद्मा (जल झूलनी) परिवर्तिनी एकादशी (स्मति-वैष्णव), डोल ग्यारस, मेला चारभुजानाथ
12	28:08	गुरू	04	वामन अवतार जन्मोत्सव, भुवनेश्वरी जयन्ती, कल्की द्वादशी, जलझूलनी एकादशी (निम्बार्क), श्रवण द्वादशी
13	27:13	शुक्र	05	प्रदोष व्रत, शिक्षक दिवस
14	25:41	शनि	06	पंचक आरम्भ 11:21 से, अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणेश विसर्जन
15	23:37	रवि	07	श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, गुरू अमरदास जयन्ती, चन्द्रग्रहण (सूतक आरम्भ दोहपर 12:55 से), सन्यासियों का चातुर्मास पूर्ण, महालय श्राद्ध पक्ष आरम्भ

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर गोले)
शरद ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पू.फा.	26:05	08	शिव	बव	06:06	06:52	सिंह	उत्तर-पूर्व
उ.फा.	27:49	09	सिद्ध	कौल	06:07	06:51	कन्या(08:28)	दक्षिण-पूर्व
हस्त	30:40	10	साध्य	गर	06:07	06:50	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	00:00	11	शुभ	विष्टि	06:08	06:49	तुला(19:21)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	08:43	12	शुक्ल	बाल	06:08	06:48	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	11:38	13	ब्रह्म	कौल	06:09	06:47	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	14:37	14	ऐन्द्र	गर	06:09	06:46	वृश्चिक(07:53)	उत्तर-पश्चिम
अनु	17:27	15	वैधृ	विष्टि	06:10	06:45	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	19:55	16	विष्कु	बाल	06:10	06:43	धनु(19:55)	उत्तर-पूर्व
मूल	21:51	17	प्रीति	तैति	06:11	06:43	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	23:08	18	आयु	वणि	06:11	06:42	मकर(29:21)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	23:43	19	सौभा	बव	06:11	06:40	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	23:38	20	शोभ	कौल	06:12	06:39	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	22:55	21	अति	गर	06:12	06:38	कुम्भ(11:21)	पश्चिम-दक्षिण
शत	21:41	22	सुक	विष्टि	06:13	06:37	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082 आश्विन कृष्ण पक्ष
(08 सितम्बर से 21 सितम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	21:12	सोम ♨	08	आश्विन कृष्ण पक्ष आरम्भ, ग्रहण वेध दिन, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध
2	18:29	मंगल	09	द्वितीया तिथि का श्राद्ध
3	15:37	बुध ♨	10	संकट चतुर्थी, तृतीया-चतुर्थी तिथि का श्राद्ध, पंचक समाप्त 16:03 पर
4	12:45	गुरू	11	कुमार पंचमी, पंचमी तिथि का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध
5	09:57	शुक्र ♨	12	चन्द्र षष्ठी, षष्ठी तिथि का श्राद्ध
6	07:23	शनि	13	सप्तमी तिथि का श्राद्ध, श्रीमत्स्वामी रामानन्द सरस्वती जी महाराज (ओंकारेश्वर) का निर्वाण दिवस, मंगल तुला में 21:20 से
8	27:06	रवि	14	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अशोकाष्टमी, अष्टमी तिथि का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत, कालाष्टमी, शुक्र सिंह में 24:15 से
9	25:31	सोम ♨	15	मातृ नवमी, नवमी तिथि का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, बुध कन्या में 11:07 से
10	24:21	मंगल	16	संक्रान्ति सूर्य कन्या में 25:45 से, दशमी तिथि का श्राद्ध
11	23:38	बुध ♨	17	इन्दिरा एकादशी व्रत (सबका), एकादशी तिथि का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा, (कन्या संक्रान्ति पुण्य काल सूर्योदय से 12:31 तक)
12	23:24	गुरू	18	द्वादशी तिथि का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध
13	23:37	शुक्र ♨	19	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी-मघा श्राद्ध, मासिक शिवरात्रि
14	24:17	शनि	20	चतुर्दशी तिथि का श्राद्ध, (विष-शस्त्रादि दुर्घटना में मृतकों) का श्राद्ध
30	25:23	रवि ♨	21	देव-पितृ कार्य हेतु सर्वपितृ अमावस्या, अमावस्या-अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (भारत में नहीं)

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर गोले)
शरद ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पू.भा.	20:01	23	धृति	बाल	06:12	06:36	मीन(14:29)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	18:07	24	गण्ड	तैति	06:13	06:35	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	16:03	25	वृद्धि	विष्टि	06:14	06:34	मेष(16:03)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	13:57	26	ध्रुव	बाल	06:14	06:33	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	11:57	27	व्या	तैति	06:15	06:32	वृष(17:30)	दक्षिण-पूर्व
कृति	10:12	28	हर्ष	वणि	06:15	06:31	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	08:41	29	वज्र	बाल	06:16	06:30	मिथुन(20:03)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	07:31	30	व्यति	तैति	06:16	06:29	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	06:45	31	वरि	वणि	06:17	06:27	कर्क(24:27)	उत्तर-पश्चिम
पुन	06:26	01	परि	बव	06:17	06:26	कर्क	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	06:32	02	शिव	कौल	06:17	06:25	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	07:05	03	सिद्ध	गर	06:18	06:24	सिंह(07:05)	उत्तर-पूर्व
मघा	08:05	04	साध्य	विष्टि	06:18	06:12	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	09:32	05	शुभ	चतु	06:19	06:21	कन्या(15:57)	दक्षिण-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 आश्विन शुक्ल पक्ष
(22 सितम्बर से 07 अक्टूबर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	26:55	सोम	22	आश्विन शुक्ल पक्ष आरम्भ, शारदीय नवरात्रि आरम्भ (घटस्थापना), अग्रसेन जयन्ती, मातामह-मातामही श्राद्ध, मेला कैलादेवी (राज.) आरम्भ, सूर्य दक्षिण गोलिय गति आरम्भ
2	28:51	मंगल	23	राष्ट्रीय आश्विन मास आरम्भ, चन्द्रदर्शन
3	00:00	बुध	24	सिंधूर तृतीया
3	07:06	गुरू	25	विनायक चतुर्थी
4	09:33	शुक्र	26	ललिता पंचमी, उपांग ललिता व्रत
5	12:04	शनि	27	स्कन्द षष्ठी
6	14:27	रवि	28	बिल्व निमंत्रण, शहीद भगत सिंह जयन्ती
7	16:32	सोम	29	सरस्वती आवाहन, बिल्व सप्तमी, नवपद ओली प्रारम्भ (जैन), भद्रकाली अवतार प्राक्ट्योत्सव
8	18:06	मंगल	30	दुर्गाष्टमी, महाअष्टमी उपवास-पूजा (हवन), मत्स्य उत्सव आरम्भ (अलवर राज.), मेला ज्वालामुखी एवं तारादेवी (हि0प्र0)
9	19:01	बुध	01 अ.	महानवमी (व्रत-हवन-उपवास), सरस्वती बालिदान (08:07 के बाद), नवरात्रि समाप्त
10	19:11	गुरू	02	विजय दशमी (दशहरा), शमी-आयुध-अपराजिता पूजा, सरस्वती विसर्जन, नवरात्रि पारण, श्री बुद्ध जयन्ती, बुध तुला में 27:41 से, विजय मुहूर्त 14:04 से 14:51 तक
11	18:33	शुक्र	03	पापाकुंशा एकादशी व्रत (सबका), पंचक आरम्भ 21:27 से, भरत मिलाप
12	17:09	शनि	04	शनि प्रदोष व्रत, पद्मनाभ द्वादशी, श्रीमत्स्वामी सेवानन्द सरस्वती जी महाराज का निर्वाण दिवस
13	15:04	रवि	05	
14	12:24	सोम	06	शरद पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, कोजागरी व्रत, लक्ष्मी व इन्द्र पूजा, क्षीरपानोत्सव, वाराह चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी
15	09:17	मंगल	07	स्नान-दान हेतु आश्विन पूर्णिमा, महर्षि वाल्मिकी जयन्ती, कार्तिक स्नान आरम्भ, पंचक समाप्त 25:27 पर, मीरा बाई जयन्ती, जैन औली समाप्त, मेला सालासर बालाजी

श्री सूर्य दक्षिणायने, (उत्तर-दक्षिण गोले)
शरद ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
उ.फा.	11:23	06	शुक्ल	किंस्तु	06:19	06:20	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	13:40	07	ब्रह्म	बाल	06:20	06:19	तुला (26:55)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	16:16	08	ऐन्द्र	तैति	06:20	06:18	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	19:07	09	वैधृ	गर	06:20	06:17	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	22:09	10	विष्कु	विष्टि	06:21	06:16	वृश्चिक(15:23)	उत्तर-पश्चिम
अनु	25:08	11	प्रीति	बाल	06:21	06:15	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	27:54	12	आयु	तैति	06:22	06:14	धनु (27:54)	उत्तर-पूर्व
मूल	30:16	13	सौभा	वणि	06:22	06:13	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	00:00	14	शोभ	बव	06:23	06:12	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	08:05	15	अति	बाल	06:23	06:11	मकर (14:27)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	09:13	16	सुक	तैति	06:24	06:10	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	09:34	17	धृति	वणि	06:24	06:09	कुम्भ (21:27)	पश्चिम-दक्षिण
धनि	09:09	18	शूल	बाल	06:25	06:07	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत	08:01	19	गण्ड	तैति	06:26	06:05	मीन (24:45)	उत्तर-पश्चिम
पू.भा.	30:16							
उ.भा.	28:01	20	वृद्धि	वणि	06:26	06:05	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	25:28	21	ध्रुव	बव	06:26	06:04	मेष (25:28)	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण पक्ष
(08 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
2	26:21	बुध	08	कार्तिक कृष्ण पक्ष आरम्भ, अशून्यशयन व्रत, गुरू रामदास जयन्ती (प्रा0 मत)
3	22:54	गुरू	09	शुक्र कन्या में 10:47 से
4	19:38	शुक्र	10	संकष्ट (करक) करवा चौथ
5	16:43	शनि	11	पदम प्रभु जन्म (जैन)
6	14:17	रवि	12	स्कन्द षष्ठी
7	12:23	सोम	13	अहोई अष्टमी, कालाष्टमी, राधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन)
8	11:11	मंगल	14	
9	10:34	बुध	15	गुरू हरिराम पुण्य दिवस (प्रा0 मत)
10	10:35	गुरू	16	
11	11:12	शुक्र	17	रमा एकादशी व्रत (सबका), गोवत्स द्वादशी (बछ बारस), संक्रान्ति सूर्य तुला में 13:45 से (पुण्यकाल प्रातः 09:45 से सायं 05:51 तक)
12	12:19	शनि	18	शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस (आचार्य धनवन्तरी जन्मोत्सव), यम दीप दान, गुरू कर्क में 19:47 से
13	13:51	रवि	19	श्री हनुमान जयन्ती (उत्तर भारत), नरक चतुर्दशी (काली चौदस), सायं दीप दान, मासिक शिवरात्रि
14	15:45	सोम	20	रूप चतुर्दशी (अरूणोदय स्नान)
30	17:55	मंगल	21	दीपावली (महालक्ष्मी पूजा), कुबेर पूजा, कमला जयन्ती, देव-पितृ कार्ये हेतु भौमवती अमावस्या

श्री सूर्य दक्षिणायने, (दक्षिण गोले)
शरद ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
अश्वि	22:43	22	हर्ष	तैति	06:27	06:02	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	22:02	21	वज्र	वणि	06:27	06:01	वृष (25:23)	दक्षिण-पूर्व
कृति	17:31	22	सिद्धि	बव	06:28	06:00	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	15:20	23	व्यति	तैति	06:28	05:59	मिथुन (26:23)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	13:35	24	वरि	वणि	06:29	05:58	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	12:26	25	परि	बव	06:29	05:57	कर्क (29:58)	उत्तर-पश्चिम
पुन	11:14	26	सिद्ध	कौल	06:30	05:56	कर्क	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	11:59	27	साध्य	गर	06:30	05:55	कर्क (29:58)	उत्तर-पश्चिम
अश्लि	12:41	28	शुभ	विष्टि	06:31	05:54	सिंह (12:41)	उत्तर-पूर्व
मघा	13:57	29	शुक्ल	बाल	06:31	05:53	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	15:41	30	ब्रह्म	तैति	06:32	05:52	कन्या (22:11)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	17:49	01	ऐन्द्र	वणि	06:32	05:51	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	20:16	02	वैधृ	शकु	06:33	05:50	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	22:57	03	विष्कु	नाग	06:34	05:49	तुला (09:36)	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल पक्ष
(22 अक्टूबर से 05 नवम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	20:17	बुध	22	कार्तिक शुक्ल पक्ष आरम्भ, गोवर्धन-बलि पूजा (अन्नकूट), जैन नववर्ष 2552 आरम्भ
2	22:47	गुरू	23	यम द्वितीया (भाई दूज), चन्द्र दर्शन, विश्वकर्मा- चित्रगुप्त- कलम- दवात पूजा, हेमन्त ऋतु आरम्भ, राष्ट्रीय कार्तिक मास आरम्भ
3	25:19	शुक्र	24	बुध वृश्चिक में 12:37 से
4	27:47	शनि	25	विनायक (दूर्वा) चतुर्थी,
5	30:05	रवि	26	सौभाग्य-ज्ञान-लाभ-पाण्डव पंचमी, छठ पर्व आरम्भ (बिहार), गुरू गोविन्द सिंह पुण्य दिवस
6	00:00	सोम	27	मंगल वृश्चिक में 15:41 से
6	08:00	मंगल	28	सूर्य षष्ठी, छठ पर्व (बिहार), अस्तगामी सूर्य को अर्ध्य, मेला पुष्कर (राज0) आरम्भ
7	09:23	बुध	29	छठ पर्व (उदयगामी सूर्य) को अर्ध्य, जैन अट्ठाई आरम्भ, सहस्त्रार्जुन जयन्ती, श्रीमत्स्वामी शंकरानन्द गिरि जी महाराज (पपरोला) हि0 प्र0 का निर्वाण दिवस
8	10:05	गुरू	30	गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी, अक्षय आँवला नवमी
9	10:03	शुक्र	31	कुष्माण्ड नवमी, पंचक आरम्भ 06:47 से, सरदार पटेल जयन्ती
10	09:11	शनि	01 नव.	देव प्रबोधिनी एकादशी (स्मार्त), भीष्म पंचक व्रतारम्भ, चातुर्मास विधान पूर्ण, आशा दशमी कंस वध लीला (मथुरा)
11	07:31	रवि	02	त्रिस्पर्शा देव उठनी एकादशी (वैष्णव-निम्बार्क), तुलसी विवाह, कालीदास जयन्ती, शुक्र तुला में 13:14 से खाटू श्याम जयन्ती
13	26:06	सोम	03	सोम प्रदोष व्रत, द्वादशी तिथि क्षय
14	22:36	मंगल	04	बैकुण्ठ चतुर्दशी, पंचक समाप्त 12:33 पर, जैन अट्ठाई पूर्ण
15	18:49	बुध	05	देव दीपावली, श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, गुरू नानक जयन्ती, भीष्म पंचक व्रत समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, निम्बार्काचार्य जयन्ती

श्री सूर्य दक्षिणायने (दक्षिण गोले)
शरद-हेमन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
स्वा	25:51	06	प्रीति	किंस्तु	06:34	05:48	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	28:51	07	आयु	बाल	06:35	05:48	वृश्चिक(22:05)	उत्तर-पश्चिम
अनु	00:00	08	सौभा	तैति	06:35	05:47	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
अनु	07:51	09	शोभ	वणि	06:36	05:46	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	10:46	10	शोभ	बव	06:36	05:45	धनु (10:46)	उत्तर-पूर्व
मूल	13:27	11	अति	कौल	06:37	05:44	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	15:45	12	सुक	तैति	06:38	05:43	मकर (22:14)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	17:27	13	धृति	वणि	06:39	05:43	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	18:33	14	शूल	बव	06:39	05:42	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	18:50	15	वृद्धि	कौल	06:40	05:41	कुम्भ (06:47)	पश्चिम-दक्षिण
शत	18:20	16	ध्रुव	गर	06:41	05:40	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	17:03	17	व्या	विष्टि	06:41	05:40	मीन (11:27)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	15:05	18	हर्ष	कौल	06:42	05:49	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	12:33	19	वज्र	गर	06:43	05:38	मेष (12:34)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	09:40	20	सिद्धि	विष्टि	06:43	06:43	मेष	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
(06 नवम्बर से 20 नवम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	14:55	गुरू	06	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष आरम्भ, अशून्य शयन व्रत, मंगल पश्चिम में अस्त 23:51 से
2	11:05	शुक्र	07	
3	07:32	शनि	08	संकष्ट चतुर्थी, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
5	25:55	रवि	09	चतुर्थी तिथि क्षय, बुध वक्री 24:17 से, दीक्षा दिवस (जैन)
6	24:07	सोम	10	पूज्य डोगरे जी पुण्य तिथि, छींट छठ
7	23:09	मंगल	11	गुरू व्रकी 22:11 से
8	22:58	बुध	12	श्री काल भैरवाष्टमी (भैरव जन्म), कालष्टमी, बुध पश्चिम में अस्त 18:41 पर
9	23:34	गुरू	13	श्री जाम्भोजी पुण्य दिवस (विश्नोई)
10	24:50	शुक्र	14	श्री महावीर स्वामी दिक्षा, बाल दिवस
11	26:37	शनि	15	उत्पति (उत्पन्ना-वैतरणी), एकादशी (सबका), पद्म प्रभु मोक्ष (जैन)
12	28:47	रवि	16	सुंक्रान्ति सूर्य वृश्चिक में 13:35 से (पुण्यकाल सूर्योदय से 13:35 तक)
13	00:00	सोम	17	सोम प्रदोष व्रत, लाला लाजपत राय पुण्य दिवस
13	07:12	मंगल	18	मासिक शिवरात्रि, संत ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि
14	09:44	बुध	19	पितृ कार्य हेतु, मार्गशीर्ष अमावस्या, श्री बालाजी जयन्ती
30	12:17	गुरू	20	देव कार्य हेतु अमावस्या

श्री सूर्य दक्षिणायने (दक्षिण गोले)
हेमन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
कृति	27:27	21	व्यति	कौल	06:44	05:37	वृष (11:47)	दक्षिण-पूर्व
रोहिणी	24:33	22	परि	गर	06:45	05:36	वृष (11:47)	दक्षिण-पूर्व
मृग	22:02	23	शिव	विष्टि	06:45	05:36	मिथुन (11:14)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	22:04	24	सिद्ध	कौल	06:46	05:35	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	18:48	25	साध्य	गर	06:47	05:35	कर्क (13:03)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	18:17	26	शुभ	विष्टि	06:48	05:34	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	18:35	27	शुक्ल	बाल	06:48	05:33	सिंह (18:35)	उत्तर-पूर्व
मघा	19:38	28	ऐन्द्र	तैति	06:49	05:33	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	21:20	29	वैधृ	वणि	06:50	05:33	कन्या (27:51)	दक्षिण-पर्व
उ.फा.	23:34	30	विष्कुं	बव	06:50	05:32	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	26:10	01	प्रीति	कौल	06:51	05:32	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	29:01	02	प्रीति	गर	06:52	05:31	तुला (15:34)	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	00:00	03	आयु	वणि	06:53	05:31	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	07:57	04	सौभा	शुक	06:54	05:31	वृश्चिक(28:13)	उत्तर-पश्चिम
विशा	10:58	05	शोभ	नाग	06:53	05:30	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम

श्री विक्रम संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
(21 नवम्बर से 04 दिसम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	14:47	शुक्र	21	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष आरम्भ, रूद्रव्रत, भगवान पुष्प दन्त जन्म (जैन), मार्तण्ड भैरव षटरात्रोत्सव आरम्भ
2	17:11	शनि	22	चन्द्रदर्शन, राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मास आरम्भ
3	19:25	रवि	23	बुध तुला में 20:25 से, श्रीमत्स्वामी दयानन्द गिरी जी महाराज (कराला) का निर्वाण दिवस
4	21:22	सोम	24	विनायक चतुर्थी, गुरू तेग बहादुर शहीदी दिवस
5	22:57	मंगल	25	विवाह पंचमी(श्रीराम-जानकी) विवाह, नाग पंचमी(दक्षिण भारत)
6	24:02	बुध	26	चम्पा (स्कन्द-गुह्य) षष्ठी, मार्तण्ड भैरव उत्थापन, अन्नपूर्णा व्रत आरम्भ, श्री राम कलेवा, शुक्र वृश्चिक में 11:21 से, बुध पूर्व में उदय 30:01 से
7	24:30	गुरू	27	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जन्म, पंचक आरम्भ 14:07 से, नन्दा-भद्रा सप्तमी
8	24:15	शुक्र	28	दुर्गाष्टमी, शनि मार्गी 09:20 से,
9	23:15	शनि	29	बुध मार्गी 23:20 से, महानन्दा नवमी, जैन दिवाकर चौथमल पुण्य
10	21:29	रवि	30	
11	19:01	सोम	01 दिस.	मोक्षदा एकादशी व्रत (सबका), मौनी एकादशी, गीता जयन्ती
12	15:57	मंगल	02	भौम प्रदोष व्रत, अखण्ड-मत्स्य, व्यंजन द्वादशी
13	12:25	बुध	03	पिशाच मोचन श्राद्ध
14	08:38	गुरू	04	श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, श्री दत महाप्रभु-अन्नपूर्णा, त्रिपुर भैरव जयन्ती (लवण दान) पूर्णिमा तिथि क्षय

श्री सूर्य दक्षिणायने (दक्षिण गोले)
हेमन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
अनु	13:55	06	अति	बव	06:55	05:30	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	16:46	07	सुक	कौल	06:56	05:30	धनु (16:46)	उत्तर-पूर्व
मूल	19:27	08	धृति	गर	06:57	05:30	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	21:53	09	शूल	वणि	06:57	05:29	मकर (28:25)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	23:57	10	गण्ड	बव	06:58	05:29	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	25:32	11	वृद्धि	कौल	06:59	05:29	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	26:32	12	ध्रुव	गर	07:00	05:29	कुम्भ (14:07)	पश्चिम-दक्षिण
शत	26:49	13	व्या	विष्टि	07:00	05:29	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	26:22	14	हर्ष	बाल	07:01	05:29	मीन (20:33)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	25:10	15	वज्र	तैति	07:02	05:29	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	23:18	16	व्यति	वणि	07:03	05:29	मेष (23:18)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	20:51	17	वरि	बाल	07:03	05529	मेष	उत्तर-पूर्व
भरणी	17:56	18	परि	तैति	07:04	05:29	वृष (23:14)	दक्षिण-पूर्व
कृति	14:54	19	शिव	वणि	07:05	05:29	वृष	दक्षिण-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 पौष कृष्ण पक्ष
(05 दिसम्बर से 19 दिसम्बर तक सन् 2025 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	24:56	शुक्र	05	पौष कृष्ण पक्ष आरम्भ, रसिक माधुरी जयन्ती, वक्री गुरू मिथुन में 17:21 से
2	21:26	शनि	06	बुध वृश्चिक में 20:25 से
3	18:25	रवि	07	संकष्ट चतुर्थी, मंगल धनु में 20:15 से
4	16:03	सोम	08	
5	14:29	मंगल	09	
6	13:46	बुध	10	विश्व मानवाधिकार दिवस
7	13:57	गुरू	11	शुक्र अस्त 24:07 से, कालाष्टमी
8	14:57	शुक्र	12	जिन हरिसागर पुण्य (जैन)
9	16:37	शनि	13	
10	18:50	रवि	14	श्री पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)
11	21:20	सोम	15	सफला एकादशी व्रत (सबका), संक्रान्ति सूर्य धनु में 28:17 से, श्रीमत्स्वामी बालक पुरी जी महाराज (मण्डोर) का 66 वाँ निर्माण दिवस, कल्पवास आरम्भ (प्रयागराज), मलमास आरम्भ
12	23:57	मंगल	16	अन्नपूर्णा व्रत समाप्त, संक्रान्ति पुण्य काल, सूर्योदय से 12:30 तक, सुरूपद्वादशी
13	26:33	बुध	17	प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जन्म (जैन)
14	28:59	गुरू	18	मासिक शिवरात्रि, संत घीसा दास जयन्ती
30	31:13	शुक्र	19	देव-पितृ कार्य हेतु पौष अमावस्या, कालबा देवी यात्रा (मुम्बई)

श्री सूर्य दक्षिणायने (दक्षिण गोले)
हेमन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
रोहिणी	11:46	20	सिद्ध	बाल	07:06	05:29	मिथुन (22:15)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	08:47	21	शुभ	तैति	07:06	05:29	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	28:11	22	शुक्ल	वणि	07:07	05:29	कर्क (22:37)	उत्तर-पश्चिम
पुण्य	26:52	23	ब्रह्म	बाल	07:08	05:29	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	26:21	24	ऐन्द्र	तैति	07:08	05:30	सिंह (26:22)	उत्तर-पूर्व
मघा	26:43	25	वैधृ	वणि	07:09	05:30	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	27:55	26	विष्कु	बव	07:10	05:30	सिंह	उत्तर-पूर्व
उ.फा.	29:50	27	प्रीति	कौल	07:10	05:30	कन्या (10:20)	दक्षिण-पूर्व
हस्त	00:00	28	आयु	गर	07:11	05:31	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	08:18	29	सौभा	विष्टि	07:12	05:31	तुला (21:41)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	11:08	30	शोभ	बव	07:12	05:31	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	14:10	01	अति	कौल	07:13	05:32	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	17:11	02	सुक	गर	07:13	05:32	वृश्चिक(10:25)	उत्तर-पश्चिम
अनु	20:06	03	धृति	विष्टि	07:14	05:32	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	22:51	04	शूल	चतु	07:15	05:33	धनु (22:51)	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 पौष शुक्ल पक्ष
(20 दिसम्बर से 03 जनवरी तक सन् 2025-26 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	00:00	शनि	20	पौष शुक्ल पक्ष आरम्भ, शुक्र धनु में 07:43 से
1	09:11	रवि	21	सूर्य उत्तरायण-शिशिर ऋतु आरम्भ, चन्द्रदर्शन
2	10:52	सोम	22	राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ
3	12:13	मंगल	23	अंगारक विनायक चतुर्थी
4	13:11	बुध	24	पंचक आरम्भ 19:16 से
5	13:43	गुरू	25	पं मदन मोहन मालवीय जयन्ती, बड़ा दिन, तुलसी पूजन दिवस
6	13:42	शुक्र	26	अनुरूपा षष्ठी (बंगाल)
7	13:10	शनि	27	गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, उभय मार्तण्ड सप्तमी
8	11:59	रवि	28	शाकंभरी नवरात्र आरम्भ, दुर्गाष्टमी, बुध धनु में 31:23 से
9	10:12	सोम	29	पंचक समाप्त 07:40 पर, बुध पूर्व में अस्त 25:31 से
10	07:51	मंगल	30	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त), वैकुण्ठ एकादशी, शाम्भ दशमी (उडीसा)
12	25:48	बुध	31	पुत्रदा एकादशी (वैष्णव-निम्बार्क), एकादशी तिथिक्षय, ई0 सन् 2025 समाप्त
13	22:22	गुरू	01 जन.	प्रदोष व्रत, ईसवीं सन् 2026 आरम्भ
14	18:53	शुक्र	02	श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत
15	15:32	शनि	03	स्नान-दान हेतु, पौष पूर्णिमा, शाकाम्भरी जयन्ती , माघ स्नान आरम्भ

श्री सूर्य दक्षिण-उत्तरायणे (दक्षिण गोले)
हेमन्त-शिशिर ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
मूल	25:21	06	गण्ड	किंस्तु	07:15	05:33	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	27:36	07	वृद्धि	बव	07:16	05:34	धनु	उत्तर-पूर्व
उ.षा.	29:32	08	ध्रुव	कौल	07:16	05:34	मकर (10:06)	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	31:07	09	व्या	गर	07:17	05:35	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	00:00	10	हर्ष	विष्टि	07:17	05:35	कुम्भ (19:46)	पश्चिम-दक्षिण
धनि	08:18	11	वज्र	बाल	07:17	05:36	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत	09:00	12	सिद्धि	तैति	07:18	05:37	मीन (27:10)	उत्तर-पश्चिम
पू.भा.	09:09	13	व्यति	वणि	07:18	05:37	मीन	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	08:43	14	वरि	बव	07:19	05:38	मेष (07:40)	उत्तर-पूर्व
रेवति अश्वि	07:40 30:04	15	परि	कौल	07:19	05:38	मेष	उत्तर-पूर्व
भरणी	27:58	16	सिद्ध	गर	07:19	05:39	मेष	उत्तर-पूर्व
कृति	25:30	17	साध्य	बव	07:20	05:40	वृष (09:23)	दक्षिण-पूर्व
रोहि	22:48	18	शुभ	कौल	07:20	05:40	वृष	दक्षिण-पूर्व
मृग	20:03	19	शुक्ल	गर	07:20	05:41	मिथुन (19:25)	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	17:27	20	ब्रह्म	बव	07:20	05:42	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082 माघ कृष्ण पक्ष
(04 जनवरी से 18 जनवरी तक सन् 2026 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	12:30	रवि	04	माघ कृष्ण पक्ष आरम्भ
2	09:55	सोम	05	
3	08:02	मंगल	06	संकष्टी माघी तिल चतुर्थी व्रत, संकट हरण गणपति व्रत
5	30:34	बुध	07	चतुर्थी तिथि क्षय
6	31:05	गुरू	08	
7	00:00	शुक्र	09	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथि प्रमाण)
7	08:23	शनि	10	कालाष्टमी
8	10:20	रवि	11	
9	12:43	सोम	12	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तारीख प्रमाण), शुक्र मकर में 27:57 से
10	15:18	मंगल	13	लोहडी पर्व
11	17:53	बुध	14	षटतिला एकादशी व्रत (सबका), मकर संक्रान्ति सूर्य मकर में 15:05 से (पुण्य काल 15:05 से सूर्यास्त तक) गंगा सागर यात्रा व स्नान, पोंगल (दक्षिण भारत), धनु मल मास समाप्त
12	20:16	गुरू	15	तिल द्वादशी, मंगल मकर में 28:25 से, श्री शीतलनाथ जयन्ती (जैन)
13	22:22	शुक्र	16	प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि, मेरू त्रयोदशी (जैन), आदित्यनाथ पुण्य दिवस (जैन)
14	24:04	शनि	17	बुध मकर में 10:21 से
30	25:21	रवि	18	देव-पितृ कार्य हेतु माघी मौनी अमावस्या, मेला हरिद्वार व प्रयागराज

श्री सूर्य उत्तरायणे (दक्षिण गोले)
शिशिर ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पुन	15:11	21	वैधृ	कौल	07:21	05:42	कर्क (09:43)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	13:24	22	विष्कु	गर	07:21	05:43	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	12:17	23	प्रीति	विष्टि	07:21	05:44	सिंह (12:17)	पूर्व-उत्तर
मघा	11:56	24	आयु	कौल	07:21	05:45	सिंह	पूर्व-उत्तर
पू.फा.	12:24	25	सौभा	गर	07:21	05:45	कन्या (18:39)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	13:40	26	शोभ	विष्टि	07:21	05:46	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	15:39	27	अति	बव	07:21	05:47	तुला (28:52)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	18:12	28	सुक	कौल	07:21	05:48	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	21:05	29	घृति	गर	07:21	05:48	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	24:06	30	शूल	विष्टि	07:21	05:49	वृश्चिक(17:21)	उत्तर-पश्चिम
अनु	27:03	01	गण्ड	बाल	07:21	05:50	वृश्चिक	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	29:47	02	वृद्धि	तैति	07:21	05:51	धनु (26:47)	उत्तर-पूर्व
मूल	00:00	03	ध्रुव	गर	07:21	05:52	धनु	उत्तर-पूर्व
मूल	08:12	04	व्या	विष्टि	07:21	05:52	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	10:14	05	हर्ष	चतु	07:21	05:53	मकर (16:41)	दक्षिण-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 माघ शुक्ल पक्ष
(19 जनवरी से 01 फरवरी तक सन् 2026 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	26:14	सोम	19	माघ शुक्ल पक्ष आरम्भ, गुप्त नवरात्रि विधान आरम्भ
2	26:42	मंगल	20	चन्द्र दर्शन, पंचक आरम्भ 25:34 से, बाबा रामदेव बीज
3	26:47	बुध	21	गौरी तृतीया, राष्ट्रीय माघ मास आरम्भ
4	26:28	गुरू	22	वरद विनायक तिल (कुन्द) चतुर्थी, श्री राम जन्मभूमि (मन्दिर) प्राण प्रतिष्ठा दिवस
5	25:46	शुक्र	23	श्री वसन्त पंचमी (सरस्वती जन्मोत्सव पूजा), बागेश्वरी जयन्ती (काशी), नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती
6	24:40	शनि	24	शीतला षष्ठी (बंगाल), मंदार षष्ठी
7	23:10	रवि	25	अचला-रथ-आरोग्य सप्तमी (अरूणोदय स्नान), पंचक समाप्त 13:34 पर, माँ नर्मदा जन्मोत्सव
8	21:18	सोम	26	भीमाष्टमी, 77 वाँ भारतीय गणतंत्र दिवस, खोडियार माँ जयन्ती, दुर्गाष्टमी
9	19:05	मंगल	27	गुप्त नवरात्रि समाप्त, महानन्दा नवमी
10	16:35	बुध	28	गुप्त नवरात्रि पारण, मुनि अजीतनाथ जयन्ती (जैन)
11	13:55	गुरू	29	तिल-भीष्म द्वादशी, जया एकादशी व्रत (सबका)
12	11:19	शुक्र	30	प्रदोष व्रत, वराह द्वादशी
13	08:25	शनि	31	विश्वकर्मा एवं गुरू गोरखनाथ जयन्ती
15	27:38	रवि	01 फर.	श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, ललिता जयन्ती, 613 वीं गुरू रविदास जयन्ती, भैरवी जयन्ती, माघ स्नान समाप्त

श्री सूर्य उत्तरायणे (दक्षिण गोले)
शिशिर ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
उ.षा.	11:51	06	वज्र	किस्तु	07:21	05:54	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	13:05	07	सिद्धि	बाल	07:21	05:55	कुम्भ (25:35)	पश्चिम-दक्षिण
धनि	13:58	08	व्यति	तैति	07:20	05:56	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
शत	14:27	09	वरि	वणि	07:20	05:56	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	14:33	10	परि	बव	07:20	05:57	मीन (08:33)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	14:15	11	शिव	कौल	07:20	05:58	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेवती	13:35	12	सिद्ध	गर	07:19	05:59	मेष (13:55)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	12:32	13	साध्य	विष्टि	07:19	06:00	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	11:08	14	शुक्ल	बाल	07:19	06:00	वृष (16:44)	दक्षिण-पूर्व
कृति	09:26	15	ब्रह्म	गर	07:18	06:01	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	07:31	16	ऐन्द्र	विष्टि	07:18	06:02	मिथुन (18:30)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	29:29							
आर्द्रा	27:27	17	वैधृ	बाल	07:17	06:03	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
पुन	25:34	18	विष्कु	तैति	07:17	06:04	कर्क (20:01)	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	23:57	19	प्रीति	विष्टि	07:16	06:04	कर्क	उत्तर-पश्चिम

श्री विक्रम संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण पक्ष
(02 फरवरी से 17 फरवरी तक, सन् 2026 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	25:51	सोम	02	फाल्गुन कृष्ण पक्ष आरम्भ, शुक्र पश्चिम में उदय 30:07 से, ब्रज महोत्सव आरम्भ
2	24:41	मंगल	03	बुध कुम्भ में 21:50 से
3	24:09	बुध	04	मोढेश्वरी माता प्राकट्य (गुजरात)
4	22:22	गुरु	05	संकष्टी चतुर्थी, सिद्धि विनायक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव (मुम्बई), शुक्र कुम्भ में 25:09 से
5	25:18	शुक्र	06	
6	26:54	शनि	07	
7	29:01	रवि	08	श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथद्वारा), शबरी जयन्ती
8	00:00	सोम	09	सीताष्टमी (माँ जानकी जन्मोत्सव), कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
8	00:40	मंगल	10	
9	09:59	बुध	11	समर्थ रामदास नवमी
10	12:22	गुरू	12	संक्रान्ति सूर्य कुम्भ में 28:07 से, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती
11	14:25	शुक्र	13	विजया एकादशीव्रत (सबका), संक्रान्ति पुण्यकाल (सूर्योदय से 12:51 तक)
12	16:01	शनि	14	शनि प्रदोष व्रत
13	17:05	रवि	15	महाशिवरात्रि (रात्रि चार प्रहर पूजन - अभिषेक) निशीथकाल 24:15 से 25:06 तक
14	17:34	सोम	16	स्वामी दयानन्द बोधोत्सव, वासुपूज्य जन्म (जैन)
30	17:31	मंगल	17	देव-पितृ कार्य हेतु, भौमवती अमावस्या, शिव खप्पर पूजा, पंचक आरम्भ 09:05 से कंकणाकृति सूर्य ग्रहण (भारत में नही)

श्री सूर्य उत्तरायणे, (दक्षिण गोले)
शिशिर ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
आश्ले	22:47	20	सौभा	बाल	07:16	06:05	सिंह(22:47)	उत्तर-पूर्व
मघा	22:10	21	शोभ	तैति	07:15	06:06	सिंह	उत्तर-पूर्व
पू.फा.	22:11	22	अति	वणि	07:15	06:07	कन्या(28:19)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	22:56	23	सुक	बव	07:14	06:07	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	24:23	24	धृति	कौल	07:14	06:08	कन्या	दक्षिण-पूर्व
चित्रा	26:28	25	शूल	गर	07:13	06:09	तुला(13:21)	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	29:02	26	गण्ड	विष्टि	07:12	06:10	तुला	पश्चिम-दक्षिण
विशा	00:00	27	वृद्धि	बाल	07:12	06:10	वृश्चि.(25:11)	उत्तर-पश्चिम
विशा	07:55	28	ध्रुव	कौल	07:11	06:11	वृश्चि.	उत्तर-पश्चिम
अनु	10:52	29	व्या	गर	07:10	06:12	वृश्चि.	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	13:42	01	हर्ष	विष्टि	07:10	06:13	धनु(13:41)	उत्तर-पूर्व
मूल	16:11	02	वज्र	बाल	07:09	06:13	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	18:16	03	सिद्धि	तैति	07:08	06:14	मकर(24:41)	दक्षिण-पूर्व
उ.षा.	19:47	04	व्यति	वणि	07:07	06:15	मकर	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	20:46	05	वरि	शकु	07:07	06:15	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	21:16	06	परि	नाश	07:06	06:16	कुम्भ(09:05)	पश्चिम-दक्षिण

श्री विक्रम संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल पक्ष
(18 फरवरी से 03 मार्च तक, सन् 2026 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	16:57	बुध	18	चन्द्रदर्शन, वसन्त ऋतु आरम्भ, फाल्गुन शुक्ल पक्ष आरम्भ, श्रीमत्स्वामी ब्रह्मप्रकाश जी महाराज का नर्वाण दिवस
2	15:59	गुरु	19	फुलेरा दूज, रामकृष्ण परमहंस जयन्ती, छत्रपती शिवाजी जयन्ती (तारीख-प्रमाण), मेला खाटू श्याम जी आरम्भ
3	14:38	शुक्र	20	राष्ट्रीय फाल्गुन मास आरम्भ
4	13:01	शनि	21	विनायक चतुर्थी, पंचक समाप्त 19:07 पर, मनोरथ चतुर्थी
5	11:10	रवि	22	याज्ञवलक्य जयन्ती
6	09:09	सोम	23	मंगल कुम्भ में 11:47 से, विरक्त शिरोमणी श्रीमत्स्वामी वामदेवजी महाराज का निर्वाण दिवस
8	28:51	मंगल	24	होलाष्टक आरम्भ 07:02 से, दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णा अष्टमी, श्री दादूदयाल जयन्ती
9	26:41	बुध	25	लट्ठमार होली (बरसाना), आनन्दा नवमी
10	24:53	गुरु	26	बुध वक्री 12:27 से, फागु दशमी (उडीसा), नन्दगाँव होली
11	22:33	शुक्र	27	आमलकी एकादशी व्रत (सबका), रंगभरी ग्यारस, मेला खाटू श्याम जी समाप्त, बुध पश्चिम में अस्त 27:55 से
12	20:43	शनि	28	नृसिंह द्वादशी, गोविन्द द्वादशी, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
13	19:09	रवि	01	प्रदोष व्रत, शुक्र मीन में 24:55 से
14	17:56	सोम	02	श्री सत्यनारायण (पूर्णिमा) व्रत, होलिका दहन (प्रदोष काल में सायं 06:36 से 09:00 तक)
15	17:07	मंगल	03	धुलण्डी (वसन्तोत्सव) धुलिवन्दन, होलाष्टक समाप्त 17:07 पर, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती अष्टाह्निका विधान समाप्त (जैन), खग्रास चन्द्र ग्रहण (भारत में दृश्य) सूतक आरम्भ प्रात: 06:20 से।

श्री सूर्य उत्तरायणे, (दक्षिण गोले)
शिशिर-बसन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
शत	21:16	07	शिव	बव	07:05	06:17	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	20:21	08	सिद्ध	कौल	07:04	06:17	मीन(15:00)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा	20:07	09	साध्य	गर	07:03	06:18	मीन	उत्तर-पश्चिम
रेव	19:07	10	शुभ	विष्टि	07:02	06:19	मेष(19:07)	उत्तर-पूर्व
अश्वि	17:53	11	शुक्ल	बाल	07:01	06:19	मेष	उत्तर-पूर्व
भर	16:33	12	ब्रह्म	तैति	07:01	06:20	वृष(22:12)	दक्षिण-पूर्व
कृति	15:07	13	ऐन्द्र	वणि	07:00	06:21	वृष	दक्षिण-पूर्व
रोहि	13:38	14	विष्कु	बाल	06:59	06:21	मिथुन(24:53)	पश्चिम-दक्षिण
मृग	12:11	15	प्रीति	तैति	06:58	06:22	मिथुन	पश्चिम-दक्षिण
आर्द्रा	10:47	16	आयु	वणि	06:57	06:23	कर्क(27:51)	उत्तर-पश्चिम
पुन	09:35	17	सौभा	बव	06:56	06:23	कर्क	उत्तर-पश्चिम
पुष्य	08:34	18	शोभ	कौल	06:55	06:24	कर्क	उत्तर-पश्चिम
आश्ले	07:51	19	अति	वणि	06:54	06:24	सिंह(07:51)	उत्तर-पूर्व
मघा	07:31	20	सुक	बव	06:53	06:25	सिंह	उत्तर-पूर्व

श्री विक्रम संवत् 2082 चैत्र कृष्ण पक्ष
(04 मार्च से 19 मार्च तक, सन् 2026 ई0)

तिथि	घं.मि.	वार	अं.ता.	पर्वनाम (त्यौहार)
1	16:49	बुध	04	चैत्र कृष्ण पक्ष आरम्भ, बसन्तोत्सव, गणगौर पूजा आरम्भ।
2	17:04	गुरु	05	भाईदूज (होली), संत तुकाराम जयन्ती, यम द्वितीया
3	17:53	शुक्र	06	संकष्ट चतुर्थी, क्षत्रपति शिवाजी जयन्ती (तिथि प्रमाण)
4	19:17	शनि	07	
5	21:11	रवि	08	रंग पंचमी
6	23:27	सोम	09	श्री एकनाथ षष्ठी
7	25:54	मंगल	10	शीतला सप्तमी
8	28:19	बुध	11	शीतलाष्टमी (बासोडा), कालाष्टमी, ऋषभदेव जयन्ती (जैन), गुरु मार्गी 09:00 से
9	30:29	गुरु	12	भगवान आदिनाथ जयन्ती (जैन)
10	00:00	शुक्र	13	दशामाता व्रत
10	08:11	शनि	14	संक्रान्ति सूर्यमीन में 25:01 से, मीन मलमास आरम्भ, बुध पूर्व में उदय 12:39 पर
11	09:16	रवि	15	पापमोचिनी एकादशीव्रत (सबका), मीन संक्रान्ति पुण्यकाल (सूर्योदय से 12:41तक)
12	09:41	सोम	16	सोम प्रदोष व्रत, पंचक आरम्भ 18:14 से, मेला कैला देवी आरम्भ,
13	09:23	मंगल	17	मासिक शिवरात्रि
14	08:25	बुध	18	पित कार्य हेतु चैत्र अमावस्या, मेला पैहोवा तीर्थ (हरियाणा)
30	06:53	गुरू	19	देव कार्य हेतु, चैत्र अमावस्या, वि0 सं0 2082 पूर्ण प्रतिपदा तिथि क्षय, चैत्र नवरात्रि आरम्भ (घट स्थापना), ध्वजारोहण, गुडी पडवा, अभ्यंगस्नान, वि. संवत 2083 आरम्भ

श्री सूर्य उत्तरायणे, (दक्षिण गोले)
बसन्त ऋतु

नक्षत्र	घं.मि.	गते	योग	करण	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्र राशि	यात्रा शुभ दिशा
पू.फा.	07:36	21	धृति	कौल	06:52	06:26	कन्या (13:45)	दक्षिण-पूर्व
उ.फा.	08:17	22	शूल	गर	06:51	06:26	कन्या	दक्षिण-पूर्व
हस्त	09:29	23	गण्ड	विष्टि	06:50	06:27	तुला (22:16)	पश्चिम-दक्षिण
चित्रा	11:15	24	वृद्धि	बाल	06:49	06:27	तुला	पश्चिम-दक्षिण
स्वा	13:31	25	ध्रुव	कौल	06:48	06:28	तुला (22:16)	पश्चिम-दक्षिण
विशा	16:11	26	व्या	गर	06:47	06:28	वृश्चि. (09:29)	उत्तर-पश्चिम
अनु	19:05	27	हर्ष	विष्टि	06:46	06:29	वृश्चि.	उत्तर-पश्चिम
ज्ये	22:00	28	वज्र	बाल	06:45	06:29	धनु (22:00)	उत्तर-पूर्व
मूल	24:43	29	सिद्धि	तैति	06:44	06:30	धनु	उत्तर-पूर्व
पू.षा.	27:03	30	व्यति	वणि	06:43	06:30	धनु	उत्तर-पूर्व
उ.षा.	28:49	01	वरि	विष्टि	06:42	06:31	मकर (09:33)	दक्षिण-पूर्व
श्रवण	29:56	02	परि	बाल	06:40	06:32	मकर	दक्षिण-पूर्व
धनि	30:21	03	शिव	तैति	06:39	06:32	कुम्भ (18:24)	पश्चिम-दक्षिण
शत	30:09	04	सिद्ध	वणि	06:38	06:33	कुम्भ	पश्चिम-दक्षिण
पू.भा.	29:21	05	शुभ	शकु	06:37	06:33	मीन (23:30)	उत्तर-पश्चिम
उ.भा.	28:03	06	शुक्ल	नाग	06:36	06:34	मीन	उत्तर-पश्चिम

श्रीशिव–पञ्चाक्षर स्तोत्र

(श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित)

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।।1।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथानाथमहश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुसूजिताय तस्मै–'म' काराय नम शिवाय ।।2।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृष्मध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।।3।।

वशिष्ठ –कुम्भोद्भव–गौतमार्य –मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै–'व' काराय नमः शिवाय।।4।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।।5।।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं चः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।। 6।।

षोडश संस्कार

संस्कार शब्द में सम् उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से होता है। पाणिनि के **"सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे"** सूत्र से अलंकार अर्थ में सुडागम होता है। इसके अनुसार भी संस्कार शब्द का अर्थ है। जिससे शरीरादि सुभूषित हो, उन्हे संस्कार कहते है।

मानव जीवन की उन्नति में संस्कारों का विशिष्ट महत्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त भिन्न–भिन्न समय पर संस्कारों की व्यवस्था हमारे ऋषि–मुनियों ने वैदिक प्रक्रिया से सुव्यवस्थित की है। **"गर्भाद्या मृत्युपर्यनताः संस्काराः षोडशैव हि।"** अर्थात् गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त् सोलह संस्कार होते हैं। जो कि निम्नलिखित है।

'गर्भाधान पुंसवनं, सीमन्तो जातकर्म च।

नामक्रिया निष्क्रमणोऽन्नाशनं वपनक्रिया।।

कर्णवेद्यो व्रतादेशो, वेदारम्भक्रिया–विधिः।

केशान्तःस्नामुद्वाहोविवाहाग्नि परिग्रहः ।

चेताग्निसंग्रहश्चेति, संस्काराः षोडशस्मृताः।।

1.गर्भाधान संस्कार– गर्भ का धारण वीर्य की स्थापना जिस क्रिया से होती है उसे गर्भाधान संस्कार कहते हैं। विवाह के बाद सन्तान प्राप्ति के लिए इस संस्कार का विधान है। स्त्री के ऋतु काल के चौथे दिन यह गर्भाधान संस्कार नियमानुसार किया जाता है।

2. पुंसवन संस्कार–पुत्र प्राप्ति हेतु यह संस्कार गर्भाधान संस्कार के दूसरे अथवा तीसरे महीने में किया जाता है। इस संस्कार के समय गार्भिणी स्त्री को वट वृक्ष का दूध सुँघाया जाता है तथा गिलोय, ब्राह्मी और सोंठ को दूध के साथ थोड़ा–थोड़ा नित्य खिलाया जाता है।

3. सीमन्तोन्नयन संस्कार– यह संस्कार गर्भाधान के उपरान्त छठे या आठवें महीने में किया जाता है। इसमें पति अपने हाथ से पत्नी के केशों में तेल डालकर कंधे से काढ़कर गूलर या अर्जुन की शलाका या स्याही के कांटे से पत्नी के बालों को संवारता है।

4. जातकर्म संस्कार– यह संस्कार बालक के जन्म लेने के पश्चात् उसकी रक्षा के लिए किया जाता है। इस संस्कार में बालक को स्वर्ण–शलाका से मधु (शहद) चटाने से उसकी स्मृति–शक्ति तीव्र होती है।

5. नामकरण संस्कार–''नामधेयंदशम्यां तु द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत्'' जन्म के दसवें अथवा बारहवें दिन बालक का नामकरण संस्कार किया जाता है।

6. निष्क्रमण संस्कार– यह संस्कार बालक के जन्म से चौथे महीने में होता है। इसमें बच्चे को सूतिका गृह से बाहर निकाला जाता है। शास्त्र–विधि से बालक को सूर्य–चन्द्रावलोकन कराया जाता है।

7. अन्नप्राशन संस्कार–''षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मंगलं कुले' यह संस्कार जन्म से छठे महीने के बाद कराया जाता हैं बालक ने जो माता के गर्भ में मलीनता–भक्षण की है, उसकी शुद्धि के लिए यह संस्कार किया जाता है।

8. चूड़ाकर्म संस्कार– यह संस्कार बालक के जन्म से तीसरे अथवा पांचवे वर्ष में कराया जाता है। इस संस्कार में बच्चे के बाल काटे जाते है और शिखा (चोटी) रखी जाती है।

9. कर्णवेध संस्कार– शास्त्रोक्त शुभ मुहूर्त में कर्णवेध (कान छेदन) संस्कार किया जाता है।

10. उपनयन संस्कार– इस संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार भी कहा जाता है।

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत् ब्राह्मणस्योपनपनम् ।

गर्भादेकादेश राज्ञो गर्भातु द्वादशे विंश ।।

ब्राह्मण बालक को यज्ञोपवीत गर्भ से आठवें वर्ष, क्षत्रिय बालक का ग्यारहवें तथा वैश्यबालक का बारहवें वर्ष में (यज्ञोपवीत) उपनयन संस्कार किया जाता है।

11. वेदारम्भ संस्कार – आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसे विद्यारम्भ संस्कार भी कह सकते हैं। शास्त्रोक्त विधि से गुरू के सानिध्य में वेदाध्ययन आरम्भ किया जाता है।

12. समावर्तन संस्कार– यह संस्कार बालक की शिक्षा समाप्त होने पर किया जाता है।

13.विवाह संस्कार–गृहस्थाश्रम प्रवेश हेतु यह संस्कारकिया जाता है। वर–कन्या शास्त्रोक्त विभिन्न –विधियों को सम्पादन कराके गृहस्थ धर्म का पालन करने के लिए ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करते है।

14.वानप्रस्थाश्रम संस्कार– पचास वर्ष की आयु के उपरान्त आत्मकल्याण के लिए ग्रहस्थ से वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करके वेदाभ्यास, ईश्वर–चिन्तन करना चाहिए।

15.संन्यास संस्कार– ''वनेषु च विहत्वैवं तृतीयं भागमायुषः।

चतुर्थमायुषो भागं त्यक्तवा संगान् परिव्रजेत।।

अपनी अवस्था के तीसरे भाग को वानप्रस्थाश्रम में बिताकर अवस्था के चौथे भाग लगभग 75 वर्ष की आयु में संसारिक मोह माया त्याग कर आत्मोत्थान एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए संन्यासाश्रम प्रवेश किया जाता है।

16.अन्त्येष्टि संस्कार–यह अन्तिम संस्कार है। शरीर त्यागने के बाद सम्बन्धीजनों द्वारा दाहादि संस्कार किया जाता है। आज के भौतिकवादी जीवन में लोग पाश्चात्य संस्कृति से कुण्ठित होते जा रहे हैं तथा अपने संस्कृति एवं संस्कारों की उपेक्षा करके अनेक विकृतियों से ग्रसित हो रहे है। अतः मानव जीवन को सुसंस्कृत और परिमार्जित करने के लिए संस्कारो की अत्यधिक आवश्यकता है।

ॐ **सन्ध्या प्रकरण** 卐

सन्ध्या न करने से दोष

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृत:श्वा चाभिजायते।

जिसने सन्ध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने सन्ध्या उपासना नही की वह (द्विज) जीवित रहते शूद्र सम रहता है, और मृत्यु के बाद श्वान आदि की योनि प्राप्त होता है।

प्रातः शयन के उपरान्त आँखों के खुलते ही दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुए निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें।

कराग्रे वस्ते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तू गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्

यज्ञोपवीत धारण मन्त्रः

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्ममग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्रः

एतावद्दिनपर्यनतं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छसूत्र यथा सुखम्।।

ॐ अथ सन्ध्योपासना विधि 卐

आचमन करें –	**ॐ केशवाय नमः** **ॐ नारायण नमः** **ॐ माधवाय नमः**
हस्त प्रक्षालन करे :	**हृषीकेशाय नमः**
विनियोग मन्त्र :	**ॐ अपवित्र : पवित्रोवेत्यस्यवामदेव ऋषिःविष्णुदेवता गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।**
मार्जन करें :	**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।** **यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि।।**
आसनशुद्धि का विनियोग :	**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिःसुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।**
मन्त्रः	**ऊँ पृथ्वी। त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।** **त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरू चासनम्।।**

सन्ध्या का संकल्पः

श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुनमः परमात्मने तत्सत् श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लो के जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे–क्षेत्रे/ग्रामे बौद्धावतारे याम्या/सोम्यायने,विक्रमशके षष्ठिसंवत्सराणां मध्ये.............संवत्सरे...............ऋतौ..... ....मासे..................पक्षे.......................तिथौ प्रातः/सायंकाले .... गोत्रः शर्मा, वर्मा, गुप्तो व अहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वक श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

आचनमन विनियोगः

ॐऋतं चेति माधुच्छन्दसोऽधर्मषणऋषिरनुष्टुप् छन्दो
भावृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन करें –

ॐ ऋतं चं सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत:। ततो रात्र्यजायत। तत: समुद्रो अर्णव: समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसो धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्व:।

प्राणायाम का विनियोग –

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिदैवी गायत्री छन्द: अग्नि: परमात्मा देवता, शुक्लो वर्ण: सर्वकर्मारम्भे विनियोग:।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवशिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्वृहतीपङि्क्तत्रिश्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरूणेन्द्र विष्णवो देवता अनादिष्टप्रायष्चिते प्राणायामे विनियोग:।

ॐ तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द: सविता देवता प्राणायामे विनियोग:

ॐ आपो ज्योतिरिरिति शिरस: प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता: प्राणायामेविनियोग:

प्राणायाम के मन्त्र :–

ॐ भू: ॐभुव: ॐस्व: ॐमह: ॐजन: ॐतप:
ॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योन: प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूभूर्व:स्वरोम्।

प्राणायाम के बाद आचमन:–

(प्रात:काल का विनियोग एवं मन्त्र)

ॐ सूर्यश्च मेति नारायण ऋषि: अनुष्टुप्छन्द: सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग:
ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्य: पापेभ्यो
रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्ष मनषा वाचा हस्ताभ्यां।

पदभ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तद्वलुम्पतु यत्किञ्च दुरितं

मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

सायं सन्ध्या के विनियोगः एवं आचमन

ॐ अग्निश्च मेति रूद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐअग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पांपकार्ष मनषा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयौनो सत्ये ज्योतिष जुहोमि स्वाहा।

मार्जन : बायें हाथ में जल लेकर कुशा से या दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों से 1 से 7 तक मन्त्रों को बोलकर सिर पर जल छिड़कें। 8 वें मन्त्र से पृथ्वी पर तथा 9 वें से पुनः सिर पर जल छिड़कें।

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृस्यस ऋषिर्गायंत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

1. ॐ आपोहिष्ठा मयोभुव

2. ॐ ता न ऊर्जे दधातन ।

3. ॐ महेरणायचक्षसे

4. ॐ या वः शिवतमो रसः ।

5. ॐ तस्य भाजयतेहनः

6. ॐ उशतीरिव मातरः।

7. ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः।

8. ॐ यस्य क्षयायजिन्वथ।

9 ॐ आपोजनयथा च नः ।

मस्तक पर जल छिड़कने के विनियोग और मन्त्र –

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्ट्प् छन्दः आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।

पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

अघमर्षण और आचमन के विनियोग और मन्त्रः

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्ट्प छन्दो

भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत।

ततःसमुद्रो अर्णवः। समद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

पुनः निम्नलिखित विनियोग करें :

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्ट्प् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन करें :

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योति रसोऽमृतम् ।।

सूर्यार्घ्य का विनियोगः

सूर्य को अर्घ्य देने के पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों से विनियोग करें –

(क) ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अर्ध्यदाने विनियोगः।

(ख) ॐ भूर्भवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि
गायत्र्युष्णिगनुष्टु भश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्यादेवताः अर्ध्यदाने विनयोगः।

(ग) ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने
विनियोगः।

इस प्रकार विनियोग करके नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर अर्ध्य देवें :

ॐ भूभुर्वःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।

प्रातः को ''ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः''
कहकर एवं सायं को ''रूद्रस्वरूपिणे सूर्यनारायण नमः''कहकर अर्घ्य दें।

सूर्योपस्थान प्रयोग विधिः

सूर्य के उपस्थान के लिए प्रथम निम्नलिखित विनियोंगो को पढ़े, तत्पश्चात् प्रातः को पूर्वाभिमुख खड़े होकर, दोनों हथेलियों को स्वस्तिकाकार करें तथा मन्त्र पढ़े तथा सांय को पश्चिम मुख बैठकर ही हाथ जोड़कर मन्त्रों को पढ़ते हुए सूर्योपस्थान करें।

सूर्योपस्थान का विनियोगः

(क) उद्वमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप छन्दः सूर्या देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः

(ख) उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्रीछन्दंः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोग :।

(ग) चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

(घ) तच्चक्षुरित्यस्य दध्यड़थर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर –
उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

सूर्योपस्थान के मन्त्रः

(क) ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम्।

(ख) ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्तिकेतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्।

(ग) ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षसूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।

(घ) ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं
श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवामः शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्चशरदः शतात् ।

षडङ्गन्यास :

(1) ॐ हृदयाय नमः (2) ॐ भूः शिरसे स्वाहा (3) ॐ भुवः शिखायै वषट् (4) ॐ स्वः कवचाय हुम् (5) ॐ भूर्भुवः स्वःनेत्रभ्यां वौषट् (6) ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

प्रातः काल ब्रह्मरूपा गायत्री माता का ध्यान :

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् ।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा।,
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्।
ब्रह्माणी ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।।
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।

सायंकाल शिवरूपा गायत्री माता का ध्यानः

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

गायत्री का आवाहन एवं विनियोगः

तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

मन्त्रः

ॐ तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि

गायत्री देवी के उपस्थान के विनियोग और मन्त्र

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराणमहापङ्क्तिश्छन्दः
परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।
ॐ गायत्र्यस्यएकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि।
न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय
परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ।

गायत्री - शापविमोचन

1. ब्रह्म-शापविमोचन - विनियोग- ॐ अस्य श्री ब्रह्म शापविमोचन मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिर्भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमाचने विनियोगः।

मन्त्र -

ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।

तां पश्यनित धीराः सुमनसो वा चमग्रतः।।

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्

ॐ देवि! गायत्री ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।

2. वसिष्ठ शापविमोचन-विनयोग-ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचन-मन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋर्षिवसिष्ठानुग्रहिता गायत्री शक्ति देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थ जपे विनियोगः।

मन्त्र-

ॐ सोऽहमर्कमय ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।

आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्।।

योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपे।

ॐ देवि! गायत्रि! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

3. विश्वामित्र-शापविमोचन-विनियोग-ॐ अस्य श्री विश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिदेवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमौचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र-

गायत्री भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भा यदुद्भवाः।

देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये।

ॐ देवि! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।

4. शुक्र-शापविमोचन -विनियोग - ॐ अस्य श्री शुक्रशापविमोचन मन्त्रस्य श्री शुक्रऋषिः अनुष्टुपछन्द देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थ जपे विनियोगः।

मन्त्र-

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहंशिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योति रसोस्म्यहम
ॐ देवि! गायत्रि ! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

प्रार्थना :

ॐ अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोर्निनमोस्तु ते।।

ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

गायत्री जपके पूर्वकी चौबीस मुद्राएँ

समुखं सम्पुंट चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुंख त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा।।
षणमुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम।।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।

गायत्री – मन्त्र का विनियोग

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यो देवता, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

इसके बाद यथाशक्ति गायत्री मन्त्र का जाप करें।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

जप के बाद की आठ मुद्राएं

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शङ्खोऽथ पंकजम्।
लिङ्गनिर्वाणमुद्राश्च जपान्ते ऽष्टौ प्रदर्शयेत् ।

गायत्री तर्पण (केवल प्रातः संध्या में करें)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सवितादेवता
गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः।

ॐ भूः ऋग्वेदपुरूषं तर्पयामि। ॐ भूवः यजुर्वेदपुरूषं त.। ॐ स्वः सामवेदपुरूषं त. । ॐ महः अथर्ववेदपुरूषं त.। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरूषं त.। ॐ तपः सर्वागम पुरूषं त.। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरूषं त.। ॐ भूः भूर्लोकपुरूषं त.। ॐ भुवः भुवलोकपुरूषं त.। ॐ स्व. स्वर्लोकपुरूषं त.।

ॐ भूः एकपदांगायत्रीं त.। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त.।
ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त.। ॐ भूभुर्वः स्व चतुष्पदां त.।
ॐ उषसी त.। ॐ गायत्री त.। ॐ सावित्री त.। ॐ सरस्वती त.।
ॐ वेदमातरं त.। ॐ पृथिवीं त.। ॐ अजां त.।
ॐ कोशिकीं त.। ॐ साकृतिं त.। ॐ सार्वजितीं त.।
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पण कर्म कृत्वा त्रिर्विष्णु स्मरेत् ।

भगवान को जप का अर्पण करे :

अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान नारायणः प्रीयतां न मम।

गायत्री देवी का विसर्जन विनियोग एवं मन्त्रः

उत्तम शिखरे इत्यस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुपछन्दः गायत्री देवता। गायत्री विसर्जने विनियोगः

गायत्री विसर्जन मन्त्र

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छदेवि । गच्छदेवि! यथा सुखम।।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर सन्ध्योपासन कर्म को भगवान को समर्पित करे।

अनेन सन्ध्यापोसनाख्येन कर्मणा भी परमेश्वरः प्रीयतां न मम।
।। इति संक्षिप्तसंन्धयोपासन विधिः सम्पूर्णाः।।

तर्पण विधि

ब्रह्मादि देवताओं एवं पितृगणों का तर्पण न करने वाले मनुष्य के शरीर का रक्त पिशाच पीते है। जो व्यक्ति तर्पण नहीं करते हैं ,उनके पाप के कारण उनके शरीर का रक्त क्षीण होता है।

(1) कर्ता पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आचमन करे और दो कुशाओं की पवित्री दाहिनी व तीन कुशाओं की पवित्री बायें हाथ की अनामिका जड़ में धारण करें। इसके उपरान्त तीन कुशाओं को सीधी लम्बी कुशाओं का अग्रभाग पूर्व में रखते हुए हाथ में त्रिकुश यव, अक्षत, जलादि लेकर निम्न संकल्प का उच्चारण करें । (2) देशकालौ संकृत्य अमुकगोत्र : (अमुकशर्मा-अमुकवर्मा-अमुकगुप्तोऽहम्) ममोपात्त दुरितक्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ देवर्षि-मनुष्य यम, पितृर्णमहंकरिष्ये।

उपरोक्त संकल्प को पढ़ कर जलादि को किसी पात्र मे छोड़ देवे। पुनः ताम्र व रजत के पात्र में श्वेत चन्दन, अक्षत-सुगन्धित पुष्प व तुलसीदल रखें। पुनः उस पात्र के ऊपर एक हाथ व प्रादेशमात्र लम्बी तीन कुशा रखे। जिनका अग्रभाग पूर्व की ओर रहे इसके पश्चात् उस पात्र में तर्पण के लिये शुद्ध जल भरे फिर उसमें रखे हुए तीनों कुशाओं को तुलसी के साथ सम्पुटाकार दाहिने हाथ में लेकर बाये हाथ से उसे ढक ले और निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए देवताओ का आवाहन करें।

ॐ विश्वे देवासऽआगत श्रृणुता म इमठं हवम्। एदं ब्रर्हिर्निषीदत्त

(शु.यं.सं.अ. 7 मं. स. 34)

पुन ॐ विश्वदेवाः श्रृणुते मर्ठ हवं मे ये ऽ अन्तरिक्षेय ऽ उपद्यविष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उतत्राआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्।
अगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः। ये तर्पणऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते।

देव तर्पण

पूर्वाभिमुख हो देवतीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं के निमित्त पूर्वोक्त पात्र में से एक-एक अंजलि अक्षत मिला हुआ जल लेकर दूसरे पात्र में छोड़े तथा निम्नाकित उन देवताओं के नाम मंत्र का उच्चारण करते रहे।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् । ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रूद्रस्तृप्यताम्।
ॐ प्रजापतिस्तप्यताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् । ॐ छन्दांसि् तृप्यताम्।
ॐ देवासतृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्यतृप्यन्ताम्। ॐ पुराणांचार्यस्तृ.। ॐ संवत्सरसावर तृ.।
ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्।
ॐ नागास्तृप्यन्ताम् । ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् । ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यताम्।
ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुवर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानितृप्यन्ताम्। ॐ पशस्तृप्यन्ताम्।
ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

ऋषि तर्पण

देवतर्पण के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र वाक्यों का उच्चारण कर मरीचि आदि ऋषियों को एक-एक अंजलि जल प्रदान करें। ॐ मरीचिस्तृप्याताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अंगिरास्तृप्यस्ताम्। ॐ पुलस्तयतप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यन्ताम्।
ॐ क्रतस्तृप्यन्ताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् । ॐ प्रचेतास्तृप्यन्ताम् ।
ॐ भृगुस्तृप्याताम् । ॐ नारदस्यतृप्यताम्।
ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् । ॐ पुराणार्चास्तृप्यन्ताम् । ॐ गन्धर्वोस्तृप्यन्ताम् ।
ॐ संवत्सरसावयवस्तृप्यताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् ।

दिव्य मनुष्य तर्पण

अब नवीत (जो व्यक्ति अपने गले में यज्ञोपवीत की माला की भांति धारण करते हैं) होकर कुशाओं को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मध्यभाग में रखकर प्राजापत्य तीर्थ से प्रत्येक को उत्तराभिमुख होकर दो-दो अंजलि यव सहित जल देवें।

ॐ सनकस्तृप्याताम्। ॐ सनन्दस्तृप्यताम् । ॐ सनातनतृप्यताम्।

ॐ कपिलस्ततृप्यताम् । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् । ॐ वोढुस्तृप्यताम्।

ॐ पंचशिखस्तृप्यताम्।

दिव्य पितृ तर्पण

तदन्तर (दक्षिण के तरफ अग्र और मूल) कुशाओं से दाहिने हाथ के अँगूठे और तर्जनी के मध्य में धारण कर दक्षिणाभिमुख हो अपसव्य से वाम घुटना मोड़कर पितृतीर्थ से काले तिल मिले हुए जल द्वारा तीन-तीन अंजलि देवें।

ॐ कव्यवाडनलनस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधानमः (3) ॐ अर्यमातृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधानमः (3) ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वाधानमः (3) ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वाधानमः (3) ॐ अग्निष्वात्ता: पित्तरस्यतृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधानमः (3) ॐ सोमपा: पितरहस्पतृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधानमः (3) ॐ वर्हिदषदः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधानमः (3)

यम तर्पण

निम्न नाम मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए यमराज को पितृ तीर्थ से दक्षिण दिशा की ओर मुख करके कर्ता तीन-तीन अंजलि तिल युक्त जल देवें।

ॐ यमाय नमः ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवेनमः । ॐ अन्तकायनमः। ॐ कालाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ सर्वभूत क्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः ॐ दध्नायनमः ॐ नीलायनमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः ॐ चित्रगुप्ताय नमः।

मनुष्य पितृ तर्पण

माता पिता से युक्त व्यक्ति यह तर्पण करें।

हाथ जोड़कर नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण कर अपने सम्पूर्ण पित्तरो का आवाहन करें -

ॐ उशन्तस्तस्त्वानिधिमह्युशन्तः समिधीमहि।

उशन्नुशत आ व पितृन् हविषे अत्तवे।

निम्नलिखित वाक्यों का उच्चारण कर मनुष्य तीन-तीन अंजलि तिल युक्त जल प्रदान करें -

ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्रः अस्मत् पितामहः (दादा) अमुख (शर्मा -वर्मा-गुप्ता) रूद्रस्वरूपः तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानम्ः।। इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें।

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अस्मत् पिता अमुक (शर्मा -वर्मा-गुप्ता) वसुस्वरूपः तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानमः। इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें।

ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामह (परदादा) अमुक (शर्मा-वर्मा-गुप्ता) आदित्यरूपः तृप्यतामिदंजलं तस्मै स्वधा नमः।। इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें। ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रा अस्मत्माता वसुरूपा (माता) अमुदेवी (शर्मा-वर्मा-गुप्ता) तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः।। इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें। ॐ तत्सदद्य अमुख गोत्रा अस्मत् पितामही (दादी) अमुक

देवी रूद्र रूपा तृप्यताम् इद्र जलं तस्यै स्वधा नमः (3)

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकदेवी-आदित्यरूपा तृप्यतामिंद जलं तस्यै स्वधा नमः इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें।

तदुपरान्त पितृतीर्थ से धारा रूप जल गिराते हुये निम्नलिखित वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः सोम्यासः।
असुंय-ईयूरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।9।।

ॐ अंगिरसोनः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषाँ वयर्ठ सुमतौ यज्ञियानामपित भद्रेसौमनसे स्याम।।2।।

ॐ आयुन्तुनः पितरः सोम्यासाऽग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवस्मान् ।3।।। ॐ ऊंर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम। स्वधास्य -तप्ययतमेपितृन ।।4।।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः।। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः।। प्रतितामहेभयः स्वधायिभयः स्वधा नमः।।
अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।।4।।

ॐ येचेह पितरो येनहे याँश्च विद्मयाँऽउच न प्रदिम त्वं-वेत्थ याति जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञई.सुकृतं जुषस्व।।3।। मधुव्वाता ऋतायतेमधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।7।।

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ रजः ।। मधु द्यौरस्तुन। पिता

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ।। 2।। अस्तुसूर्य:।। माध्वीर्गावोभवन्तु न: ।।9।।
ॐ मधु मधु मधु। तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् ।। निम्न मंत्र का उच्चारण करें-
ॐ नमों व: पितरो रसाय नमो व: पित्तर: शोषाय नमो व: पितरो जीवाय नमो व: पितर: स्वधायै नमो व: पितरो घोराये नमो व: पितरो मन्यवे नमो व: पितर:पितरो नमो व: पितरो देष्मैतद्व : पितरो वास आधत।

द्वितीय गोत्र दर्पण

अपने ननिहाल पक्ष के नाना आदि का तर्पण तिलयुक्त जल से कर्ता पितृतीर्थ से तीन-तीन अंजलि देवें।

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्र: अस्मन्मातामह: (नाना) अमुक (शर्मा-वर्मा-गुप्ता) वसुरूप स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानम:।।

इस वाक्य को तीन बार उच्चारण करें:-

ॐ तत्सद्य: अमुकगोत्र: अस्मत्प्रमातामह: (परनाना) अमुक (शर्मा-वर्मा-गुप्ता) रूद्ररूप: तृप्यतामिदं जल तस्मै स्वधानम:। इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें।

ॐ तत्सदद्य अमुगोत्र: अस्मदवृद्धमातामह: (वृद्धपरनाना) अमुक (शर्मा-वर्मा-गुप्ता) आदित्य रूप: तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नम:।।

इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें:-

तत्सदद्य अमुकगोत्रा अस्मनमातामाही (नानी) अमुकदेवी दा वसुरूपा तृत्पतामिदं जलं तस्यैस्वधा नम:।।

इस वाक्य का तीन बार उच्चारण करें:-

ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्र अस्मत्वृद्धप्रमातामही (वृद्ध-परनानी) अमुकदेवी दा आदित्यरूपातृप्यतामिदं जलंतस्यैवधानम: इस वाक्य का तीन बान उच्चारण करें।। तदुपरांत निम्नोक्त श्लोक पढ़ते हुए पितृ तीर्थ से जल गिरायें।

नरकेषु समस्तेषु यातानासुचये स्थिता:

तेषामाप्या यनायैतद्दीयते सलिलं जलम्।।

वस्त्र निष्पीडन – इस प्रकार सब पितरों का तर्पण हो जाने के बाद अंगोछे की चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर निचोड़े–

ये के चास्मतृकुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृता:

ते गृह्णन्तु मयां दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ।

भीष्मतर्पण – इसके बाद भीष्म पितामह को पितृ तीर्थ और कुशों से नीचे लिखा मन्त्र पढकर जल दें–

भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:।

अभिरद्भि रवाप्नोत पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ।।

सूर्यार्घ्य दान– इसके बाद पात्र को जल तथा मिट्टी से स्वच्छ कर लें। तदन्तर सव्य होकर अर्थात् जनेऊ को बाये कंधे पर रखकर, अर्घ्य में फूल, चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से सूर्य का अर्ध्य दें –

नमो विवस्ते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णु तेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें –

समर्पण–निम्नांकित वाक्य पढ़कर यह तर्पण कर्म भगवान को समर्पण करें–

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्य पितृ तर्पणाख्येन कर्मणा

भगवान पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेव: प्रीयताम् न मम।।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

।। अथ व्रत विचार।।

क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
देव पूजाग्नि हवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम्।
सर्व व्रतेष्वयं धर्मः सामान्यो दशधा स्मृतः।

व्रतियों के लिए सामान्यतः दस धर्म कहे गये है। क्षमा, सत्य,दया,दान,शौच,इन्द्रिय निग्रह, देव पूजा अग्नि में हवन, सन्तोष और चोरी का त्याग करना चाहिए।

प्रातः स्नान आचमन कर भोजन किये बिना सूर्य आदि देवताओं को निवेदन कर व्रत को प्रारम्भ करन चाहिए।

।। व्रतारम्भ में तिथि निर्णय ।।

उदयस्था योहि न भवेद् दिन मध्यभाक

सा खण्डा न प्रतानां स्यादारम्भश्च समापनम्।

जो उदयस्थ तिथि दिन के मध्य भाग में न हो, उस तिथि को खण्डा तिथि कहते हैं। अतः उसमें व्रतारम्भ एवं समापन न करें।

।। व्रत उद्यापन विचार।।

।। कुर्यादुद्यापने तस्य समाप्तौ यदीरितम् ।।

व्रत समाप्ति पर जो उद्यापन कहा गया है उस उद्यापन को करें। क्योंकि उद्यापन के बिना व्रत निष्फल हो जाता है। यदि व्रतोद्यापन न कहा हो तो व्रतानुकुल जप आदि करें तथा सामार्थ्यानुसार दान दें। व्रत की परिपूर्णता के लिए गौ तथा सुर्वण का दान करें।

।। प्रतिनिधि विचार।।

भर्ता पुत्र पुरोधाश्च भ्राता पत्नी सखाऽपि च।

यात्रायं धर्मकार्येषु जायन्ते प्रतिहस्तका:

एभि: कृतं महादेवि ! स्वयमेव कृति भवेत् ।।

पति, पुत्र, पुरोहित, भाई पत्नी और मित्र ये सब यात्रा तथा धर्म कार्य में प्रतिनिधि होते है (मदनरत्न)

।। श्री गणेश चतुर्थी निर्णय।।

चतुर्थी तु तृतीयां महापुण्य फलप्रदा।
कर्तव्या व्रतिभिर्वत्स गणनाथ सुतोषिणी।

गणेश व्रत में तृतीय युक्त चतुर्थी तिथि अधिक पुण्य के फल को देने वाली है और गणेश जी को प्रसन्न करती है। अत: व्रतार्थी उसी दिन व्रत करें।

।। व्रत भंग विचार।

अष्टे तान्यव्रतध्नानि आपो मूलं फलं पय।

हविर्ब्राहाकाम्या च गुरोवन मौषधम् ।। (स्कन्द पुराण)

जल,मूल,फल,दूध, ब्राह्मणेच्छा गुरू का वचन तथा औषध, ये आठ व्रतध्न नहीं होते है। तथा अतिसंकट विषय परक है।

गुप्त नवरात्रि

1. आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तथा माघ शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि गुप्त 'नवरात्रि (नोडता) कहलाती है। गुप्त नवरात्रो का प्रयोग गुप्त सिद्धि के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है।

2. आश्विन शुक्ल प्रतिपदा व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि'प्रकट नवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है विशेष अनुष्ठान–जप–पूजन एवं काम्य प्रयोगों के निमित्त यह नवरात्र श्रेष्ठ है।

''शुभम''

विभिन्न दुर्योग में जन्म वशात् अरिष्ट निवारण हेतु शान्ति उपाय

।। अमावस्या जन्म शान्ति ।।

अमावस्या में उत्पन्न जातक माता–पिता को दरिद्र बनाता है। अतः दोष शमन के लिए यत्न पूर्वक शान्ति करानी चाहिए। सर्वप्रथम जल पूर्ण घड़े में गूलर, बड़, आम, निम्ब तथा पीपल के छाल, जड़, पल्लवों और पंच रत्न को रखकर रक्त वस्त्र द्वारा आच्छादित कर घट स्थापन करें। पुन आपोहिष्ठेत्यादि 'सर्वे समुद्र– इन तीन मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें। अमावस्या के देव चन्द्र, सूर्य की स्वर्णमयी मूर्ति अथवा सूर्य की ताम्रमयी और चन्द्रमा की चांदी की मूर्ति बनाकर विधिवत उसकी स्थापना करें। फिर सवितत्यादि तथा आम्यास्वेत्यादि मन्त्रों से दोनों मूर्तियों की पञ्चोपचार या षोडशोपचार विधि से पूजा कर 'सवितृ' मन्त्र सोमो धेनुः इत्यादि मन्त्र से अष्टोत्तर शत संख्यक वा अष्टाविंशति प्रमित हवन करें। हवनान्तर पुत्र सहित दम्पत्ति को कलश के जल से अभिषिक्त कर ब्राह्माणों को भोजन करावे तथा उन्हें सदक्षिणा विदा करें। इस प्रकार अमावस्योत्पन्न जातक निश्चय ही कल्याण का भागी होता है।

।। भद्रा, तिथिक्षय, व्यतिपात, यमघण्ट ।।

उपरोक्त दुर्योग में जन्म जो अशुभ प्रद कहा गया है। उसकी शान्ति इस प्रकार है। जिस दुर्योग में जन्म हुआ है उस दुर्योग को पुनः प्राप्त होने पर शान्ति करनी चाहिए। जैसे भद्रा प्रयुक्त शान्ति भद्रा में ही करें। ज्योतिषी के द्वारा निर्दिष्ट शुभ मुहूर्त तथा शुभलग्न में देवताओं एवं ग्रहों का पूजन कर रूद्राभिषेक करें, शिव के निकट धूपदीप भी दिखलावें। ततः आयुवृद्धिकर अश्वत्व (पीपल) की विष्णु मन्त्र से 108 बार हवन यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन, कर्मान्त में कर्म दक्षिणा देवे तो अवश्य जातक कल्याण का भाजक होता है।

।। एक नक्षत्र में उत्पन्न जातक की शान्ति ।।

माता–पिता या सहोदर के जन्म नक्षत्र में यदि जन्म हो तो दोनों (जातक तथा माता–पिता या भाई –बहन) का या किसी एक के लिए कष्टकारी होता है। अतः शान्ति कर्म आवश्यक हो जाता है। प्राचीन ऋषि प्रोक्त शान्ति विधि इस प्रकार है–शुभ नक्षत्र, रिक्ता अमा, क्षयदिन रहित शुभ दिन में चन्द्रमा तारा जब प्रबल हो तो नक्षत्र शान्ति करनी चाहिए। नक्षत्र शान्ति के लिए नक्षत्र की सुन्दर प्रतिमा बनाकर अग्नि के ईशान कोण में कलश के ऊपर स्थापित कर नक्षत्र मन्त्रों से अभ्यार्चन करें। उस नक्षत्र मूर्ति को रक्त वस्त्र से आच्छादित कर पुनः स्वशाखोक्त विधि से अग्नि मुख घर के पूर्वोक्त ही नक्षत्र मन्त्र से 108 बार अग्नि में लकड़ी साकल्य ;घृत,तिल,धूप आदि के सम्मिश्रण से प्रायश्चितान्त हवन करें। अनन्तर आचार्य कलश स्थित जल से जातक माता–पिता सहोदर आदि को सिञ्चित करें। यथा शक्ति ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा आदि दें। इस तरह नक्षत्र दोष का विनाश हो जाता है।

।। संक्रान्ति जनन दोष ।।

रविवासरादि में क्रमशः घोरा, ध्वांक्षी, महोदरी, मन्दा, मन्दाकिनी, मिश्रा तथा राक्षसी ये सप्तविधि सूर्य संक्रान्ति होती है। इन संक्रान्तियों में उत्पन्न जातक दुःख दरिद्र से युक्त होता है। शान्ति से शुभ फल मिलना सम्भव है। अतः शान्ति का विधान इस प्रकार है – संक्रान्ति दोष शमन के लिए ग्रहयोग करें – अपने घर के पूर्व भाग में पवित्र स्थान में गोबर से लेपन करके त्रिविध अन्नों की ढेरी लगायें। 5 (द्रोण) (ढाई किलो) प्रमित गेहूँ उसके आधा चावल, चावल के आधे तिल अलग–अलग ढेर के रूप में रखें।

सभी ढेरों पर सुन्दर अष्टदल कमल का निर्माण करें। ततः पुन्याहवाचन, आचार्यवरण कराकर धान्यों की ढेर पर तीर्थोदक पूर्ण वस्त्रावेष्टिता घंटों की स्थापना करें। उन घंटो में सप्ततीर्थ की मृत्तिका, सर्वोषधि, पंचगव्य तथा पंच पल्लव रखें। तीनो घटों के ऊपर आसन के रूप में तीन छोटे–छोटे पात्रों का भी न्यास करें। घटोपरिस्थ तीन पात्रों में अधिदेव प्रत्याधिदेव के रूप में उपकल्पित सूर्य तथा चन्द्र की प्रतिमाओं ओर संक्रान्ति की प्रतिमा को विसर्जन करें। मध्यवर्ती घड़े पर प्रधान देवी संक्रान्ति की प्रतिमा और पार्श्ववर्ती घड़ो पर अधिदेव तथा प्रत्याधिदेव स्वरूप सूर्य–चन्द्रमा की प्रतिमाओं को रखें। अनन्तर तीनों प्रतिमाओं को ततद् वैदिक मन्त्रों के द्वारा विधान पूर्वक आराधना करें। प्रधान प्रतिमा के पूजन के पूर्व वस्त्र युगल समर्पित कर व्याहृति पूर्वक 'त्रयंबक' मन्त्र से अभ्यार्चन तथा धूप दीपादिका प्रदर्शन आराधना आदि विशेष रूप से करना चाहिए।

उत्सूर्य आदि मन्त्र से सूर्य प्रतिमा की ओर आप्यास्वयेत्यादि मन्त्र से चन्द्र प्रतिमा की षोडशोपचार पूजा भक्ति निष्ठा के साथ करें। सर्वविध विघ्नोपशान्ति के लिए 'महामृत्युञ्जय' मन्त्र का सपादलक्ष जप का अनुष्ठान रखें।

।। ग्रहण जात दोष शान्ति ।।

सूर्य–चन्द्र ग्रहण के समय उत्पन्न बालक दुःख, दारिद्रय तथा रोग युक्त होता है। अतः हितकामुक्त व्यक्ति को शान्ति करानी चाहिए। ग्रहण जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्राधीश की प्रतिमा स्वर्णमयी और सूर्यग्रहण में सूर्य की प्रतिमा सुवर्ण की बनावें। चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा की प्रतिमा चाँदी की और राहु की मूर्ति सीसे की बनावें।

समतल भूमि तथा पवित्र स्थान में गाय के गोबर से उपलेप कर सूर्य, चन्द्र तथा राहु की प्रतिमा रखें। सूर्य प्रीत्यर्थ रक्ताक्षत, रक्तचन्दन, रक्तमाल्य तथा रक्तवस्त्र समर्पित करें। चन्द्र प्रीति के लिए श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, श्वेत माल्य, श्वेत वस्त्र प्रदान करें। राहु प्रीत्यर्थ सभी कृष्ण वर्ण की वस्तुएँ और नक्षत्रेश के लिए श्वेत वस्तुएँ दें। 'आकृष्णेन रजसा' इत्यादि मन्त्र से सूर्य की 'इमं देवा' इत्यादि मन्त्र से चन्द्रमा की 'कया नः' इत्यादि मन्त्र से राहु की पूजा करें। राहु की समिधा दूर्वा, सूर्य की आक, चन्द्रमा की पलाश है। तत्तद् समिधा से हवन करें।

हवनान्तर कलशोदक से जातक तथा दम्पत्ति (जातक के माता–पिता) का अभिषेक करें तदनन्तर ब्राह्मण भोजन करायें। इस प्रकार शान्ति कर्म सम्पन्न हुआ।

।। गण्ड मूल जात शान्ति ।।

तिथि, लग्न तथा नक्षत्र के वश त्रिविध गण्डान्त कहे गये है। इनका विवाहादि शुभ कार्य में जन्म समय तथा यात्रा में विचार करें।

पूर्णा (5,10,15) नन्दा (1,6,11) तिथियों की सन्धियों में चार घटी तुल्य समय तिथि गण्डान्त होता है। अर्थात् पूर्णिमा के अन्तिम 2 घटी तथा प्रतिपदा के आदि की 2 घटी तिथिगण्डान्त होती है।

रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा नक्षत्रों के तदग्रिम नक्षत्रों के साथ रेवती–अश्विनी आश्लेषा–मघा, ज्येष्ठा–मूल इन तीनों की सन्धियों में चार–चार घटी नक्षत्र गण्डान्त कहे गये है।

मीन–मेष, कर्क–सिंह, वृश्चिक–धनु की सन्धियों में एक–एक घटी तुल्य समय लग्न गण्डान्त होता है।

तीनों गण्डान्त जन्म दोषकारी विघ्न–बाधा देने वाला होते है। अतः शान्ति अपेक्षित है। तिथि गण्डान्त में जन्म होने पर बैल, नक्षत्र गण्डान्त में गाय, लग्न गण्डान्त में जन्म हो तो सुवर्ण का दान दोष शान्ति हेतु करें। गण्डान्त के प्रथमार्ध में जन्म होने पर पिता के साथ जातक का और परार्ध में जन्म होने पर माता के साथ जातक का अभिषेक करना चाहिए। जिस गण्डान्त में जन्म हो, उस गण्डान्त (तिथि, नक्षत्र, लग्न) के देवता की स्वर्णमयी प्रतिमा बनाकर षोडशोपचार पूजन एवं हवन करें, तदनन्तर ब्राह्मण भोजन तथा दक्षिणा से युक्त शान्ति कर्म सम्पन्न हो जाता हैं।

।। कालसर्प योग जन्म शान्ति ।।

यदि जन्म कुण्डली में राहु–केतु के एक ही तरफ में सभी सातों (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र व शनि) पड़ जाये तो काल सर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरूष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है। अतः दोष दूर हेतु शान्ति श्रेयस्कर है। काल सर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (1) ग्रह शान्ति (2) सर्प दोष शान्ति (3) पितृदोष शान्ति, नाग बलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। विधि पूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें। अन्य केचित् उपाय इस प्रकार है –

1. काल सर्प की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में एक लाख 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्व है। साथ ही शिवलिंग पर चाँदी का सर्प युगल–नाग स्त्रोत एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

卐 गण्डमूल नक्षत्र फल विचार 卐

यदि कोई बालक/बालिका का गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म हुआ हो तो वह जातक के माता, पिता, धन तथा स्वयं के लिए अनिष्टप्रद होता है, अत: इस अरिष्ट निवारण के लिए योग्य ब्राह्मण के द्वारा गण्डमूल शान्ति करानी चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र	1. अश्विनी	2. आश्लेषा	3. मघा
	4. ज्येष्ठा	5. मूल	6. रेवती

गण्डमूल नक्षत्रों के पाद (चरण) फल

नक्षत्र चरण	अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
1	पितृकष्ट	शान्ति करने से सुख	मातृकष्ट	बड़ेभाई को कष्ट	पितृकष्ट	धनप्राप्ति
2	सुख	धनहानि	पितृकष्ट	छोटेभाई को कष्ट	मातृकष्ट	मन्त्री तुल्यमान
3	मन्त्री तुल्यमान	मातृकष्ट	सुख	मातृकष्ट	धनहानि	सुख
4	राजतुल्य मान	पितृकष्ट	धन-विद्या लाभ	स्वयं को कष्ट	शान्ति	अनेक कष्ट

卐 मूल निवास चक्र 卐

जन्म मास के अनुसार	वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, फाल्गुन	चैत्र, श्रावण, कार्तिक, पौष	आषाढ, अश्विन, माघ, भाद्रपद
जन्म लग्न के अनुसार	वृष,सिंह,वृश्चिक कुम्भ	मिथुन, कन्या, धनु, मीन	मेष,कर्क, तुला, मकर
मूल का निवास स्थान	पाताल में	भूलोक में	स्वर्ग में
मूल का निवास फल	शुभ	अति अशुभ	शुभ

मूल नक्षत्र का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है। अन्य में सामान्य रहता है।

अभुक्त मूल विचारः–

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की 4 घटी, अन्य मत से 1 घटी और मूल नक्षत्र के आदि की 4 घटी अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्में तो पिता 8 वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे। असमर्थ हों तो 6 मास अथवा 27 दिन के बाद मुख देखें। शान्ति-हवन आदि से युक्त, मूल शान्ति, रूद्रीपाठ, महामृत्युञ्य जाप आदि कराके शुभ बेला में बालक का मुखावलोकन करें।

नाग गायत्री मन्त्र–

ॐ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्।

2. प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तेल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर मौली लपेटकर सिर से तीन बार घुमाकर 'ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः' मन्त्र तीन बार पढ़कर बहते हुए पानी में बहा देवें–ऐसे कम से कम पाँच शनिवार करें।

अन्य

गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे,
संक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहुदर्शके।
वज्रेकृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ,
विष्टौ सोदरभे जनिर्न पित्भे शस्ताऽशुभा शन्तितः।।

बालक अथवा बालिका के जन्म समय में अशुभकाल योग इस प्रकार है। गण्डमूलनक्षत्र, शूलयोग, पात, परिघ्रयोग, व्याघातयोग, गण्डयोग, क्षयतिथि, संक्रान्ति, व्यातिपातयोग, वैधृतियोग, सिनीवाली, कुहू दर्श (अमावस्या) व्रजयोग, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, यमघण्टायोग, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, यमल (जुड़वा) जन्म, माता-पिता के जन्म-नक्षत्र, अग्रज का जन्म-नक्षत्र इनमें से यदि जन्म-समय पर कोई भी अशुभ योग हो तो शास्त्रोक्त विधि से शान्ति कराना चाहिए।

ग्रहणकाल में तथा कार्तिक मास में एवं दाँतों सहित जन्म होना अशुभ माना गया है, अशुभपरिहार हेतु शान्तिकर्म अवश्य कराना चाहिए।

सूचना

महामृत्युञ्जय जप, रूद्राभिषेक, चण्डीपाठ एवं काल सर्प योग शान्ति तथा गण्डमूल शान्ति आदि अनुष्ठान जो लोग यहाँ करवाते हैं, उनको चाहिए कि एक सप्ताह पूर्व सूचित करें। तत्काल बताने पर व्यवस्था में असुविधा हो रही हैं।

।। साढ़े तीन मूहूर्त ।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (जब नया चान्द्र वर्ष प्रारम्भ होता है।) विजयदशमी (आश्विन शुक्ल दशमी) अथवा तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया) तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि, ये तिथियाँ, साढे तीन मुहूर्त्त कहलाते है।

इसमें प्रथम तीन पूरी और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा की गणना को आधे मुहूर्त्त में लिया गया है।

इन साढ़े तीन दिन में कोई भी शुभ कार्य शीघ्र सिद्धिदायक होते है, अन्य मुहूर्त देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहा भी गया है –

वर्षादौ प्रतिपच्चैव दशमी विजयाभिधा

अक्षयाख्या तृतीया च कार्त्तिकी प्रतिपत्सिते।
सार्धतिस्रः दिनान्येते शुभेषु सिद्धिदायकः
नात्र दोषो भवेत् किञ्चिन्नित्यं शुभ वर्द्धते।।

।। पुष्य प्रशंसा ।।

पाप ग्रहों से युत–विद्ध तारा एवं चन्द्र बल से हीन होने पर भी पुष्य नक्षत्र में विवाह को छोड़कर अन्य समस्त मंगल कार्य सिद्ध होते है। मुहूर्त्त शास्त्र में कहा भी गया है –

क्रूरैर्विद्धो युतो वापि पुष्या यदि बलान्वितः।
विना पाणिग्रहं सर्व मंगलेष्विष्टदः सदा।।

अर्थ : जिस प्रकार मृग समूह में सिंह बलवान होता है, उसी प्रकार नक्षत्र समूह में पुष्य नक्षत्र भी बलवान होने पर अन्य दोषों को नष्ट कर देता है।

।। ग्रहों के होम प्रमाण ।।

प्रत्येक ग्रह के लिए 108 अथवा 28 आहुतियां देनी चाहिए। अथवा मधु एवं सरसों से 1008 आहुति देनी चाहिए।

।। होमादि में अग्निवास जानना ।।

जिस दिन हवन करना हो उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर 1 और जमा करें फिर कुल जोड़ को 4 से भाग देवें। यदि 0 या 3 शेष बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याण कारक होता है। यदि 2 बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है, इस दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि 1 शेष बचे तो अग्नि का वास आकाश में होगा। इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

होमादि में अग्निवास ज्ञान चक्रम् (शुक्ल पक्ष)

वार / तिथि	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
2	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
3	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
4	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
5	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
6	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
7	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
8	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
9	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
10	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
11	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
12	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
13	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
14	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
15	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी

होमादि में अग्निवास ज्ञान चक्रम् (कृष्ण पक्ष)

वार तिथि	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पाताल
2	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
3	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
4	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
5	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
6	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
7	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
14	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
30	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

विशेष:- जिस दिन अग्नि का वास पृथ्वी पर हो उसी दिन हवन करना (शुभ) उचित होता है। इससे सुख लाभ मिलता है।

।। शिववास विचार ।।

भगवान शिव से सम्बन्धित अनुष्ठान करने के लिए शिववास का विचार किया जाता है शिववास निकालने की विधि इस प्रकार है।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ कर अभिष्ट दिन की तिथि तक गिनें, जो तिथि संख्या आवे उसको दो से गुणा करें। गुणनफल में पाँच जोड़े अब जो योग प्राप्त हो, उसे सात (7) से भाग दें जो बचे उस अनुसार शिव का वास जानें। 1 शेष बचने पर कैलास में, 2 में गौंरी के पास, 3 में नन्दी के ऊपर, 4 में सभा में, 5 भोजन में, 6 खेल में और शुन्य अर्थात् शेष न बचे तो शिव का वास श्मशान में जानें।

।। शिववास का फल ।।

कैलासे लभते सौख्यं गौर्या च सुख सम्पदः। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभासन्तापकारिणी। भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचिन्तयेत्।

शिव का वास कैलास में हो तो सौख्य, गौरी के पास सुख सम्पत्ति, नन्दी पर सवार हो तो अभिष्ट कार्य में सिद्धि, सभा में संताप, भोजन में पीड़ा, क्रीड़ा में हो तो कष्ट और श्मशान में हो तो अनिष्ट होता है। उपरोक्त विधि से शिव वास की शुभ स्थिति में ही शिव से सम्बन्धित पूजा–अनुष्ठान करना चाहिए, जिससें कार्य और फल की सिद्धि हो। नीचे सरलता के लिए शिववास तिथि चक्र दिया गया है।

शुक्ल पक्ष में शिववास तिथि	2	5	6	8	9	12	13	
कृष्ण पक्ष में शिववास तिथि	1	3	4	5	8	11	12	30

उपरोक्त तिथियों में शिववास शुभ है। अतः उस दिन शिव पूजन अधिक सिद्धिप्रद होगा।

।। ग्रहों के मुख में आहुति चक्र ।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि तीन या तीन से कम की संख्या आये तो होमाहुति सूर्य के मुख में जानें, तीन से आगे की संख्या से 6 तक संख्या मिले तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरू	राहु	केतु
नक्षत्र	3	3	3	3	3	3	3	3	3
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

।। भद्रा का शुभाशुभ विचार ।।

भद्रा काल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, रक्षाबन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते है। भद्रा की 5 घड़ी मुख में 2 घड़ी कण्ठ में, 11 घड़ी हृदय में, 4 घड़ी नाभि में, 5 घड़ी कटि में, और 3 घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थनाश होता है, पर पुच्छ में निश्चित रूप से विजय एवं कार्य सिद्ध हो जाती है।

मुखे तु घटिकाः पञ्च द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते।
हृदि चैकादशा प्रोक्ताश्चतस्रो नाभिमण्डले।
कट्या पंचैव विज्ञेया तिस्त्राः पुच्छेजया वहाः
मुखे कार्य विनाशाय ग्रीवायां धन नाशिनी (भविष्यपुराण)

卐।। यात्रा में चन्द्रमा विचार।।卐

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
चन्द्रमा की राशि	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन

।। सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा।।

यदि यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख हो तो, राशि दोष, वार संक्रान्ति दोष कुतिथि (रिक्ता) कुलिक दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु, केतु आदि सभी के दोषों को नष्ट करता है। अर्थात् अन्य दोष गौण हो जाते हैं। अतः यात्रा करते समय चन्द्रमा सम्मुख या दायाँ होना चाहिए। पृष्ठ और बायाँ अशुभ है।

卐 यात्रा विचार (समयशूल) 卐

यात्रा की दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
चन्द्रमा की राशि	शनिवार सोमवार	गुरूवार	रविवार शुक्रवार	मंगलवार बुधवार
विहित वारें	रविवार, मंग, बुध, गुरू, शुक्र	रवि,सोम,मंगल बुध,शुक्र,शनि	सोम,मंग,बुध गुरू,शनि	सोम,गुरू, शुक्र,शनि

卐 यात्रा विचार (समयशूल) 卐

काल	उषाकाल	मध्याह्न काल	गोधुलिकाल	अर्धरात्रिकाल (संध्या)
निषिद्ध दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर

उषा काल को पूर्व दिशा छोडकर अन्य सभी दिशाओं में यात्रा कर सकते हैं। उसी तरह मध्याहन काल में दक्षिण दिशा छोडकर अन्य सभी दिशा विहित हैं।

नक्षत्र, वार, दिशा, शूल एवं परिहार चक्र

दिशा/कोण	दिशा वार शूल	दिशा शूल	परिहार काल	परिहार
	नक्षत्र		दिशा शूल दोष नहीं	भक्ष्य पदार्थ
पूर्व	सोम–शनि	ज्येष्ठा	दिन	दुग्ध–मांस
अग्निकोण	सोम–शनि	ज्येष्ठा	दिन	दुग्ध–मांस
दक्षिण	गुरू	पू.भा.	रात्रि	दधि
नैऋतय	रवि–शुक्र	पू.भा.	रात्रि	धृत, जौ
पश्चिम	रवि–शुक्र	रोहिणी	रात्रि	धृत, जौ
वायव्य	मंगल	रोहिणी	रात्रि	गुड़
उत्तर	मंगल–बुध	उ.फा.	रात्रि	गुड़, तिल
ईशान	शनि–बुध	उ.फा.	रात्रि	गुड़, तिल

卐 यात्रा विचार प्रकरण (योगिनी वास) 卐

योगिनी यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है। पीछे और बायें की शुभ होती है। शुद्ध यात्रा में बायें की और विशेष त्याज्य है। निम्नोक्त कोष्ठक में किस तिथि में योगिनी किस दिशा में रहती है, यह सूचित है।

दिशा	तिथि
पूर्व	1—9
आग्नेय	3—11
दक्षिण	5—13
नेर्ऋत्य	12—4
पश्चिम	6—14
वायव्य	7—15
उत्तर	2—10
ईशान (उत्तर पूर्व)	8—30

उपरोक्त कोष्ठक में पूर्व के सामने 1—9 लिखा है इसका अर्थ यह हुआ प्रतिपदा और नवमी तिथि में योगिनी पूर्व दिशा में रहती है और जिन्हे पूर्व दिशा में यात्रा करना हो तो योगिनी सामने हो गयी। सामने योगिनी अशुभ माना गया है। अतः उक्त दिशा के विपरीत दिशा और बायें हाथ के दिशा में यात्रा शुभ होती है। इसी प्रकार योगिनी वास उपरोक्त कोष्ठक में तिथि के अनुसार जानें।

चौघड़िया दिन के, प्रति अंश में यात्रा करने का फल

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

नियम :-

सर्वप्रथम आप जिस दिन का चौघड़िया ज्ञात करना चाहते है, उस दिन सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय (दिनमान) ले, उस समय (दिनमान) को आठ (8) भागों में विभाजित करें। यदि आप सोमवार का चौघाड़िया जानना चाहते है, तो प्रथम अंश (भाज्यफल) को सूर्योदय में जोड़े। तो उस समयावधि तक अमृत जानें। इसी में द्वितीय अंश जोड़े तो काल जानना चाहिए। इसी प्रकार रात्रि की चौघड़िया देखने के लिए सूर्योदय (रात्रिमान) तक समय को उक्त विधि द्वारा जानें।

शुभ = चर, लाभ, अमृत, शुभ / अशुभ = काल, रोग, उद्वेग

चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा करने का फल
(दिन की चौघड़ियाँ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	चर	काल	काल	6:00
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7:30
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1:30
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3:00
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4:30

।। चौघड़ियाँ मुहूर्त ।।
(रात्रि की चौघड़ियाँ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	6:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	7:30
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	21:00
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	21:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	24:00
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	25:30
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	27:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	लाभ	लाभ	28:30

卐 अनुकुल कार्यसिद्धि के लिए होरा ज्ञान 卐

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। कोई ऐसा कार्य जो रविवार को करना शुभ हो, उसे किसी भी वार को रवि के होरा में कर सकते है।

होरा चक्र

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू
बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध
मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू
बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र

होरा चक्र

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध
मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू
बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध
मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू
बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल

नोट : प्रत्येक दिन में सूर्योदय से प्रत्येक घण्टे में एक होरा, इस प्रकार एक दिन में 24 होरा होते है, पहला होरा अपने वार का होता है। उदाहरण के लिए रविवार को प्रथम होरा रवि का होगा उसी तरह सोमवार को सोम तथा इसी प्रकार सभी वार समझें। कोई भी शुभ कार्य करना हो तो शुभ ग्रहों के होरा में करें। सूर्य का होरा– टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने–देने के लिए अच्छा होता है। चन्द्रमा का होरा– सब कार्यों के लिए अच्छा होता है। मंगल का होरा – युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा, सोसाइटी में आना–जाना और मुकदमा के कार्यों के लिए शुभ होता है। बुध का होरा – विद्यारम्भ कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन काव्य लेखन पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने आदि के लिए शुभ है। गुरू का होरा – विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। शुक्र का होरा – यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। शनि का होरा–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स आदि के कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्य में शुभ होता है।

मेषादि राशियों के लिए घातमासादि चक्र

'मुहूर्त चिन्तामणि' ग्रन्थ के अनुसार घातादियों का विचार केवल राजसेवा, विवाद, (मुकदमा आदि) युद्धप्रयाण तथा यात्रा में ही करना चाहिए।

राशि घात मास	मेष कार्तिक	वृष मार्ग	मिथुन पौष	कर्क माघ	सिंह फा.	कन्या चैत्र	तुला वैशा.	वृश्चिक ज्येष्ठ	धनु आषाढ़	मकर श्राव.	कुम्भ भाद्र	मीन आश्विन
घात तिथि	1 6 11	5 10 15	2 7 12	2 7 12	3 8 13	5 10 15	4 9 14	1 6 11	3 8 13	4 9 14	3 8 13	5 10 15
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरू	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु.	मूल	श्रव.	शत.	रेव.	भर.	रोहि	आर्द्रा	आश्ले.
घात लग्न	1	2	4	7	10	12	6	8	9	11	3	5
घात चन्द्र (पुरूष)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
घात चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चि.	वृश्चि	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि.	मिथुन	कुम्भ

वर्ष के शुभाशुभ ज्ञान

प्रश्नकर्ता के नामाक्षर के साथ, तिथि, वार, नक्षत्र एवं संवत्सर की संख्या जोड़कर तीन से भाग दें। फल इस प्रकार जानें, यदि एक शेष बचा तो क्लेश, दो में सामान्य एवं तीन से सुख होता है।

।। कार्याकार्य प्रश्न विचार।।

दिश प्रहरं संयुक्ता तारका वार मिश्रिता।
आष्टाभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्।।
पञ्चके त्वरिता सिद्धि, षडतुर्यू च दिन्त्रयम्।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वे, चाष्टौ न च सिद्धिदौ।।

अर्थ :– यदि कोई आकर प्रश्न करता है कि मेरा कार्य सिद्ध होगा या नहीं या कब होगा ? उस प्रश्न के उत्तर में प्रश्नकर्ता के मुख जिस दिशा में हो (पूर्व–दक्षिण–पश्चिम–उत्तर) पूर्वादि क्रम में दिशा संख्या ले, दिशा संख्या में प्रहर संख्या और नक्षत्र संख्या जोड़ें तत्पश्चात् समस्त योग को 8 से भाग दें। निम्नोक्त शेष से फल जानें, 5 शेष रहने पर शीघ्र कार्य सफल, 6 और 4 शेष तो तीन दिन में कार्य सिद्धि, 3 और 7 शेष तो कार्य में विलम्ब होगा, और 8 शेष हो तो कार्य सिद्धि में अवरोध होगा।

मेधावी एवं दीर्घायु सन्तान प्राप्ति हेतु गर्भाधान मुहूर्त

रजोदर्शन के उपरान्त 16 दिन तक ऋतुकाल माना जाता है। ऋतुकाल के पहले चार दिन एवं 11वां और 13वां दिन गर्भाधान के लिए वर्जित है। शेष 10 दिन ही गर्भाधान के लिए विहित है। पुत्रकामना के लिए ऋतुकाल के सम (6वें–8वें आदि) रात्रियों में और पुत्री प्राप्ति हेतु विषम रात्रियों (5वें–7वें आदि) में गर्भाधान करना चाहिए।

ऋतुकाल के प्रथम दिन का निर्णय–दिन में रजोदर्शन हो तो वही ऋतुकाल का प्रथम दिन माना जायेगा। अर्द्धरात्रि (12 बजें) के बाद अगला दिन ही प्रथम दिन माना जायेगा।

।। गर्भाधान का तिथ्यादि शुभमुहूर्त ।।

तिथि – 4,6,8,9,14 पूर्णिमा, अमावस्या को छोडकर।
वार– रवि, चन्द्र, बुध, गुरू और शुक्रवार उत्तम है।
नक्षत्र – ज्येष्ठा, मूला, मघा, और रेवती वर्जित है, शेष सभी प्रशस्त है।

।। प्रतिदिन दिन दशा विचार ।।

जन्मतारा चतुर्गुण्यं तिथिवार समन्वितम्।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिन दशोच्यते।।
फलम् - रविणा शोक सन्तापो शशांके क्षेमलाभ दौ।
भूमिपुत्रस्तु मृत्युं स्यात् बुधे प्रज्ञा विवर्द्धनम्।।
गुरौ वित्रं भृगौ सौख्यं शनौ पीड़ा न संशयः।
राहोस्तु घात तापौ च केतो मृत्युर्दशा फलम्।।

जन्म नक्षत्र को 4 से गुणा कर तिथि एवं वार संख्या को जोड़ें। इस सम्पूर्ण योग को 9 से भाग दें जो शेष बचे उसके अनुसार दिन दशा जानें। 1 शेष में सूर्य की दिन दशा शोक सन्ताप देने वाला, 2 में चन्द्रमा क्षेम व लाभ देने वाला, 3 में मंगल की कष्टकारक, 4 में बुध की बुद्धि और ज्ञान को बढ़ाने वाला, 5 में गुरू की धन वृद्धि कारक, 6 शेष में शुक्र की शुभ एवं सुख देने वाला, 7 शेष में शनि की पीड़ादायक 8 में राहु की घात–ताप बढ़ाने वाला, 8 अथवा 0 शेष में केतु की मृत्यु समान कष्टकारक दशा होती है। उपरोक्त विधि अनुसार शुभ दशा में दिन के कार्य प्रारम्भ करने चाहिए।

।। वैधव्य दोष परिहार ।।

जिसकी कुण्डली में मंगल का दोष हो। उसके प्रत्युत दूसरे की कुण्डली में शनि, मंगल अथवा अन्य कोई पाप ग्रह उसी प्रकार अनिष्ट कारक अवस्था में बैठा हो तो भौम दोष (मांगलिक) समाप्त हो जाता है। कन्या की कुण्डली में जितने अनिष्टकारक ग्रह स्थित हो उतने ही अथवा उससे भी अधिक यदि वर की कुण्डली में भी प्राप्त हो रहे हैं तो ही मेलापक शुभ होता है अन्यथा नहीं। कन्या के सप्तमेश, शुक्र तथा शुभ ग्रहों की स्थितिवश सौभाग्य योग देखना चाहिए।

जन्म राशि एवं नाम राशि की प्रधानता का विचार

निर्णयविवाहे सर्वमांग्ल्ये यात्रायां ग्रह गोचरे।
जन्म राशौ, प्रधानत्वं नाम राशिं न चिन्तयेत् ।
कुर्यात् षोडशकर्माणि जन्म राशौ बलाविन्ते।
सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नाम राशेः बलाविन्ते।
मन्त्रे पुनर्भवरणे नाम राशेः प्रधानता।
देश ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामः राशेः प्रधानत्वं जन्म राशिं न चिन्तेयत्।

विवाह यात्रा एवं सभी मंगल कार्यो में जन्म राशि की प्रधानता होती है। जितने षोडश संस्कार होते है। इनमें जन्म राशि की प्रधान होती है। अन्य कर्मो में नाम राशि की प्रधानता होती है। देश, ग्राम, युद्ध, नौकरी एवं व्यवहार में नाम राशि की प्रधानता होती है।

।। शनिस्तोत्रम ।।

(दशरथ उवाच)

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः सुरूपगात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः।।1।।
नमो नित्यं क्षुधार्त्ताय अतृप्याय च वै नमः।
नमः कालाग्निरूपाय कृष्णाङ्गाय च वै नः ।।2।।
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः।
नमोऽस्तु कोटरक्षाय दुर्भिक्षाय च वै नमः।।3।।
नमो द्योराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।
नमो मन्दगते ! तुभ्यं भानुज! भददायिने।।4।।
अधोदृष्टे ! नमस्तेऽस्तु संवर्त्तकमयाय च।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च । 5।।
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासिवै राज्यं रूष्टो हरसि तत्क्षणात् । 6।।
सूर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।।
देवा-ऽसुर-मनुष्याश्च पशुपक्षिसरीसृपाः।7।
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु ब्रजन्तिते।
ब्रह्म शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकः।।8।।
राज्यभ्रष्टाःपतन्त्येते त्वया दृष्ट्याऽवलोकिताः।
देशाश्च नगरग्रामाद्वीपाश्चैव तथा द्रुमा।।9।।

।। सूर्य स्तोत्र ।।

सूर्य स्तोत्र में सूर्य देव के 21 पवित्र, शुभ एवं गोपनीय नाम हैं

स्तोत्रः

विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोक प्रकाशकः श्री माँल्लोक चक्षुर्महेश्वरः।।
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः।।
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा रवेः।।

सूर्य देव के 21 नाम

विकर्तन, विवस्वान, मार्तण्ड, भास्कर, रवि, लोकप्रकाशक, श्रीमान्, लोकचक्षु, गृहेश्वरः लोकसाक्षी, त्रिलोकेश, कर्ता, हर्ता, तमिस्राहा, तपन, तापन, शुचि, सप्ताश्वाहन, गभस्तिहस्त, ब्रह्मा और सर्वदेव नमस्कृत।

सूर्य देव के इक्कीस नामों का यह स्तोत्र भगवान सूर्य को सर्वदा प्रिय है। सूर्य स्तोत्र का नियमित सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय पाठ करने से व्यक्ति सब पापों से मुक्त होकर निरोगी होता हैं एवं धन की वृद्धि कर व्यक्ति का यश चरो और फैलाने वाला हैं। इसे स्तोत्रराज भी कहा जाता हैं। सूर्य स्तोत्र को तीनों लोकों में प्रसिद्धि प्राप्त हैं।

संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठा सूर्य यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर के नित्य यंत्र को धूप–दीप करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

।। महामृत्युञ्जयजपविधिः ।।

विनयोग :- ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वशिष्ठऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
श्रीत्र्यम्बक रूद्रदेवता श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः मम यजमानस्य (वा शरीर)
सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकं सकलमनोरथसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।
अथ ऋष्यादिन्यासः- ॐ वशिष्टऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे।
श्री त्र्यम्बक रूद्रदेवतायै नमः हृदये।
श्री बीजाय नमः गुह्ये। (हस्त प्रक्षालम्)
ह्रीं शक्ते नमः पादयोः (हस्त प्रक्षालम्)

अथ षडंगन्यास

1. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बक्	हृदयाय नमः।
2. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे	शिरसे स्वाहा।
3. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वःसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्	शिखायै वषट्।
4. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारूकमिवबन्धनात्	कवचाय हुम्।
5. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः मृत्योर्मुक्षीय	नेत्राभ्यां वौषट्।
6. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः मामृतात्	अस्त्राय फट्।

।। अथ करन्यासः ।।

अथ षडंगन्यास

1. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम्	अंगुष्ठाभ्यां नमः।
2. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे	तर्जनीभ्यां नमः।
3. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्	मध्यमाभ्यां नमः।
4. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारूकमिवबन्धनात्	अनामिकाभ्यां नमः।
5. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः मृत्योर्मुक्षीय	कनिष्ठकाभ्यां नमः।
6. ॐ हौं जूं सः	ॐ भूर्भुवः स्वः मामृतात्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथध्यानम्

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लवयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवनलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अकन्यस्तकरद्वयामृघटं कैलाशकान्तं शिवम्।
स्वच्छज्ञमभोजगतं नवेन्दुमुकुटाभान्तं त्रिनेत्र भजे।।

अथ मन्त्रस्वरूपम्

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्व.: ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगिन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भुः ॐ सः जूं हौं ॐ ।।

।। नवग्रह स्तोत्रम् ।।

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव–संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट–भूषणम्।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगल प्रणामाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानांच ऋषीणांच गुरू कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमानि शनैश्चरम्।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।
पलाशपुष्पसंकाश तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इतिव्यासो मुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा या यदि वा रात्रौ विघ्नः शांतिर्भविष्यति।
नरनारी नृपाणां च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषां आरोग्य पुष्टिवर्द्धनम्।।
ग्रह नक्षत्रजाः पीड़ास्तस्कराग्नि समुद्भवाः।
ताःसर्वाःप्रशमं यान्ति व्यासोब्रुते न संशयः।।
(इति श्री व्यास विरचिंत आदित्यादि नवग्रह स्तोत्रं सम्पूर्ण।।)

।। नवग्रह कवच ।।

ॐ शिरो में पातु मार्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः ।
मुखमङ्गारकः मातु कण्ठं च शशिनन्दनः ।।1।।
बुद्धिं जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः ।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां में दितिनन्दनः ।।2।।
पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च ।
तिथयोऽष्टौ दिशः पान्तु नक्षत्राणि वपुः सदा ।।3।।
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च ।
सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत् ।। 4।।
रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्यशते बन्धनात् ।
श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते ।। 5।।
पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते ।
मृतवत्सा च या नारी काकवन्ध्या च या भवेत् ।।6।।
जीववत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः ।
एतां रक्षा पठेद् यस्तु अङ्गंस्पृष्ट्वापि वा पठेत् ।। 7।।
इति यामलतन्त्र नवग्रह-कवचम् ।

।। नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्रः ।।

सूर्यः	ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यृञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयाति भुवनानि पश्चन्।।
चन्द्रः	ॐ इमं-देवा असपत्नठंसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जाने राज्यायेन्द्रेस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रममुष्यै विशएष वोमी राजा सोमाऽस्माकं ब्राह्मणानांठ राजा।
मंगलः	ॐ अग्निर्मूधादिवः ककुत्पत्तिःपृथिव्याऽअयम्। अपारेता ठंसिजिन्वति।।
बुधः	ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसठं सृजेथामयञ्च। अस्मिनसधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वदेवा यजमानश्चसीदत।।
गुरूः	ॐब्रहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हदद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
शुक्रः	ॐ अन्ना परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रयं विपानठं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतृमधु।
शनिः	ॐ शं नो देवी रभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।
राहुः	ॐ कया नञ्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता।
केतुः	ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽअपनशयसे। समुषद्भिरजायथाः।।

।। ग्रह दोष निवारण हेतु ग्रहों के पौराणिक एवं तन्त्रोक्त मंत्र ।।

मन्त्र/ग्रह	पौराणिक मन्त्र	तान्त्रिक मन्त्र
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं, सः सूर्याय नमः	ॐ घृणिः सूर्याय नमः
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं, सः चन्द्रमसे नमः	ॐ सों सोमाय नमः
भौम	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरू	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	ॐ कें केतवे नमः

योगिनी दशा जनित अनिष्ट फल शान्ति हेतु मंगलादि योग्नियों के मन्त्र।।

मंगला का मंत्र	पिंगला का मंत्र	धान्या का मंत्र	भ्रामरी मंत्र
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले बैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाह	ॐ श्री धनदे धान्यै स्वाहा	ॐ भ्रामरी जगतामधीश्वरी भ्रामेरीक्लीं स्वाहा
जप सं.: 11000	जप सं. 7000	जप सं. 19000	जप सं. 10000
भद्रिका का मंत्र	**उल्का का मंत्र**	**सिद्धा का मंत्र**	**संकटा का मंत्र**
ॐ भद्रिके भद्रंदेहि अभद्र नाशय स्वाह	ॐ उलके मम रोगं नाशय	ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्व मानसं जृंभय स्वाहा स्वाहा	ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं साधय नाशय स्वाहा
जप सं. : 9000	जप सं. 23000	जप सं. 16000	जप सं 18000

।ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ।।

ग्रह	रवि	चन्द	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
धातु	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण
उपधातु	ताम्र	चांदी	ताम्र	काँस्य	काँस्य	चाँदी	लोहा	सीसा	सीसा
रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
धान्य	गेहूँ	चावल	मसूर	मूंग	चना	श्याममूंग चावल	तिल	उड़द	उड़द
पशु	रक्त धेनु	श्वेतवृषभ	रक्तवृष	हाथी	अश्व	श्वेताश्व	भैंस	घोड़ा	अजा
रस	गुड़	घृत	गुड़	घृत	शक्कर	घृत	तेल	तेल	तेल
वस्त्र	केशरी वस्त्र	श्वेत वस्त्र	रक्त वस्त्र	नील वस्त्र	पीत वस्त्र	चित्र वस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नील वस्त्र	कृष्ण वस्त्र
पुष्प	रक्तकमल	श्वेतपुष्प	रक्तकमल	सर्वपुष्प	पीतपुष्प	श्वेत पुष्प	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प
जप सं.	7 हजार	11 हजार	10 हजार	9 हजार	19 हजार	16 हजार	23 हजार	18 हजार	17 हजार
समिधा	आक	पलाश	खदिर	अपामार्ग	अश्वत्थ	उदुम्बर	शमी	दुर्वा	कुश
देवता	शिव	दुर्गा	गणेश	विष्णु	कुलदेवता	इन्द्राणि	देवी	भैरव	भैरव

।। मांगलिक दोषों का विचार एवं परिहार ।।

विगत वर्ष के **पंचाङ्ग** में वर–वधु मेलापक सामग्री को प्रकाशित किया गया था। मिलान सम्बन्धी शास्त्रोक्त बाते इस लघु **पंचाङ्ग** में देना यथेष्ट नहीं है। अतः इस वर्ष सभी मिलान सम्बन्धित मांगलिक दोषों पर विचार तथा दोषों का परिहार किया जा रहा है।

''लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकः ।। (मु0 चि0)

कन्या अथवा वर की जन्म कुण्डली में 1,4,7,8 तथा 12 वें स्थान में मंगल स्थित हो तो परस्पर एक दूसरे के लिए दाम्पत्य जीवन के लिए घातक होता है। इसी प्रकार चन्द्रलग्न तथा शुक्रलग्न से भी योग बनता हो तो वह प्रबल मांगलिक दोष माना जाता है। उपर्युक्त स्थिति में मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगल दोष वाले वर से करना चाहिए जिससे कि मंगल परस्पर दोनों के लिए अनिष्टकारक नहीं होता अपितु दामपत्य जीवन को सुखमय रखता है।

''कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल !
नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुधवर्धनम् !

अन्य परिहार–

''शनि भौमोऽथवा काश्चित पापो वा तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत ।। ''

यदि कन्यादि की जन्मादि कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित हो और उन्हीं स्थानों में वर की कुण्डली में शनि, मंगल, राहु, सूर्य आदि पापग्रह बैठे हो तो मांगलिक दोष भंग हो जाता है।

अन्य शास्त्रोक्त परिहार –

1– मेष राशि का मंगल लग्न में वृश्चिक का चतुर्थ भाव में मकर का सप्तम भाव में कर्क का अष्टम में तथा धनु राशिस्थ मंगल द्वादश में स्थित हो तो मंगलीक दोष नही होता है।

2– यदि मंगल वक्री अथवा नीच राशिगत हो।

3– मीन राशि का मंगल सप्तम में तथा कुम्भ का मंगल अष्टमस्थ हो।

4–द्वितीय भाव में चन्द्र–शुक्र योग हो अथवा मंगल पर गुरू की दृष्टि हो या केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु–मंगल का योग हो।

5–केन्द्र या त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हो तथा 3,6,11 (त्रिषडाय) में पाप ग्रह हो तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में हो तो।

6–''राशिमैत्रं यदि याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।। यदि वर एवं कन्या की राशिमैत्री हो एक गण हो तथा 27 से अधिक गुण हो तो मांगलिक दोष नही होता है।

विवाह में जन्म मासः नक्षत्रादि विचार–

आद्य गर्भ सुत कन्ययो द्वर्यो जन्म मास भतियौ कर ग्रहः ।

नोचितोऽथ विवुधौः प्रशस्थते चेद् द्वितीय जनुषोः सुपप्रद।। (मु.चि.)

प्रथम पुत्र या पुत्री का विवाह जन्म मास्, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के पश्चात् उत्पन्न पुत्र या पुत्री का विवाह जन्ममास नक्षत्रादि में करना शुभ है।

जन्ममासे चे पुत्राऽया धानाढ्या च धनोदये।

जन्म च जन्मराशै च कन्या हि ध्रुव सन्तति।।

शुक्राचार्य जी के अनुसार जन्ममास, जन्म नक्षत्र, जन्मकाल में विवाह होने पर सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

जन्ममासे व जन्मर्क्षे जन्मलग्न तद् जन्मादि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत। (भृग)

।। जन्म नक्षत्र विचार।।

जातक का जन्म नक्षत्र–अन्नप्राशन, उपनयन,मुंडन राज्याभिषेक, जन्मादि कृत्यों में प्रशस्त माना है। परन्तु यात्रा, सीमान्तोनयन तथा विवाहादि कार्यो में जन्मनक्षत्र अनिष्टकारक होता है।

बालान्भूक्तौ व्रतबन्हनोऽपि राज्याभिषेक खलु जन्मधिण्यम्

शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमान्त यागादिषु मांगलेषु ।। वशिष्ठ।।

किन्तु ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री का विवाह जन्ममास या जन्म नक्षत्र में करने का निषेध किया गया है।

न जन्मो जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपिवा।
आद्य गर्भ सुतरस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः।। नारद।।

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14	अप्रैल 2025	सोम	मिथुन-कर्क सिंह लग्न (प्रातः 09:41 से सांय 04:31) वृश्चिक ल0 (रात्रि 09:04 से मध्यरात्रि 11:23 तक)
16	अप्रैल	बुध	धनु-मेष लग्न (मध्यरात्रि 12:18 से अंतरात्रि 0:55), कुम्भ लग्न (मध्य रात्रि 03:03 से अंतरात्रि 04:17 तक)
18	अप्रैल	शुक्र	सिंह ल0(दोपहर 02:03 से सांय 04:15), गोधुलि (सांय 06:49 से सांय 07:12), वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:47 से 11:07), कुम्भ ल0 (रात्रि 02:55 से अंतरात्रि 04:24 तक)
19	अप्रैल	शनि	वृष-मिथुन ल0 (प्रातः 07:25 से 10:21 तक)
20	अप्रैल	रवि	गोधुलि ल0 (सांय 06:50 से 07:13) वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:41 से 10:59) कुम्भ ल0 (अंतरात्रि 02:47 से 04:17 तक)
21	अप्रैल	सोम	वृष-कर्क ल0 (प्रातः 07:17 से दोपहर 01:45), वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:37 से 10:55), कुम्भ-मीन ल0 (मध्य रात्रि 12:43 से अंतरात्रि 05:39 तक)
22	अप्रैल	मंगल	कर्क ल0 (11:24 से दोपहर 01:43), गोधुलि ल0 (सांय 06:51 से 07:13), वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:33 से 10:51), मीन ल0 (अंतरात्रि 04:09 से 05:33 तक
25	अप्रैल	शुक्र	मिथुन-कर्क ल0 (प्रातः 09:38 से 11:45 तक)
29	अप्रैल	मंगल	वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:58 से 10:23), कुम्भ-मीन ल0 (रात्रि 02:11 से अंतरात्रि 05:07 तक)
30	अप्रैल	बुध	मिथुन-कर्क-सिंह ल0 (प्रातः 08:37 से दोपहर 03:25), वृश्चिक ल0 (रात्रि 08:01 से 10:18 तक)
01	मई	गुरू	कर्क- सिंह ल0 (प्रातः 11:23 से दोपहर 02:21 तक)
05	मई	सोम	सिंह ल0 (दोपहर 02:01 से दोपहर 03:06) गोधुलि (सांय 06:57 से 07:19)वृश्चिक ल0 (सांय 07:41 से रात्रि 09:57), कुम्भ ल0 (मध्यरात्रि 01:47 से मध्यरात्रि 02:50 तक)
06	मई	मंगल	वृष-मिथुन-कर्क ल0 (प्रातः 06:17 से दोपहर 12:47 तक)
07	मई	बुध	तुला-वृश्चिक-धनु ल0 (सांय 06:16 से मध्यरात्रि 11:21) कुम्भ ल0 (मध्यरात्रि 01:37 से अंतरात्रि 03:08)
08	मई	गुरू	सिंह-वृश्चिक ल0 (दोपहर 12:30 से रात्रि 09:05 तक)
10	मई	शनि	मीन ल0 (अंतरात्रि 03:05 से 04:01 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
13	मई	मंगल	कुम्भ-मीन ल0 (मध्यरात्रि 01:16 से अंतरात्रि 04:12 तक)
15	मई	गुरू	कन्या ल0 (दोपहर 02:55 से 03:19), गोधुलि ल0 (सांय 07:03 से 07:24 तक)
17	मई	शनि	गोधुलि ल0 (सांय 07:07 से 07:25), धनु ल0 (रात्रि 09:11 से 11:14), कुम्भ-मीन ल0 (मध्यरात्रि 01:00 से अंतरात्रि 03:56), मेष ल0 (अंतरात्रि 03:55 से 05:33 तक)
18	मई	रवि	वृष-कर्क ल0 (प्रात: 05:43 से दोपहर 12:01 तक)
19	मई	सोम	वृष ल0 (प्रात: 05:41 से 06:11), तुला-वृश्चिक ल0 (सांय 06:05 से 07:30 तक)
22	मई	गुरू	गोधुलि ल0 (सांय 07:07 से 07:28), मेष ल0 (अंतरात्रि 03:37 से 05:14 तक)
23	मई	शुक्र	मिथुन ल0 (प्रात: 07:07 से 09:21), गोधुलि (सांय 07:06 से 07:27), धनु ल0 (रात्रि 08:47 से 10:52), मेष ल0 (अंतरात्रि 03:33 से 05:10 तक)
24	मई	शनि	मिथुन ल0 (प्रात: 07:03 से 09:17), कन्या-वृश्चिक ल0 (दोपहर 02:36 से सायं 07:20 तक)
28	मई	बुध	वृष-मिथुन ल0 (प्रात: 05:51 से 07:07), गोधुलि ल0 (सायं 07:10 से 07:30) धनु-मकर ल0 (रात्रि 09:08 से मध्यरात्रि 12:21 तक)
01	जून	रवि	धनु ल0 (रात्रि 09:35 से 10:16), कुम्भ ल0 (मध्यरात्रि 12:01 से 01:30) मेष-वृष ल0 (मध्य रात्रि 02:56 से अंतरात्रि 05:37 तक)
02	जून	सोम	वृष-कर्क ल0 (प्रात: 05:38 से 11:00), गोधुलि ल0 (सांय 07:11 से 07:31), धनु ल0 (रात्रि 08:12 से 10:11 तक)
04	जून	बुध	वृश्चिक-मेष ल0 (सांय 07:41 से अंतरात्रि 03:35 तक)
07	जून	शनि	कर्क-सिंह ल0 (प्रात: 08:21 से दोपहर 12:55), गोधुलि ल0 (सांय 07:14 से 07:35 तक), धनु-मकर ल0 (सायं 07:14 से रात्रि 11:35), मीन ल0 (रात्रि 01:05 से 02:33 तक)
08	जून	रवि	मिथुन-कर्क-सिंह ल0 (प्रात: 06:02 से दोपहर 12:41 तक)
09	जून	सोम	गोधुलि ल0 (सांय 07:15 से 07:35 तक)
10	जून	मंगल	वृश्चिक ल 0 (सांय 05:17 ये 06:01 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
			अग्रलिखित समयावधि के मुहूर्त केवल पंजाब, कश्मीर, हरियाणा, सिन्ध, हिमाचल आदि प्रान्तों में ही मान्य होंगे अन्य स्थानों में ये मुहूर्त शास्त्रीय नहीं है। देवशयन/कर्क संक्रान्ति/तुला संक्रान्ति दोष आरम्भ (06 जुलाई से 13 नवम्बर 2025 तक)
11	जुलाई	शुक्र	कुम्भ-मिथुन ल0 (रात्रि 09:56 से अंतरात्रि 05:31 तक)
12	जुलाई	शनि	मिथुन-वृष ल0 (प्रात: 05:45 से अगली प्रात: 05:43 तक)
13	जुलाई	रवि	मिथुन ल0 (प्रात: 05:45 से 06:01), कर्क-तुला ल0 (प्रात: 06:51 से दोपहर 01:27 तक)
20	जुलाई	रवि	मीन-मिथुन ल0 (रात्रि 10:53 से अंतरात्रि 05:35 तक)
21	जुलाई	सोम	कर्क-मिथुन ल0 (प्रात: 05:50 से अंतरात्रि 05:37 तक)
22	जुलाई	मंगल	कर्क ल0 (प्रात: 05:50 से 07:07 तक)
26	जुलाई	शनि	मिथुन ल0 (अंतरात्रि 04:06 से अंतरात्रि 04:51 तक)
28	जुलाई	सोम	मेष-कर्क ल0 (मध्यरात्रि 11:25 से अंतरात्रि 05:40 तक)
29	जुलाई	मंगल	कर्क ल0 (प्रात: 05:53 से सायं 07:27 तक)
31	जुलाई	गुरू	वृष-मिथुन ल0 (मध्यरात्रि 12:41 से अंतरात्रि 04:47 तक)
01	अगस्त	शुक्र	मकर-मिथुन ल0 (सांय 06:16 से अंतरात्रि 03:40 तक)
03	अगस्त	रवि	कर्क-मिथुन ल0 (प्रात: 06:35 से अंतरात्रि 05:43 तक
04	अगस्त	सोम	कर्क-सिंह ल0 (प्रात: 05:57 से 09:12 तक)
07	अगस्त	गुरू	वृश्चिक-कर्क ल0 (दोपहर 02:01 से अंतरात्रि 05:46 तक)
08	अगस्त	शुक्र	कर्क-वृश्चिक (प्रात: 05:59 से दोपहर 02:12)
09	अगस्त	शनि	कर्क-सिंह-कन्या ल0 (प्रात: 05:59 से दोपहर 02:23 तक)
13	अगस्त	बुध	मेष-कर्क ल0 (रात्रि 10:33 से अंतरात्रि 05:50 तक)
14	अगस्त	गुरू	सिंह ल0 (प्रात: 06:12 से प्रात: 08:17 तक)
17	अगस्त	रवि	कन्या-तुला-वृश्चिक ल0 (प्रात: 08:17 से मध्यरात्रि 02:50)
24	अगस्त	रवि	मिथुन-कर्क (मध्यरात्रि 02:06 से अंतरात्रि 05:55 तक)
25	अगस्त	सोम	सिंह-कर्क ल0 (प्रात: 06:07 से अंतरात्रि 03:50 तक)
28	अगस्त	गुरू	तुला-सिंह ल0 (प्रात: 11:47 से अंतरात्रि 05:57 तक)
29	अगस्त	शुक्र	सिंह-कन्या-तुला ल0 (प्रात: 06:10 से प्रात: 11:37 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
30	अगस्त	शनि	धनु ल0 (दोपहर 02:36 से दोपहर03:09 तक)
31	अगस्त	रवि	मकर ल0 (सांय 05:11 से 05:27 तक)
01	सितम्बर	सोम	मेष-सिंह ल0 (रात्रि 08:43 से अंतरात्रि 06:00 तक)
02	सितम्बर	मंगल	कन्या ल0 (प्रात: 06:12 से प्रात: 08:57 तक) , धनु-मेष ल0 (दोपहर 03:25 से 09:51 तक)
03	सितम्बर	बुध	कर्क-सिंह ल0 (अंतरात्रि 04:21 से 06:01 तक)
04	सितम्बर	गुरू	सिंह-वृष ल0 (प्रात: 06:11 से मध्यरात्रि 11:44) सिंह ल0 (अंतरात्रि 05:46 से 06:01 तक)
05	सितम्बर	शुक्र	सिंह-वृश्चिक ल0 (प्रात: 06:11 से दोपहर 01:51 , मकर-कुम्भ ल0 (सायं 04:15 से 06:13 तक)
26	सितम्बर	शुक्र	वृष-कन्या ल0 (रात्रि 10:09 से अंतरात्रि 06:11 तक)
27	सितम्बर	शनि	कन्या ल0 (प्रात: 06:21 से 07:07 तक)
28	सितम्बर	रवि	सिंह कन्या ल0 (अंतरात्रि 04:41 से 06:13 तक)
29	सितम्बर	सोम	कन्या-वृश्चिक ल0 (प्रात: 06:23 से 10:33) , कन्या ल0 (अंतरात्रि 05:24 से 06:14 तक)
01	अक्टूबर	बुध	तुला-कन्या ल0 (प्रात: 08:06 से अंतरात्रि 06:15 तक)
02	अक्टूबर	गुरू	कन्या-सिंह ल0 (प्रात: 06:23 से अंतरात्रि 06:15 तक)
03	अक्टूबर	शुक्र	कन्या ल0 (प्रात: 06:23 से 06:57) , मेष-वृष ल0 (सांय 06:32 से रात्रि 09:27 तक)
04	अक्टूबर	शनि	कन्या-तुला ल0 (प्रात: 06:25 से 09:07 तक)
07	अक्टूबर	मंगल	धनु-मेष ल0 (दोपहर 01:07 से रात्रि 08:08 तक)
10	अक्टूबर	शुक्र	मीन (सांय 05:31 से 05:41 तक)
11	अक्टूबर	शनि	मकर-कन्या ल0 (दोपहर 02:05 से अंतरात्रि 06:20 तक)
12	अक्टूबर	रवि	कन्या -तुला-वृश्चिक ल0 (प्रात: 06:29 से प्रात: 10:55 तक)
22	अक्टूबर	बुध	वृष-कर्क (रात्रि 08:17 से मध्यरात्रि 01:50 तक)
23	अक्टूबर	गुरू	कन्या-तुला ल0 (अंतरात्रि 04:51 से अंतरात्रि 06:27 तक)
24	अक्टूबर	शुक्र	तुला-कन्या ल0 (प्रात: 06:41 से अंतरात्रि 06:39 तक)
25	अक्टूबर	शनि	वृष-तुला ल0 (सायं 07:09 से प्रात: 06:41 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
26	अक्टूबर	रवि	मेष-तुला ल0 (सांय 05:27 से अंतरात्रि 06:30 तक)
27	अक्टूबर	सोम	तुला-मकर ल0 (प्रात: 06:37 से दोपहर 01:27 तक)
28	अक्टूबर	मंगल	मीन-तुला ल0 (दोपहर 03:45 से अंतरात्रि 06:31 तक)
29	अक्टूबर	बुध	तुला ल0 (प्रात: 06:38 से 07:51 तक)
30	अक्टूबर	गुरू	वृष-तुला ल0 (सांय 06:33 से अंतरात्रि 06:30 तक)
31	अक्टूबर	शुक्र	तुला-वृश्चिक ल0 (प्रात: 06:40 से 09:40), मकर-वृष ल0 (दोपहर 01:43 से सांय 06:51 तक)
02	नवम्बर	रवि	मेष-तुला ल0 (सांय 05:03 से अंतरात्रि 06:35 तक)
03	नवम्बर	सोम	तुला-कुम्भ ल0 (प्रात: 06:41 से दोपहर 03:06), मीन-वृष ल0 (दोपहर 03:19 से सायं 07:39 तक), मि0 -तुला ल0 (रात्रि 08:51 से अं.रा. 06:35 तक)
04	नवम्बर	मंगल	तुला-धनु ल0 (प्रात: 06:43 से 11:46 तक)
07	नवम्बर	शुक्र	मकर-मिथुन ल0 (दोपहर 12:34 से रात्रि 09:16 तक)
08	नवम्बर	शनि	वृश्चिक-धनु ल0 (प्रात: 07:31 से रात्रि 10:02 तक)
12	नवम्बर	बुध	वृष-तुला ल0 (सांय 07:21 से अंतरात्रि 06:41 तक)
13	नवम्बर	गुरू	तुला-वृश्चिक ल0 (प्रात: 06:51 से 07:37 तक)
			देव शयन दोष/कर्क संक्रान्ति, तुला संक्रान्ति दोष समाप्त 22 नवम्बर 2025 से 12 मार्च 2026 तक विवाह मुहूर्त सम्पूर्ण भारत के लिये।
22	नवम्बर	शनि	कर्क-सिंह ल0 (रात्रि 11:38 से 01:53 तक), तुला-वृश्चिक ल0 (अंतरात्रि 04:10 से 06:50 तक)
23	नवम्बर	रवि	मीन ल0 (दोपहर 02:07 से 03:35), मिथुन ल0 (सांय 07:12 से रात्रि 09:27 तक)
24	नवम्बर	सोम	कर्क-वृश्चिक ल0 (रात्रि 09:53 से अंतरात्रि 06:52 तक)
25	नवम्बर	मंगल	मीन ल0 (दोपहर 01:51 से 03:19 तक), गोधुलि ल0 (सायं 05:29 से 05:56) मिथुन-कर्क ल0 (सायं 06:53 से रात्रि 11:06 तक), तुला ल0 (अंतरात्रि 03:58 से 06:16 तक)
26	नवम्बर	बुध	वृश्चिक-धनु-मकर ल0 (प्रात: 07:00 से प्रात: 11:15 तक)
27	नवम्बर	गुरू	मकर ल0 (प्रात: 10:58 से दोपहर 12:09), गोधुलि (सायं 05:29 से सायं 05:55) मीन-सिंह ल0 (दोपहर 01:51 से मध्यरात्रि 01:41 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
29	नवम्बर	शनि	कन्या-वृश्चिक ल0 (मध्यरात्रि 02:22 से अंतरात्रि 07:03 तक)
30	नवम्बर	रवि	वृश्चिक-मकर ल0 (प्रात: 07:03 से दोपहर 12:00), गोधुलि (सायं 05:29 से 05:56), कर्क-सिंह ल0 (रात्रि 08:47 से मध्यरात्रि 01:21 तक)
04	दिसम्बर	गुरू	मिथुन-कर्क ल0 (सायं 06:41 से रात्रि 10:37 तक)
05	दिसम्बर	शुक्र	धनु ल0 (प्रात: 07:55 से 08:28 तक)
06	दिसम्बर	शनि	धनु ल0 (प्रात: 08:07 से 08:29 तक)
05	फरवरी 2026	गुरू	मेष-वृष ल0 (प्रात: 10:37 से दोपहर 02:11) गोधुलि ल0 (सायं 06:07 ये 06:33 तक)
06	फरवरी	शुक्र	मिथुन ल0 (दोपहर 02:07 से सायं 04:21), गोधुलि ल0 (सायं 06:07 से 06:33 तक)
10	फरवरी	मंगल	कुम्भ-मीन ल0 (प्रात: 07:55 से 10:17), वृष ल0 (प्रात: 11:55 से दोपहर 01:51), गोधुलि ल0 (सायं 06:11 से 06:36), तुला ल0 (रात्रि 10:57 से मध्यरात्रि 01:15 तक)
13	फरवरी	शुक्र	कुम्भ-मीन ल0 (प्रात: 07:11 से 08:39), वृष-मिथुन ल0 (प्रात: 11:43 से दोपहर 03:54), धनु ल0 (अंतरात्रि 02:57 स`05:01 तक)
20	फरवरी	शुक्र	मेष-मिथुन ल0 (प्रात: 09:37 से दोपहर 03:25) वृश्चिक ल0 (मध्यरात्रि 12:35 से मध्यरात्रि 02:53 तक)
04	मार्च	बुध	धनु-मकर ल0 (मध्यरात्रि 02:05 से अंतरात्रि 05:55 तक)
09	मार्च	सोम	कर्क ल0 (दोपहर 04:11 से सायं 04:37), गोधुलि (सायं 06:30 से 06:54 तक)
10	मार्च	मंगल	मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या ल0 (दोपहर 12:40 से सायं 07:05 तक)
11	मार्च	बुध	तुला-मीन ल0 (रात्रि 10:47 से अंतरात्रि 06:35 तक)
12	मार्च	गुरू	मीन-मेष ल0 (प्रात: 06:47 से 09:55 तक)

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
02	अप्रैल	बुध	प्रातः 10:57 से दोपहर 12:31 तक
07	अप्रैल	सोम	प्रातः 09:21 से प्रातः 10:55 तक
09	अप्रैल	बुध	प्रातः 10:55 से दोपहर 12:30 तक
14	अप्रैल	सोम	प्रातः 06:08 से प्रातः 07:41 तक
18	अप्रैल	शुक्र	प्रातः 06:04 से प्रातः 10:50 तक
30	अप्रैल	बुध	प्रातः 11:55 से दोपहर 12:24 तक
01	मई	गुरू	प्रातः 11:57 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	प्रातः 11:56 से प्रातः 12:51 तक
07	मई	बुध	प्रातः 05:47 से प्रातः 09:03 तक
08	मई	गुरू	प्रातः 10:43 से दोपहर 12:23 तक
18	मई	रवि	प्रातः 07:21 से दोपहर 12:22 तक
28	मई	बुध	प्रातः 05:38 से प्रातः 08:57 तक
29	मई	गुरू	प्रातः 10:42 से दोपहर 12:24 तक
31	मई	शनि	प्रातः 11:57 से दोपहर 12:52 तक
07	जून	शनि	प्रातः 11:58 से दोपहर 12:53 तक
04	फरवरी 2026	बुध	प्रातः 07:15 से प्रातः 09:56 तक
19	फरवरी	गुरू	प्रातः 11:16 से दोपहर 12:41 तक
21	फरवरी	शनि	दोपहर 01:01 से दोपहर 01:47 तक
05	मार्च	गुरू	प्रातः 11:11 से दोपहर 12:37 तक

नोट- उपरोक्त मुहूर्त में यज्ञोपवीत संस्कार कराने से पूर्व जन्म राशि से चन्द्रमा 4-8-12 विशेष विचारणीय है। उपरोक्त स्थिति में मुहूर्त का त्याग करे। दिये गये मुहूर्त के अतिरिक्त स्वंय सिद्ध मुहूर्त श्रावणी पुर्णिमा एवं साम - ऋक एवं यजु उपाकर्म के समय भी उपनयन संस्कार किया जा सकता है।

चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
23	अप्रैल 2025	बुध	प्रात: 10:48 से दोपहर 12:07 तक
24	अप्रैल	गुरू	प्रात: 05:58 से प्रात: 07:33 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:50 तक
14	मई	बुध	प्रात: 11:46 से दोपहर 12:23 तक
15	मई	गुरू	प्रात: 10:43 से दोपहर 02:07 तक
28	मई	बुध	प्रात: 10:41 से दोपहर 12:24 तक
05	जून	गुरू	प्रात: 10:43 से दोपहर 03:51 तक
06	जून	शुक्र	प्रात: 05:36 से प्रात: 10:43 तक
06	फरवरी 2026	शुक्र	प्रात: 07:14 से प्रात: 11:19 तक
11	फरवरी	बुध	प्रात: 11:18 से दोपहर 12:41 तक
12	फरवरी	गुरू	प्रात: 11:17 से दोपहर 01:42 तक
05	मार्च	गुरू	प्रात: 11:11 से दोपहर 03:35 तक
			नोट- मुण्डन संस्कार, विषम वर्ष, मल मास, गुरू-शुक्र अस्त एवं माता गर्भवती ना हो, ग्रहण अधिकमास एवं होलाष्टक में वर्जित है। दिये गये मुहूर्तो में राशि से चन्द्रमा 4-8-12 ना हो ये विशेष विचारणीय है।

नींव खुदाई एवं गृहारम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
			गृहारम्भ मुहूर्त (वायव्य) कोण
14	अप्रैल	सोम	प्रात: 06:07 से प्रात: 07:41 तक
21★	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:11 से प्रात: 10:49 तक
23★	अप्रैल	बुध	प्रात: 05:59 से प्रात: 09:11 तक
24★	अप्रैल	गुरू	प्रात: 05:57 से प्रात: 07:33 तक
25	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 11:59 से दोपहर 12:51 तक
30	अप्रैल	बुध	प्रात: 10:46 से दोपहर 12:02 तक
01★	मई	गुरू	प्रात: 11:58 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:51 तक
07	मई	बुध	प्रात: 05:51 से प्रात: 10:45 तक
08	मई	गुरू	प्रात: 05:47 से प्रात: 07:24 तक
12	मई	सोम	प्रात: 05:45 से प्रात: 06:17 तक
			गृहारम्भ मुहूर्त (नैर्ऋत्य) कोण
19	मई	सोम	प्रात: 09:01 से प्रात: 10:19 तक
24	मई	शनि	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:51 तक
28★	मई	बुध	प्रात: 05:38 से प्रात: 08:59 तक
07	जून	शनि	प्रात: 07:17 से प्रात: 08:58 तक
12	जून	शनि	प्रात: 07:25 से प्रात: 09:07 तक
21★	जून	सोम	प्रात: 09:10 से प्रात: 09:39 तक
25	जून	शुक्र	दोपहर 12:06 से दोपहर 01:00 तक
01	जुलाई	शुक्र	प्रात: 05:55 से प्रात: 10:53 तक
07	जुलाई	गुरू	दोपहर 12:06 से दोपहर 12:59 तक
09	अगस्त	शनि	दोपहर 12:05 से दोपहर 12:57 तक
11	अगस्त	सोम	प्रात: 10:34 से प्रात: 10:53 तक
			गृहारम्भ मुहूर्त (आग्नेय) कोण
18	अगस्त	सोम	दोपहर 12:04 से दोपहर 12:56 तक
25★	अगस्त	सोम	दोपहर 12:35 से दोपहर 12:54 तक

नींव खुदाई एवं गृहारम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
28★	अगस्त	गुरू	प्रात: 06:08 से प्रात: 07:41 तक
29	अगस्त	शुक्र	प्रात: 06:09 से प्रात: 10:51 तक
30	अगस्त	शनि	प्रात: 07:42 से प्रात: 09:17 तक
04	सितम्बर	गुरू	प्रात: 06:11 से प्रात: 07:43 तक
22	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:34 से प्रात: 09:21 तक
24★	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:35 से प्रात: 10:45 तक
03	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:25 से प्रात: 10:47 तक
07	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 11:48 से दोपहर 12:32 तक
08	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:03 से प्रात: 09:26 तक
15★	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:09 से प्रात: 09:30 तक
04	दिसम्बर	गुरू	प्रात: 11:56 से दोपहर 12:38 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 07:07 से प्रात: 10:59 तक
06	दिसम्बर	शनि	प्रात: 08:21 से प्रात: 08:47 तक
21★	फरवरी 2026	शनि	प्रात: 08:25 से प्रात: 09:50 तक

नोट- गृह निर्माण में नींव खुदाई की दिशा ज्ञात करने के लिए राहु के मुख पुंच्छ व उदर की स्थिति उस भूखण्ड मे ज्ञात करना आवश्यक है। नींव खुदाई का आरम्भ पूर्वादि दिशाओं से करना निषेध है। अपितु उप दिशाओं (आग्नेयादि) से उचित है। नींव प्रारम्भ राहु का मुख, उदर व पुंच्छ होने से गृहस्वामी के लिए पीड़ादायक है। इसमें देव शयन का विचार नहीं किया जाता है। सूर्य के नक्षत्र 5-7-9-12-19-26 वे दिन भूमि शयन का दोष होता है। केवल इसका त्याज्य करें। (शुद्ध गृहारम्भ मुहूर्त के आगे कोई भी चिन्ह नही है। तथा जिनके आगे (★) तारे का चिन्ह है वे मुहूर्त वृष चक्र रहित है।

गृह प्रवेश मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14★	अप्रैल	सोम	प्रात: 06:07 से प्रात: 07:41 तक
21	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:49 तक
23★	अप्रैल	बुध	प्रात: 05:59 से प्रात: 09:11 तक
24★	अप्रैल	गुरू	प्रात: 05:58 से प्रात: 07:33 तक
25	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 11:59 से दोपहर 12:51 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:58 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	प्रात: 11:58 से दोपहर 12:49 तक
03★	मई	शनि	प्रात: 07:27 से प्रात: 09:06 तक
07	मई	बुध	प्रात: 05:48 से प्रात: 09:03 तक
08	मई	गुरू	प्रात: 05:47 से प्रात: 07:24 तक
10★	मई	शनि	प्रात: 07:23 से प्रात: 09:02 तक
12	मई	सोम	प्रात: 05:45 से प्रात: 06:17 तक
19	मई	सोम	प्रात: 09:01 से प्रात: 10:19 तक
23★	मई	शुक्र	प्रात: 05:39 से प्रात: 10:41 तक
24★	मई	शनि	प्रात: 07:18 से प्रात: 09:01 तक
28	मई	बुध	प्रात: 05:38 से प्रात: 08:59 तक
31	मई	शनि	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:52 तक
04	जून	बुध	प्रात: 05:36 से प्रात: 08:57 तक
06★	जून	शुक्र	प्रात: 05:35 से प्रात: 10:43 तक
07★	जून	शनि	प्रात: 09:00 से प्रात: 12:26 तक
11★	जुलाई	शुक्र	प्रात: 05:56 से प्रात: 10:50 तक
12★	जुलाई	शनि	प्रात: 07:25 से प्रात: 09:07 तक
14★	जुलाई	सोम	प्रात: 05:46 से प्रात: 06:49 तक
17★	जुलाई	गुरू	प्रात: 05:47 से प्रात: 07:27 तक
21★	जुलाई	सोम	प्रात: 09:10 से प्रात: 09:39 तक
25★	जुलाई	शुक्र	प्रात: 05:51 से प्रात: 10:52 तक
28★	जुलाई	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:53 तक
30★	जुलाई	बुध	प्रात: 05:54 से प्रात: 09:12 तक

गृह प्रवेश मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
31★	जुलाई	गुरू	प्रात: 10:53 से दोपहर 02:13 तक
01★	अगस्त	शुक्र	प्रात: 05:55 से प्रात: 10:53 तक
04★	अगस्त	सोम	प्रात: 05:57 से प्रात: 07:34 तक
07★	अगस्त	गुरू	प्रात: 05:58 से प्रात: 07:35 तक
15★	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:30 से प्रात: 09:20 तक
18★	अक्टूबर	शनि	प्रात: 07:55 से प्रात: 09:20 तक
22★	अक्टूबर	बुध	प्रात:06:34 से प्रात: 09:21 तक
23★	अक्टूबर	गुरू	प्रात: 06:35 से प्रात: 07:57 तक
24★	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:35 से प्रात: 10:46 तक
29★	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:39 से प्रात: 09:23 तक
31★	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:48 से प्रात: 10:47 तक
01★	नवम्बर	शनि	प्रात: 11:48 से दोपहर 12:31 तक
03	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:25 से प्रात: 10:47 तक
07	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 11:47 से दोपहर 12:32 तक
08	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:04 से प्रात: 09:26 तक
10	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:27 से प्रात: 10:49 तक
15★	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:09 से प्रात: 09:30 तक
17★	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:31 से प्रात: 10:51 तक
21★	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 06:55 से प्रात: 10:53 तक
24★	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:34 से प्रात: 10:54 तक
26★	नवम्बर	बुध	प्रात: 06:39 से प्रात: 09:35 तक
27	नवम्बर	गुरू	प्रात: 07:00 से प्रात: 08:16 तक
28★	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 07:00 से प्रात: 10:56 तक
29★	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:18 से प्रात: 09:34 तक
04	दिसम्बर	गुरू	प्रात: 10:58 से दोपहर 12:17 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 11:56 से दोपहर 12:38 तक
06	दिसम्बर	शनि	प्रात: 08:12 से प्रात: 08:49 तक
22★	दिसम्बर	सोम	दोपहर 12:05 से दोपहर 12:46 तक

गृह प्रवेश मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
24★	दिसम्बर	बुध	प्रातः 07 :17 से प्रातः 09:50 तक
25★	दिसम्बर	गुरू	प्रातः 07:16 से प्रातः 08:33 तक
26★	दिसम्बर	शुक्र	प्रातः 07:18 से प्रातः 11:09 तक
27★	दिसम्बर	शनि	प्रातः 08:34 से प्रातः 09:52 तक
31★	दिसम्बर	बुध	प्रातः 07:20 से प्रातः 09:53 तक
01★	जनवरी 2026	गुरू	प्रातः 07:20 से प्रातः 08:35 तक
05★	जनवरी	सोम	प्रातः 09:57 से प्रातः 11:14 तक
08★	जनवरी	गुरू	प्रातः 07:21 से प्रातः 08:37 तक
10★	जनवरी	शनि	प्रातः 08:38 से प्रातः 09:57 तक
12★	जनवरी	सोम	प्रातः 09:57 से प्रातः 11:16 तक
19★	जनवरी	सोम	प्रातः 09:58 से प्रातः 11:17 तक
23★	जनवरी	शुक्र	प्रातः 07:20 से प्रातः 11:18 तक
24★	जनवरी	शनि	प्रातः 08:37 से प्रातः 09:58 तक
28★	जनवरी	बुध	प्रातः 07:17 से प्रातः 09:58 तक
29★	जनवरी	गुरू	प्रातः 07:16 से प्रातः 07:31 तक
06	फरवरी	शुक्र	प्रातः 07:14 से प्रातः 11:19 तक
07	फरवरी	शनि	प्रातः 08:33 से प्रातः 09:56 तक
11★	फरवरी	बुध	प्रातः 07:10 से प्रातः 09:54 तक
14★	फरवरी	शनि	प्रातः 08:29 से प्रातः 09:53 तक
18★	फरवरी	बुध	प्रातः 07:05 से प्रातः 09:52 तक
19★	फरवरी	गुरू	प्रातः 07:04 से प्रातः 08: 26 तक
20★	फरवरी	शुक्र	प्रातः 07:30 से प्रातः 11:16 तक
21	फरवरी	शनि	प्रातः 08:25 से प्रातः 09:50 तक

नोट- आषाढ़ शुक्ल एकादशी मंगलवार 06 जुलाई 2024 से मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा शनिवार 16 नवम्बर 2024 तक कर्क/तुला संक्रान्ति एवं देवशयन दोष रहेगा।

शुद्ध गृहप्रवेश मुहूर्त के आगे कोई चिन्ह नहीं है। जीर्ण गृह प्रवेश के आगे (★) तारे का चिन्ह हे। जीर्ण गृहप्रवेश मुहुर्त में गुरू-शुक्र अस्त, अधिक मास, गुर्वादित्य दोष, कलश चक्र शुद्धि, होलाष्टक मलमास दोष का विचार नहीं किया जाता है। उपरोक्त मुहूर्त साधन से पहले गृह स्वामी को जन्म राशि से चन्द्र 4-8-12 विचारणीय है।

विद्या एवं अक्षरारम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14	अप्रैल	सोम	प्रात: 06:08 से प्रात: 07:41 तक
18	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 06:04 से प्रात: 10:50 तक
23	अप्रैल	बुध	प्रात: 05:59 से प्रात: 09:11 तक
24	अप्रैल	गुरू	प्रात: 10:47 से दोपहर 03:40 तक
25	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 11:59 से दोपहर 12:51 तक
30	अप्रैल	बुध	सायं 05:19 से सायं 06:55 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	प्रात: 05:51 से प्रात: 10:45 तक
07	मई	बुध	प्रात: 05:47 से प्रात: 09:04 तक
08	मई	गुरू	प्रात: 05:46 से प्रात: 07:24 तक
09	मई	शुक्र	सायं 05:23 से सायं 05:43 तक
14	मई	बुध	प्रात: 05:43 से प्रात: 09:02 तक
15	मई	गुरू	प्रात: 10:42 से दोपहर 02:07 तक
19	मई	सोम	प्रात: 05:41 से प्रात: 07:20 तक
22	मई	गुरू	प्रात: 10:41 से दोपहर 12:08 तक
28	मई	बुध	प्रात: 05:38 से प्रात: 08:59 तक
29	मई	गुरू	प्रात: 05:37 से प्रात: 07:17 तक
05	जून	गुरू	प्रात: 10:43 से दोपहर 03:51 तक
06	जून	शुक्र	प्रात: 05:36 से प्रात: 10:43 तक
08	जून	रवि	प्रात: 07:17 से दोपहर 12:26 तक
06	फरवरी 2026	शुक्र	प्रात: 07:14 से प्रात: 11:19 तक
11	फरवरी	बुध	प्रात: 07:10 से प्रात: 09:53 तक
12	फरवरी	गुरू	प्रात: 11:17 से दोपहर 01:42 तक
13	फरवरी	शुक्र	प्रात: 07:09 से प्रात: 11:17 तक
18	फरवरी	बुध	प्रात: 07:05 से प्रात: 09:52 तक
19	फरवरी	गुरू	प्रात: 11:16 से दोपहर 03:31 तक
			नोट- दिये गये मुहूर्तो के अतिरिक्त स्वंय सिद्ध (अबूझ) मुहूर्तो में भी यह संस्कार कर सकते है।

उद्योग (मशीनरी आरम्भ) मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
16	अप्रैल	बुध	दोपहर 03:39 से सायं 06:47 तक
23	अप्रैल	बुध	प्रातः 05:59 से प्रातः 09:11 तक
14	मई	बुध	प्रातः 05:43 से प्रातः 09:02 तक
11	जून	बुध	प्रातः 05:36 से प्रातः 09:01 तक
02	जुलाई	बुध	प्रातः 11:07 से दोपहर 12:31 तक
30	जुलाई	बुध	प्रातः 05:54 से प्रातः 09:12 तक
13	अगस्त	बुध	प्रातः 10:43 से दोपहर 12:30 तक
20	अगस्त	बुध	प्रातः 06:05 से प्रातः 09:15 तक
27	अगस्त	बुध	प्रातः 06:08 से प्रातः 09:17 तक
08	अक्टूबर	बुध	प्रातः 06:27 से प्रातः 09:16 तक
15	अक्टूबर	बुध	प्रातः 06:30 से प्रातः 09:19 तक
05	नवम्बर	बुध	प्रातः 06:43 से प्रातः 09:28 तक
24	दिसम्बर	बुध	प्रातः 07:17 से प्रातः 09:54 तक
14	जनवरी 2026	बुध	प्रातः 07:21 से प्रातः 09:49 तक
11	फरवरी	बुध	प्रातः 07:10 से प्रातः 09:51 तक
			नोट- दिये गये मुहूर्तो के अतिरिक्त स्वंय सिद्ध (अबूझ) मुहूर्तो में भी उद्योग (मशीनरी) आरम्भ कर सकते है।

भूमि-भवन, क्रय-विक्रय मुहूर्त वि0स0 2082 (सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
03	अप्रैल 2025	गुरू	प्रातः 10:57 से दोपहर 03:27 तक
01	मई	गुरू	प्रातः 11:58 से दोपहर 02:20 तक
02	जून	शुक्र	दोपहर 01:03 से दोपहर 02:03 तक
10	जुलाई	गुरू	प्रातः 10:50 से प्रातः 03:57 तक
11	जुलाई	शुक्र	प्रातः 05:44 से प्रातः 05:56 तक

भूमि-भवन, क्रय-विक्रय मुहूर्त
वि0स0 2082 (सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
26	सितम्बर	शुक्र	प्रात: 09:33 से प्रात: 10:47 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:37 तक
26	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 09:40 से प्रात:10:59 तक
23	जनवरी 2026	शुक्र	प्रात: 09:58 से प्रात: 11:17 तक
29	जनवरी	गुरू	प्रात: 11:19 से दोपहर 03:23 से
			नोट- दिये गये मुहूर्तो के अतिरिक्त विशेष पर्व एवं स्वंय सिद्ध (अबूझ) मुहूर्तो में भी भूमि-भवन का क्रय-विक्रय कर सकते है।

व्यवसाय आरम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
20	अप्रैल 2025	रवि	प्रात: 07:36 से दोपहर 12:26 तक
21	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:49 तक
24	अप्रैल	गुरू	प्रात: 05:58 से प्रात: 07:33 तक
25	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 11:59 से दोपहर 12:51 तक
30	अप्रैल	बुध	प्रात: 05:53 से प्रात: 09:07 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	दोपहर 01:04 से दोपहर 02:03 तक
03	मई	शनि	प्रात: 07:27 से प्रात: 09:06 तक
04	मई	रवि	प्रात: 07:26 से दोपहर12:12 तक
07	मई	बुध	प्रात: 05:48 से प्रात: 09:04 तक
08	मई	गुरू	प्रात: 10:44 से दोपहर12:24 तक

व्यवसाय आरम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
10	मई	शनि	प्रात: 07:23 से प्रात: 09:03 तक
12	मई	सोम	प्रात: 05:45 से प्रात: 06:17 तक
18	मई	रवि	प्रात: 11:56 से दोपहर 12:50 तक
19	मई	सोम	प्रात: 09:01 से प्रात: 10:19 तक
23	मई	शुक्र	प्रात: 10:42 से दोपहर 12:24 तक
24	मई	शनि	प्रात: 07:18 से प्रात: 09:00 तक
25	मई	रवि	प्रात: 07:17 से दोपहर 12:24 तक
28	मई	बुध	प्रात: 05:38 से प्रात: 08:59 तक
31	मई	शनि	प्रात: 11:57 से दोपहर12:52 तक
05	जून	गुरू	प्रात: 10:43 से दोपहर 12:26 तक
06	जून	शुक्र	प्रात: 05:36 से प्रात: 10:43 तक
07	जून	शनि	प्रात: 07:17 से प्रात: 08:59 तक
12	जुलाई	शनि	प्रात: 07:25 से प्रात: 09:07 तक
13	जुलाई	रवि	दोपहर 12:05 से दोपहर 12:59 तक
17	जुलाई	गुरू	प्रात: 10:51 से दोपहर 12:33 तक
18	जुलाई	शुक्र	प्रात: 05:48 से प्रात: 10:51 तक
21	जुलाई	सोम	प्रात: 09:10 से प्रात: 10:52 तक
25	जुलाई	शुक्र	प्रात: 05:51 से प्रात: 10:53 तक
30	जुलाई	बुध	प्रात: 05:54 से प्रात: 09:12 तक
31	जुलाई	गुरू	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:33 तक
01	अगस्त	शुक्र	प्रात: 05:55 से प्रात: 10:53 तक
03	अगस्त	रवि	प्रात: 07:33 से प्रात: 12:33 तक
04	अगस्त	सोम	प्रात: 09:13 से प्रात: 10:53 तक
07	अगस्त	गुरू	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:32 तक
08	अगस्त	शुक्र	दोपहर 12:06 से दोपहर 12:59 तक
09	अगस्त	शनि	दोपहर 12:05 से दोपहर 12:58 तक
13	अगस्त	बुध	प्रात: 06:36 से प्रात: 09:15 तक

व्यवसाय आरम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14	अगस्त	गुरू	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:31 तक
18	अगस्त	सोम	प्रात: 09:16 से प्रात: 10:53 तक
20	अगस्त	बुध	प्रात: 06:05 से प्रात :09:16 तक
25	अगस्त	सोम	दोपहर 12:35 से दोपहर 12:54 तक
27	अगस्त	बुध	प्रात: 06:08 से प्रात: 09:17 तक
28	अगस्त	गुरू	प्रात: 06:07 से प्रात: 08:43 तक
30	अगस्त	शनि	प्रात: 07:53 से प्रात: 09:17 तक
31	अगस्त	रवि	प्रात: 07:41 से दोपहर 12:27 तक
04	सितम्बर	गुरू	प्रात: 10:51 से दोपहर 12:26 तक
05	सितम्बर	शुक्र	दोपहर 12:01 से दोपहर 12:50 तक
22	सितम्बर	सोम	प्रात: 09:18 से प्रात: 10:49 तक
27	सितम्बर	रवि	दोपहर 12:03 से दोपहर 12:41 तक
02	अक्टूबर	गुरू	प्रात: 10:41 से दोपहर 12:16 तक
03	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 11:52 से दोपहर 12:40 तक
04	अक्टूबर	शनि	प्रात: 07:50 से प्रात: 09:10 तक
08	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:27 से प्रात: 09:19 तक
11	अक्टूबर	शनि	दोपहर 02:07 से सायं 04:34 तक
12	अक्टूबर	रवि	प्रात: 07:53 से प्रात: 10:55 तक
15	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:30 से प्रात: 09:20 तक
18	अक्टूबर	शनि	प्रात: 07:55 से प्रात: 09:21 तक
19	अक्टूबर	रवि	प्रात: 07:55 से दोपहर 12:12 तक
22	अक्टूबर	बुध	प्रात: 10:46 से दोपहर 12:11 तक
24	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:35 से प्रात: 10:46 तक
29	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:39 से प्रात: 09:23 तक
02	नवम्बर	रवि	प्रात: 08:01 से प्रात: 11:27 तक
03	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:25 से प्रात: 10:47 तक
05	नवम्बर	बुध	प्रात: 06:43 से प्रात: 09:25 तक

व्यवसाय आरम्भ मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
07	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 11:48 से दोपहर 12:31 तक
08	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:04 से प्रात: 09:26 तक
10	नवम्बर	सोम	प्रात: 11:49 से दोपहर 12:31 तक
15	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:09 से प्रात: 09:30 तक
17	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:31 से प्रात: 10:51 तक
21	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 06:55 से प्रात: 10:53 तक
27	नवम्बर	गुरू	प्रात: 10:55 से दोपहर 12:09 तक
30	नवम्बर	रवि	प्रात: 08:18 से दोपहर 12:16 तक
04	दिसम्बर	गुरू	सायं 04:11 से सायं 05:29 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 07:06 से प्रात: 10:59 तक
06	दिसम्बर	शनि	प्रात: 08:22 से प्रात: 08:47 तक
08	दिसम्बर	सोम	प्रात: 09:41 से प्रात: 11:00 तक
06	फरवरी 2026	शुक्र	प्रात: 07:11 से प्रात: 11:19 तक
07	फरवरी	शनि	प्रात: 08:33 से प्रात: 09:56 तक
11	फरवरी	बुध	प्रात: 07:10 से प्रात: 09:55 तक
20	फरवरी	शुक्र	प्रात: 07:03 से प्रात: 11:16 तक
21	फरवरी	शनि	प्रात: 08:25 से प्रात: 09:50 तक
22	फरवरी	रवि	प्रात: 08:24 से प्रात: 11:10 तक
04	मार्च	बुध	प्रात: 07:39 से प्रात: 09:44 तक
05	मार्च	गुरू	प्रात: 11:11 से दोपहर 12:38 तक
09	मार्च	सोम	प्रात: 09:41 से प्रात: 11:09 तक
			नोट- दिये गये मुहूर्तो के अतिरिक्त स्वंय सिद्ध (अबूझ) मुहूर्तो में भी व्यवसाय आरम्भ कर सकते है।

वाहन क्रय-विक्रय मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
03	अप्रैल	गुरू	प्रात: 10:57 से दोपहर 03:37 तक
05	अप्रैल	शनि	दोपहर 12:30 से सायं 05:11 तक
07	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:21 से प्रात: 10:55 तक
21	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:49 तक
23	अप्रैल	बुध	प्रात: 10:47 से दोपहर 12:25 तक
24	अप्रैल	गुरू	प्रात: 10:48 से दोपहर 03:40 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:58 से दोपहर 03:41 तक
02	मई	शुक्र	प्रात: 09:07 से प्रात: 10:45 तक
03	मई	शनि	दोपहर 12:24 से सायं 05:21 तक
09	मई	शुक्र	सायं 05:23 से सायं 07:00 तक
10	मई	शनि	दोपहर 12:32 से दोपहर 01:42 तक
14	मई	बुध	प्रात: 10:43 से दोपहर 12:23 तक
23	मई	शुक्र	प्रात: 09:00 से प्रात: 10:42 तक
24	मई	शनि	दोपहर 12:24 से दोपहर 01:47 तक
28	मई	बुध	प्रात: 10:41 से दोपहर12:24 तक
05	जून	गुरू	प्रात: 10:43 से दोपहर 03:51 तक
06	जून	शुक्र	प्रात: 07:17 से प्रात: 10:43 तक
07	जून	शनि	दोपहर12:26 से सायं 05:35 तक
12	जुलाई	शनि	दोपहर 12:31 से सायं 05:40 तक
17	जुलाई	गुरू	प्रात: 10:51 से दोपहर 03:57 तक
18	जुलाई	शुक्र	प्रात: 09:09 से प्रात: 10:51 तक
25	जुलाई	शुक्र	प्रात: 09:11 से प्रात: 10:52 तक
30	जुलाई	बुध	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:33 तक
31	जुलाई	गुरू	प्रात: 10:52 से दोपहर 03:54 तक
01	अगस्त	शुक्र	प्रात: 09:11 से प्रात: 10:51 तक
04	अगस्त	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:52 तक
11	अगस्त	सोम	प्रात: 10:34 से प्रात: 10:53 तक
13	अगस्त	बुध	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:31 तक

वाहन क्रय-विक्रय मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14	अगस्त	गुरू	प्रात: 10:53 से दोपहर 03:47 तक
18	अगस्त	सोम	प्रात: 09:16 से प्रात: 10:51 तक
20	अगस्त	बुध	प्रात: 10:53 से दोपहर 12:30 तक
27	अगस्त	बुध	दोपहर 12:24 से दोपहर 12:27 तक
30	अगस्त	शनि	दोपहर 12:27 से सायं 05:13 तक
05	सितम्बर	शुक्र	प्रात: 09:17 से प्रात: 10:51 तक
22	सितम्बर	सोम	प्रात: 09:18 से प्रात: 10:49 तक
24	सितम्बर	बुध	प्रात: 10:48 से दोपहर12:19 तक
27	सितम्बर	शनि	दोपहर 12:18 से सायं 04:47 तक
02	अक्टूबर	गुरू	प्रात: 10:47 से दोपहर 03:11 तक
03	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 09:19 से प्रात: 10:47 तक
04	अक्टूबर	शनि	दोपहर 12:15 से सायं 04:41 तक
08	अक्टूबर	बुध	प्रात: 10:47 से दोपहर12:14 तक
13	अक्टूबर	सोम	दोपहर 12:24 से दोपहर 12:36 तक
15	अक्टूबर	बुध	प्रात: 10:46 से दोपहर 12:12 तक
22	अक्टूबर	बुध	प्रात: 10:47 से दोपहर 12:11 तक
24	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 09:21 से प्रात: 10:47 तक
31	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 09:24 से प्रात: 10:47 तक
01	नवम्बर	शनि	दोपहर 12:10 से सायं 04:21 तक
03	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:25 से प्रात: 10:47 तक
05	नवम्बर	बुध	प्रात: 08:10 से प्रात: 09:40 तक
10	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:27 से प्रात: 10:49 तक
17	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:31 से प्रात: 10:51 तक
21	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 09:33 से प्रात: 10:53 तक
26	नवम्बर	बुध	प्रात: 10:55 से दोपहर 12:14 तक
27	नवम्बर	गुरू	प्रात: 10:54 से दोपहर 02:07 तक
28	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 09:35 से प्रात: 10:56 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 09:40 से प्रात: 10:59 तक

वाहन क्रय-विक्रय मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
06	दिसम्बर	शनि	दोपहर 12:17 से सायं 04:03 तक
08	दिसम्बर	सोम	प्रात: 09:41 से प्रात: 11:00 तक
06	फरवरी 2026	शुक्र	प्रात: 09:55 से प्रात: 11:19 तक
07	फरवरी	शनि	दोपहर 12:41 से दोपहर 01:21 तक
11	फरवरी	बुध	प्रात: 11:18 से दोपहर 12:41 तक
18	फरवरी	बुध	प्रात: 11:17 से दोपहर 12:42 तक
05	मार्च	गुरू	प्रात: 11:11 से दोपहर 03:40 तक
07	मार्च	शनि	दोपहर 12:38 से सायं 05:02 तक
09	मार्च	सोम	प्रात: 09:41 से प्रात: 11:09 तक
16	मार्च	सोम	प्रात: 09:42 से प्रात: 11:06 तक

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
14	अप्रैल	सोम	प्रात: 06:08 से प्रात: 07:41 तक
18	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 08:20 से प्रात: 10:50 तक
19	अप्रैल	शनि	प्रात: 07:37 से प्रात: 09:13 तक
20	अप्रैल	रवि	प्रात: 07:36 से दोपहर 12:26 तक
21	अप्रैल	सोम	प्रात: 09:12 से प्रात: 10:49 तक
24	अप्रैल	गुरू	प्रात: 05:57 से प्रात: 07:33 तक
25	अप्रैल	शुक्र	प्रात: 11:59 से दोपहर 12:51 तक
30	अप्रैल	बुध	प्रात: 10:46 से दोपहर 12:24 तक
01	मई	गुरू	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:50 तक
02	मई	शुक्र	प्रात: 05:51 से प्रात: 10:45 तक

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
03	मई	शनि	प्रात: 07:27 से प्रात: 09:06 तक
04	मई	रवि	प्रात: 07:27 से दोपहर 12:24 तक
07	मई	बुध	प्रात: 05:47 से प्रात: 09:04 तक
08	मई	गुरू	प्रात: 05:46 से प्रात: 07:23 तक
15	मई	गुरू	प्रात: 11:56 से दोपहर 12:50 तक
16	मई	शुक्र	प्रात: 05:41 से प्रात: 10:41 तक
18	मई	रवि	प्रात: 07:20 से दोपहर 12:23 तक
19	मई	सोम	प्रात: 09:01 से प्रात: 10:19 तक
25	मई	रवि	प्रात: 07:17 से दोपहर 12:24 तक
28	मई	बुध	प्रात: 05:38 से प्रात: 08:57 तक
29	मई	गुरू	प्रात: 05:37 से प्रात: 07:17 तक
31	मई	शनि	प्रात: 11:57 से दोपहर 12:51 तक
07	जून	शनि	प्रात: 11:58 से दोपहर 12:53 तक
08	जून	रवि	प्रात: 07:17 से दोपहर 12:26 तक
12★	जुलाई	शनि	दोपहर 12:05 से दोपहर 12:59 तक
13	जुलाई	रवि	प्रात: 07:25 से दोपहर12:33 तक
14	जुलाई	सोम	प्रात: 05:46 से प्रात: 07:26 तक
21	जुलाई	सोम	दोपहर 12:05 से दोपहर 01:00 तक
23	जुलाई	बुध	प्रात: 05:50 से प्रात: 09:10 तक
25	जुलाई	शुक्र	दोपहर 12:06 से दोपहर 01:01 तक
01	अगस्त	शुक्र	प्रात: 05:55 से प्रात: 10:53 तक
03	अगस्त	रवि	प्रात: 07:33 से दोपहर 12:33 तक
04	अगस्त	सोम	दोपहर12:06 से दोपहर12:59 तक
06	अगस्त	बुध	प्रात: 08:30 से प्रात: 09:14 तक
08	अगस्त	शुक्र	प्रात: 05:59 से प्रात: 10:53 तक
09	अगस्त	शनि	दोपहर 12:06 से दोपहर 12:58 तक
10★	अगस्त	रवि	दोपहर 12:10 से दोपहर 12:57 तक
11★	अगस्त	सोम	प्रात: 12:05 से दोपहर 12:56 तक
14	अगस्त	गुरू	प्रात: 06:02 से प्रात: 07:37 तक

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
17	अगस्त	रवि	दोपहर 12:04 से दोपहर 12:57 तक
18	अगस्त	सोम	दोपहर 12:03 से दोपहर 12:56 तक
20	अगस्त	बुध	प्रात: 06:05 से प्रात: 09:16 तक
25★	अगस्त	सोम	प्रात: 09:16 से प्रात: 10:53 तक
28★	अगस्त	गुरू	दोपहर 12:01 से दोपहर 12:51 तक
29	अगस्त	शुक्र	प्रात: 06:09 से प्रात: 10:52 तक
04★	सितम्बर	गुरू	प्रात: 06:11 से प्रात: 07:43 तक
05★	सितम्बर	शुक्र	प्रात: 06:12 से प्रात: 10:51 तक
22	सितम्बर	सोम	प्रात: 09:18 से प्रात: 10:47 तक
27★	सितम्बर	शनि	दोपहर 12:03 से दोपहर12:41 तक
28	सितम्बर	रवि	प्रात: 11:53 से दोपहर 12:42 तक
29	सितम्बर	सोम	प्रात: 11:52 से दोपहर 12:41 तक
01	अक्टूबर	बुध	प्रात: 08:06 से प्रात: 09:18 तक
02★	अक्टूबर	गुरू	प्रात: 06:24 से प्रात: 07:50 तक
03	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:23 से प्रात: 10:47 तक
04	अक्टूबर	शनि	प्रात: 07:50 से प्रात: 09:10 तक
10	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:27 से प्रात: 10:46 तक
12	अक्टूबर	रवि	प्रात: 07:53 से प्रात: 10:53 तक
15	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:30 से प्रात: 09:20 तक
22	अक्टूबर	बुध	प्रात: 06:34 से प्रात: 09:21 तक
24★	अक्टूबर	शुक्र	प्रात: 06:35 से प्रात: 10:45 तक
27	अक्टूबर	सोम	प्रात: 11:48 से दोपहर 12:33 तक
29	अक्टूबर	बुध	प्रात: 07:51 से प्रात: 09:51 तक
03★	नवम्बर	सोम	प्रात: 09:25 से प्रात: 10:47 तक
06	नवम्बर	गुरू	प्रात: 11:48 से दोपहर12:32 तक
07★	नवम्बर	शुक्र	प्रात: 11:47 से दोपहर 12:32 तक
08	नवम्बर	शनि	प्रात: 08:03 से प्रात: 09:26 तक
10★	नवम्बर	सोम	प्रात: 11:49 से दोपहर 12:32 तक
23★	नवम्बर	रवि	प्रात: 08:14 से दोपहर 12:09 तक

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त वि. सं. 2082
(सन् 2025-26 ई0)

ता0	मास	वार	मुहूर्त-काल
26★	नवम्बर	बुध	प्रात: 06:59 से प्रात: 09:35 तक
27★	नवम्बर	गुरू	प्रात: 07:00 से प्रात: 08:16 तक
30★	नवम्बर	रवि	प्रात: 08:18 से दोपहर 12:16 तक
05	दिसम्बर	शुक्र	प्रात: 07:06 से प्रात: 10:59 तक
06	दिसम्बर	शनि	प्रात: 08:22 से प्रात: 08:49 तक
08	दिसम्बर	सोम	प्रात: 09:42 से प्रात: 11:00 तक
05	फरवरी 2026	गुरू	दोपहर 12:19 से दोपहर 01:03 तक
07	फरवरी	शनि	प्रात: 08:33 से प्रात: 09:56 तक
13	फरवरी	शुक्र	प्रात: 07:09 से प्रात: 09:36 तक
16	फरवरी	सोम	प्रात: 09:51 से प्रात: 11:17 तक
18	फरवरी	बुध	प्रात: 07:05 से प्रात: 09:51 तक
21	फरवरी	शनि	प्रात: 08:25 से प्रात: 09:50 तक
05	मार्च	गुरू	प्रात: 06:51 से प्रात: 08:16 तक
11	मार्च	बुध	प्रात: 06:45 से प्रात: 09:39 तक

नोट- 16 जुलाई से 16 नवम्बर 2024 ई0 तक कर्क/तुला संक्रान्ति/ देव शयन दोष रहेगा।

देव प्रतिष्ठा का फल-पौष में प्रतिष्ठा करने से राज्य वृद्धि, माद्य में सम्पत्ति, फाल्गुन- द्रव्यलाभ, चैत्र शुभ, वैशाख विशेष सुख, ज्येष्ठ में जय, आषाढ में यजमान का नाश, श्रावण में राष्ट्र एवं राज्य हानि, भाद्रपद में अपमान, अश्विन में राज्य हानि, कार्तिक और मार्गशीष में शत्रु वृद्धि होती है। सामान्य रूप से वसन्त ऋतु सभी जातियों के लिए शुभ है। पौष मास में मकर संक्रान्ति के बाद ही शुभ होता है।

प्रतिष्ठा दोष- द्रव्यहीन प्रतिष्ठा यजमान का, मन्त्रहीन आचार्य का लक्ष्ण हीन लक्ष्मी का नाश करती है इसलिये विधिपूर्वक प्रतिष्ठा करनी चाहिये। ब्राहण, अग्नि और देवताओं को प्रसन्न करने के बाद।

रवि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
01 अप्रैल	11:57	2 अप्रैल	08:50	07 अगस्त	14:01	08 अगस्त	14:28
03 अप्रैल	07:03	4 अप्रैल	05:51	14 अगस्त	09:06	15 अगस्त	07:36
06 अप्रैल	05:32	8 अप्रैल	07:55	26 अगस्त	03:50	27 अगस्त	06:04
10 अप्रैल	12:25	11 अप्रैल	15:10	28 अगस्त	08:44	29 अगस्त	11:39
19 अप्रैल	10:21	20 अप्रैल	11:49	01 सितम्बर	19:55	03 सितम्बर	23:09
30 अप्रैल	16:18	01 मई	14:21	05 सितम्बर	23:39	06 सितम्बर	22:56
02 मई	13:04	03 मई	12:34	12 सितम्बर	11:59	13 सितम्बर	10:12
05 मई	14:01	07 मई	18:17	13 सितम्बर	15:40	14 सितम्बर	08:41
09 मई	24:09	11 मई	03:15	24 सितम्बर	16:17	25 सितम्बर	19:09
11 मई	13:17	12 मई	06:17	26 सितम्बर	22:09	27 सितम्बर	07:06
18 मई	18:53	19 मई	19:30	27 सितम्बर	25:08	29 सितम्बर	03:55
29 मई	22:39	30 मई	21:29	01 अक्टूबर	08:06	03 अक्टूबर	09:35
31 मई	21:08	01 जून	21:37	05 अक्टूबर	08:01	06 अक्टूबर	06:16
03 जून	24:59	06 जून	06:34	12 अक्टूबर	13:37	13 अक्टूबर	12:27
09 जून	15:31	10 जून	18:02	24 अक्टूबर	04:51	24 अक्टूबर	06:39
16 जून	25:14	17 जून	25:02	25 अक्टूबर	07:52	26 अक्टूबर	10:47
28 जून	06:36	29 जून	06:34	27 अक्टूबर	13:28	28 अक्टूबर	15:45
30 जून	07:21	01 जुलाई	08:54	30 अक्टूबर	18:34	01 नवम्बर	18:21
03 जुलाई	13:51	05 जुलाई	19:52	03 नवम्बर	15:06	04 नवम्बर	12:35
06 जुलाई	05:47	06 जुलाई	22:42	10 नवम्बर	18:49	11 नवम्बर	18:18
09 जुलाई	03:15	10 जुलाई	04:50	23 नवम्बर	19:28	24 नवम्बर	21:54
16 जुलाई	05:47	17 जुलाई	04:51	25 नवम्बर	23:58	26 नवम्बर	25:33
27 जुलाई	16:23	28 जुलाई	17:36	28 नवम्बर	26:50	30 नवम्बर	25:11
29 जुलाई	19:28	30 जुलाई	21:53	02 दिसम्बर	20:52	02 दिसम्बर	25:14
02 अगस्त	03:41	03 अगस्त	04:07	03 दिसम्बर	18:00	04 दिसम्बर	14:54
03 अगस्त	06:35	05 अगस्त	11:23	09 दिसम्बर	26:23	10 दिसम्बर	26:45

रवि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
23 दिसम्बर	05:32	24 दिसम्बर	07:08	27 जनवरी	11:09	29 जनवरी	07:32
25 दिसम्बर	08:19	26 दिसम्बर	09:01	31 जनवरी	03:28	31 जनवरी	25:34
28 दिसम्बर	08:44	29 दिसम्बर	06:30	07 फरवरी	26:29	09 फरवरी	05:03
29 दिसम्बर	07:41	31 दिसम्बर	03:59	20 फरवरी	20:08	21 फरवरी	19:07
(2026 ई0)				22 फरवरी	17:55	23 फरवरी	16:34
01 जनवरी	22:49	02 जनवरी	20:04	25 फरवरी	13:39	27 फरवरी	10:49
08 जनवरी	12:25	09 जनवरी	13:41	01 मार्च	08:35	02 मार्च	07:52
21 जनवरी	13:58	22 जनवरी	14:27	09 मार्च	16:12	10 मार्च	19:05
23 जनवरी	14:33	24 जनवरी	10:49				
24 जनवरी	14:16	25 जनवरी	13:36				

रवि योग तिथि -वार नक्षत्रादि से सम्बधित कुयोगो के दोषो को दूर कर देता है। सामान्यत: अन्न-गौ-भूदान, एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (प्रतिष्ठित पद) ग्रहण आदि मे इसका उपयोग किया जाता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
30 मार्च	16:34	31 मार्च	06:23	02 मई	13:04	03 मई	05:51
01 अप्रैल	11:06	02 अप्रैल	08:49	04 मई	05:50	04 मई	12:53
05 अप्रैल	05:20	05 अप्रैल	06:18	11 मई	03:15	11 मई	05:45
06 अप्रैल	06:17	07 अप्रैल	06:24	14 मई	05:43	14 मई	11:47
08 अप्रैल	06:14	08 अप्रैल	07:54	18 मई	05:41	18 मई	18:52
16 अप्रैल	06:06	17 अप्रैल	05:55	19 मई	05:41	19 मई	19:29
20 अप्रैल	11:48	21 अप्रैल	06:00	23 मई	16:02	24 मई	05:38
21 अप्रैल	12:37	22 अप्रैल	05:59	25 मई	05:39	25 मई	11:12
27 अप्रैल	05:56	27 अप्रैल	24:38	27 मई	05:32	27 मई	05:38
29 अप्रैल	05:54	29 अप्रैल	18:47	28 मई	05:38	28 मई	24:29
30 अप्रैल	05:53	30 अप्रैल	16:17	29 मई	22:38	30 मई	21:29

सवार्थ सिद्धि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
05 जून	03:35	05 जून	05:35	09 सितम्बर	06:14	09 सितम्बर	18:07
07 जून	09:39	08 जून	05:35	11 सितम्बर	06:14	11 सितम्बर	13:58
09 जून	15:31	10 जून	05:35	13 सितम्बर	10:11	14 सितम्बर	06:15
14 जून	24:21	15 जून	05:35	15 सितम्बर	06:16	15 सितम्बर	07:31
19 जून	23:16	20 जून	21:44	18 सितम्बर	06:17	18 सितम्बर	06:32
23 जून	15:16	24 जून	05:37	21 सितम्बर	09:32	22 सितम्बर	06:18
25 जून	05:38	25 जून	10:40	26 सितम्बर	22:09	27 सितम्बर	06:20
26 जून	08:46	27 जून	07:21	29 सितम्बर	03:54	29 सितम्बर	06:21
02 जुलाई	11:07	03 जुलाई	05:40	03 अक्टूबर	06:24	03 अक्टूबर	09:34
05 जुलाई	05:42	05 जुलाई	19:51	06 अक्टूबर	06:16	06 अक्टूबर	06:25
07 जुलाई	05:43	07 जुलाई	25:11	07 अक्टूबर	25:28	08 अक्टूबर	06:26
12 जुलाई	06:36	13 जुलाई	05:44	11 अक्टूबर	06:28	11 अक्टूबर	15:20
17 जुलाई	05:47	18 जुलाई	03:39	19 अक्टूबर	06:32	19 अक्टूबर	17:49
18 जुलाई	05:48	18 जुलाई	26:13	24 अक्टूबर	04:51	25 अक्टूबर	06:35
21 जुलाई	05:49	21 जुलाई	21:07	26 अक्टूबर	10:46	27 अक्टूबर	06:37
24 जुलाई	05:51	24 जुलाई	16:43	02 नवम्बर	17:03	03 नवम्बर	06:41
30 जुलाई	05:54	30 जुलाई	21:53	04 नवम्बर	12:34	05 नवम्बर	06:42
04 अगस्त	05:57	04 अगस्त	09:12	06 नवम्बर	06:34	06 नवम्बर	06:43
08 अगस्त	14:28	09 अगस्त	14:23	10 नवम्बर	18:48	11 नवम्बर	06:47
12 अगस्त	11:52	13 अगस्त	06:00	11 नवम्बर	18:17	12 नवम्बर	06:47
14 अगस्त	06:02	14 अगस्त	09:05	16 नवम्बर	06:51	16 नवम्बर	26:10
15 अगस्त	06:02	15 अगस्त	07:35	20 नवम्बर	10:58	21 नवम्बर	13:55
17 अगस्त	04:38	17 अगस्त	06:02	23 नवम्बर	06:57	23 नवम्बर	19:27
18 अगस्त	06:04	19 अगस्त	02:05	30 नवम्बर	07:02	30 नवम्बर	25:10
21 अगस्त	06:05	21 अगस्त	24:08	02 दिसम्बर	07:03	02 दिसम्बर	20:51
25 अगस्त	02:05	25 अगस्त	06:06	03 दिसम्बर	17:59	04 दिसम्बर	07:04
05 सितम्बर	06:12	05 सितम्बर	23:38	08 दिसम्बर	04:11	09 दिसम्बर	02:52

सवार्थ सिद्धि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
09 दिसम्बर	07:08	10 दिसम्बर	02:22	01 फरवरी	07:16	01 फरवरी	23:58
14 दिसम्बर	07:12	14 दिसम्बर	08:18	07 फरवरी	26:28	08 फरवरी	07:12
17 दिसम्बर	17:11	18 दिसम्बर	20:06	11 फरवरी	07:10	11 फरवरी	10:52
22 दिसम्बर	03:36	22 दिसम्बर	07:15	15 फरवरी	07:07	15 फरवरी	19:48
23 दिसम्बर	05:32	23 दिसम्बर	07:16	16 फरवरी	07:07	16 फरवरी	20:47
28 दिसम्बर	07:19	28 दिसम्बर	08:43	20 फरवरी	20:07	21 फरवरी	07:01
31 दिसम्बर	03:58	01 जनवरी	01:30	22 फरवरी	07:01	22 फरवरी	17:54
		(सन् 2026)		24 फरवरी	07:00	24 फरवरी	15:07
04 जनवरी	15:11	05 जनवरी	13:24	25 फरवरी	06:59	25 फरवरी	13:38
06 जनवरी	07:21	06 जनवरी	12:17	27 फरवरी	10:48	28 फरवरी	06:55
14 जनवरी	07:21	15 जनवरी	03:03	01 मार्च	06:55	01 मार्च	08:34
18 जनवरी	10:14	19 जनवरी	07:20	07 मार्च	11:15	08 मार्च	06:47
19 जनवरी	11:52	20 जनवरी	07:20	09 मार्च	16:11	10 मार्च	06:45
25 जनवरी	13:35	26 जनवरी	07:18	15 मार्च	04:49	15 मार्च	06:39
27 जनवरी	11:08	28 जनवरी	09:26	19 मार्च	28:04	20 मार्च	06:35
31 जनवरी	03:27	31 जनवरी	07:16				

महत्वपूर्ण काम जैसे- व्यापारिक या सरकारी अनुबन्ध, परीक्षा, नौकरी, चुनाव का आवेदन, क्रय-विक्रय, यात्रा, मुकदमा, भूमि, सवारी, वस्त्राभुषण खरीदने के लिए शीघ्रता वश गुरू-शुक्रास्त, अधिक मास एवं वेधादि का विचार संभव ना हो तो सर्वार्थ सिद्धि योग ग्रहण किये जाते है।

अमृत सिद्धि योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
16 अप्रैल	06:06	17 अप्रैल	05:55	08 अक्टूबर	01:28	08 अक्टूबर	06:26
14 मई	05:43	14 मई	11:47	11 अक्टूबर	06:28	11 अक्टूबर	15:20
23 मई	16:02	24 मई	05:38	19 अक्टूबर	17:49	20 अक्टूबर	06:32
20 जून	05:37	20 जून	21:44	04 नवम्बर	12:34	05 नवम्बर	06:42
21 जुलाई	21:07	22 जुलाई	05:49	16 नवम्बर	06:51	17 नवम्बर	02:10
24 जुलाई	16:43	25 जुलाई	05:50	02 दिसम्बर	07:03	02 दिसम्बर	20:51
17 अगस्त	04:38	17 अगस्त	06:02	14 दिसम्बर	07:12	14 दिसम्बर	08:18
18 अगस्त	06:04	19 अगस्त	02:05	17 दिसम्बर	17:11	18 दिसम्बर	07:14
21 अगस्त	06:05	21 अगस्त	24:08	(सन् 2026)			
13 सितम्बर	10:11	14 सितम्बर	06:15	14 जनवरी	07:21	15 जनवरी	03:04
15 सितम्बर	06:16	15 सितम्बर	07:31	11 फरवरी	07:10	11 फरवरी	10:52
18 सितम्बर	06:17	18 सितम्बर	06:32				

अमृत सिद्धि योग- अमृत सिद्धि योग में सर्वार्थ सिद्धि योग वाले कार्यो के अतिरिक्त प्रेम- विवाह करना, विदेश यात्रा, कार्य सिद्धि हेतु अनुष्ठान करना आदि कार्य किये जाते है। अमृत सिद्धि योग वाले सर्वार्थ सिद्धि योग विशेष शुभ होते है। परन्तु अमृत सिद्धि योग वाले दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी है। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित है। जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो तो अमृत सिद्धि योग बनता है। लेकिन यदि उस दिन पंचमी तिथि हो तो उस तिथिकाल में स. सि0 एवं अ0 सि0 योग दूषित होने के कारण इसे त्याग देना चाहिए।

द्विपुष्कर योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
20 मई	सू. उ.	20 मई	05:52	04 अक्टूबर	सू. उ.	04 अक्टूबर	09:10
28 मई	05:03	28 मई	सू. उ.	17 नवम्बर	02:11	17 नवम्बर	04:48
07 जून	सू. उ.	07 जून	09:40	06 दिसम्बर	सू. उ.	06 दिसम्बर	08:49
22 जुलाई	सू. उ.	22 जुलाई	07:06	(सन् 2026)			
10 अगस्त	12:11	10 अगस्त	13:53	20 जनवरी	13:07	20 जन	26:43
23 सितम्बर	13:40	24 सितम्बर	04:52	16 मार्च	05:56	16 मार्च	सू. उ.

त्रिपुष्कर योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
15 अप्रैल	सू. उ.	15 अप्रैल	10:56	30 अगस्त	सू. उ.	30 अगस्त	14:38
20 अप्रैल	11:49	20 अप्रैल	19:01	13 सितम्बर	07:24	13 सितम्बर	10:12
29 अप्रैल	सू. उ.	29 अप्रैल	17:32	28 अक्टूबर	15:45	29 अक्टूबर	सू. उ.
03 मई	07:53	03 मई	12:34	02 नवम्बर	07:32	02 नवम्बर	17:04
17 जून	25:02	18 जून	सू. उ.	16 दिसम्बर	14:10	16 दिसम्बर	23:58
22 जून	17:39	22 जून	25:23	27 दिसम्बर	सू. उ.	27 दिसम्बर	09:10
01 जुलाई	10:21	02 जुलाई	सू. उ.	31 दिसम्बर	05:01	31 दिसम्बर	सू. उ.
06 जुलाई	21:16	06 जुलाई	22:42	(सन् 2026)			
12 जुलाई	सू. उ.	12 जुलाई	06:36	04 जनवरी	12:31	04 जनवरी	15:12
19 अगस्त	25:08	20 अगस्त	सू. उ.	28 फरवरी	सू. उ.	28 फरवरी	09:35
24 अगस्त	26:06	25 अगस्त	सू. उ.				

'द्विपुष्कर योग' द्विगणित, **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित लाभ एवं हानिकारक होता है। इन योगों में लाभ हानि होने पर उसका दुगुना - तिगुना फल मिलता है। जैसे इन योगो में कोई भी शुभ कार्य करने या कोई वस्तु क्रय करने पर उसका दुगना या तिगुना होने की संभावना बनती है। इन योगो में कोई हानि होने पर भी उसकी दुगने-तिगुने हानि भविष्य में हो सकती है अतः इन योगो में बहुमुल्य वस्तुएं खरीदना, व्यवसाय आरम्भ करना शुभ होता है।

परिहार-इन योगो में किसी की मृत्यु होने या कीमती वस्तु नष्ट होने पर वशिष्ठ ऋषि के कथानुसार दो अथवा तीन गौ के बराबर मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान हितकर होता है।

रवि पुष्य योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
06 अप्रैल	सू. उ.	07 अप्रैल	सू. उ.
04 मई	सू. उ.	04 मई	12:54
08 दिसम्बर	04:12	08 दिसम्बर	सू. उ.
(सन् 2026)			
04 जनवरी	15:12	05 जनवरी	सू. उ.
01 फरवरी	सू. उ.	01 फरवरी	23:58
01 मार्च	सू. उ.	01 मार्च	08:35

रवि पुष्य योग में जडी- बुटी तोडना, औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र, तन्त्रादि प्रयोगो में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

गुरू पुष्य योग वि.स. 2082 (सन् 2025-26 ई0)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता0/माह	घ0 मि0	ता0/माह	घ0 मि0
24 जुलाई	16:44	25 जुलाई	सू. उ.
21 अगस्त	सू. उ.	21 अगस्त	24:09
18 सितम्बर	सू. उ.	18 सितम्बर	06:33

गुरू पुष्य योग में यन्त्र दिक्षा, उच्च विद्या ग्रहण करना, धन-भूमि विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना तथा विदेश यात्रा आरम्भ करना शुभ परन्तु विवाह करना सर्वथा त्याज्य है।

श्री विक्रम संवत 2082 के प्रमुख पर्व-त्यौहारों के पूजन का श्रेष्ठ मुहूर्त (सन 2025-26 ई0)

चैत्र नवरात्र :- बसन्त नवरात्र का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल में उदयव्यापिनी प्रतिपदा में द्विस्वभावलग्न युक्त प्रातः काल में होता है। इस वर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा, 30 मार्च 2025 को दोपहर 12:49 तक है। शास्त्रानुसार बसन्तनवरात्र का प्रारम्भ व घटनास्थापना इसी दिन होगी। सायं 05:53 के बाद वैधृति योग है। घटनास्थापना हेतु चर-लाभ-अमृत का चौघड़िया प्रातः 07:55 से दोपहर 12:31 तक एवं अभिजित मुहूर्त दोपहर 12:07 से 12:55 तक रहेगा।

राखी बाँधने का समय :- श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, 09 अगस्त 2025 को रक्षाबन्धन है। इस दिन पूर्णिमा तिथि दोपहर 01:24 तक है। इस वर्ष रक्षाबंधन पर्व पर भद्रा का साया नहीं होगा। रक्षासूत्र (राखी) बाँधने हेतु शुभ का चौघड़िया प्रातः 07:35 से प्रातः 09:15 तक रहेगा। चर-लाभ-अमृत का चौघड़िया दोपहर 12:32 से सायं 05:25 तक एवं अभिजित मुहूर्त दोपहर 12:08 से 12:56 तक है।

श्री गणेश चतुर्थी :- दिनांक 27 अगस्त 2025 को भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी दोपहर 03:44 तक रहेगी। श्री गणेश पूजन के लिए मध्याह्न काल (वृश्चिक ल0) सहित को श्रेष्ठ माना गया है। मध्याह्न काल प्रातः 11:11 से दोपहर 01:45 तक रहेगा। श्री गणेश पूजन हेतु वृश्चिक ल0 दोपहर 12:11 से 02:27 तक रहेगा, लाभ -अमृत का चौघड़िया प्रातः 06:07 से 09:18 शुभ चौघड़िया प्रातः 10:51 से दोपहर 12:27, चर लाभ का चौघड़िया 03:37 से सायं 06:49 तक रहेगा।

शारदीय नवरात्रारम्भ घट स्थापना:- आश्विनशुक्ल प्रतिपदा दिनाङ्क 22 सितम्बर 2025 को शारदीय नवरात्र का आरम्भ हो रहा है। देवीपुराण में द्विस्वभावलग्र युक्त प्रातः काल में देवी का आह्वान एवं घटस्थापना पूजन करने का विधान है। स्थापना हेतु द्विस्वभाव लग्र (कन्या) एवं अमृत का चौघड़िया प्रातः 06:19 से प्रातः 07:49 तक, शुभ का चौघड़िया प्रातः 09:19 से प्रातः 10:49 तक है। अभिजित् प्रातः 11:55 से दोपहर 12:43 तक रहेगा।

बही-खाता व गणेश-लक्ष्मी जी की मूर्ति लाने का शुभ मुहूर्त:-

बहीखाते लाने का शुभ मुहूर्त :- दिनाङ्क 14 अक्टूबर 2025 (मंगलवार) को प्रातः 11:54 से दिनाङ्क 15 अक्टूबर 2025 (बुधवार) को प्रातः 11:59 तक पुष्य नक्षत्र युक्त श्रेष्ठ मुहूर्त है।

दीपावली व लक्ष्मी पूजन मुहूर्तः – इस वर्ष कार्तिककृष्ण अमावस्या दिनाङ्क 21 अक्टूबर 2025 को प्रदोषकाल में अवास्या होने से इसी दिन दीपावाली मनायी जायेगी। लक्ष्मी पूजन प्रदोषयुक्त अमावस्या को स्थिरलग्न व स्थिरनवांश में किया जाना सर्वश्रेष्ठ होता है। इस वर्ष लक्ष्मीपूजन का समय इस प्रकार रहेगा। अमावस्या इस दिन सायं 05:55 तक रहेगी।

दिवाकाल के श्रेष्ठ समय :– चर-लाभ-अमृत का चौघड़िया प्रातः 09:22 से दोपहर 01:35 तक, अभिजित प्रातः 11:47 से दोपहर 12:35 तक, शुभ का चौघड़िया दोपहर 03:00 से सायं 04:24 तक।

सर्वश्रेष्ठ समय :– प्रदोष काल (लग्र) :– सायं 05:49 से रात्रि 08:13 तक रहेगा।

रात्रि के श्रेष्ठ चौघडिये :– लाभ का चौघड़िया सायं 07:24 से रात्रि 08:59 तक, शुभ-अमृत-चर का चौघड़िया रात्रि 10:34 से अंतरात्रि 03:21 तक है।

रात्रि के श्रेष्ठ लग्न :– वृषलग्न सायं 07:14 से रात्रि 09:11 तक रहेगा। सिंहलग्न मध्यरात्रि 01:44 से अन्तरात्रि 04:00 तक है।

होलिका दहन :– होलिका दहन फाल्गुन शुक्ल की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को भद्रा रहित काल में करना शास्त्र सम्मत बताया गया है, इस वर्ष फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी सोमवार, 02 मार्च 2026 को सायं 05:56 तक है जो कि अगले दिन मंगलवार, 03 मार्च 2026 को सायं 05:07 तक है। प्रदोष काल में पूर्णिमा होने से दिनांक 02 मार्च 2026 (सोमवार) को ही होलिका दहन होगा। इस दिन भद्रा सायं 05:56 से अन्तरात्रि 05:28 तक भूमिलोक (नैर्ऋत्यकोण-अशुभ) की रहेगी, जो कि सर्वथा त्याज्य है।

यथा :– भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी (रक्षाबंधन) फाल्गुनी (होलिकादहन) तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।।– मुहूर्त्तचिन्तामणि।

श्रेष्ठ मुहूर्त्त (प्रदोषकाल) :– धर्मसिन्धु के प्रमाणानुसार दिनांक 02 मार्च 2026 (सोमवार) को सायं 06:24 को सायं 06:36 के मध्य प्रदोषकाल में होलिका दहन श्रेष्ठ होगा।

अन्य मुहूर्त्त :– भद्रा पुच्छ मध्यरात्रि 01:23 से 02:34 तक रहेगी, जिसमें परम्परा के अनुसार होलिका दहन किया जा सकता है, परन्तु भद्रा समाप्ति के बाद कदापि नहीं करें।

निष्कर्ष :– यदि भद्रा निशीथकाल से आगे तक रहे तो (भद्रा मुख को छोड़कर) होलिकादहन भद्राकाल में ही (भद्रा पुच्छ या प्रदोष) करना चाहिए। दिनांक 2 मार्च 2026 को भद्रा एवं भद्रा पुच्छ दोनों ही निशीथकाल से आगे तक व्याप्त है, अतः प्रदोषकाल ही होलिकादहन हेतु श्रेष्ठ है।

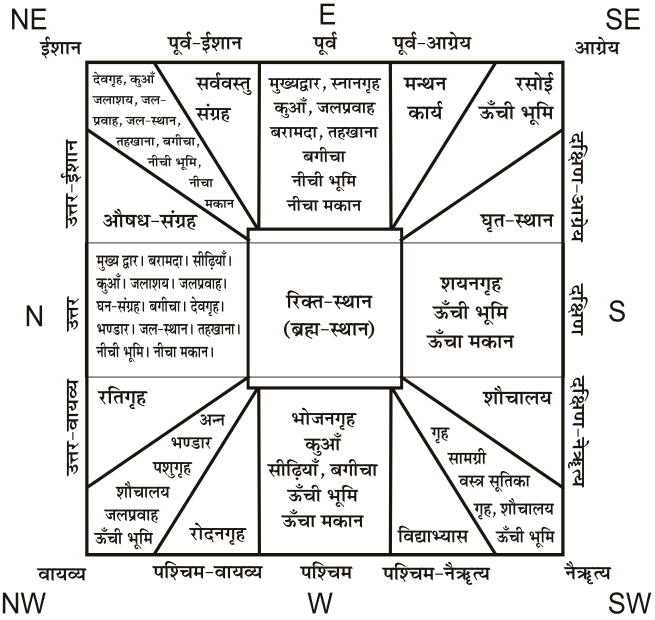
यात्रा प्रवास हेतु श्री गोकुल नाथ जी के वचनामृत-श्री गोरक्षनाथ जी के वचन तत्व

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मं	फल श्रुति	पहर 1	पहर 2	पहर 3	पहर 4	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	सुख-विवाद का अभाव, अर्थ पूर्ण, क्लेश न हो	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	महाभय-जीवनाश-पछतावा	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कामना सिद्धि-लक्ष्मी वृद्धि	अर्थ	राजपद	सुख	विनाश	द्रव्य	दुख	इष्ट प्रा.	धन
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश व जीव नाश, कुशल घर न आवे	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	वस्तुलाभ, व्याधि, संकट मिटे, मित्र मिले	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे	संकट	क्लेश	मित्र	अर्थ	भय	लाभ	मृत्यु	धन
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाग्योदय, मित्र साधन प्राप्ति, धन वृद्धि	विलम्ब	अर्थ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कुयोग-कार्य हानि-विवाद, व्यवहार-न्युन्यता	0	0	0	0	0	सुख	0	सुख
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	अर्थ लाभ, कार्य सफलता, सौभाग्य	अर्थ	भय	मित्र	सुख	सुख	लाभ	सिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	कार्य-विलम्ब, श्रम साधना, यात्रा प्रवास योगद	शीघ्रलाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	कष्ट-विवाद-भय परंतु परिणाम नेष्ट नही	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लोभ	धनलाश	0	मित्र
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	सुख सुविधा, मेल-मिलाप, कार्य सुयोग, धनलाभ	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	0	सुख	मृत्यु	कष्ट

गोरखनाथ के पूछने पर मत्स्येन्द्रनाथ इसे मुहूर्तराज बताया है। इस गणना में कोई भी दोष मान्य नहीं है। कोष्ठक में दी गयी तिथि उस माह की कृष्ण तथा शुक्ल दोनो पक्षों में समान समझे। जैसे फाल्गुन शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि में गमन करने वालों को कार्य सिद्धि होवे, पहले प्रहर में जाने से अर्थ लाभ दूसरे में सुख तीसरे में शोक एवं चौथे में सुख इसी प्रकार दिशाओं के फल भी जाने।

।। अथ वास्तु प्रकरण ।।

गृह निर्माण में वास्तु दिग्दर्शन



वास्तु विचार

1. घर में सुबह शाम कपूर एवं गुग्गल का धुआँ लगाने से घर के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।
2. यदि आपका रसोईघर आग्नेय कोण में नहीं है, तो आप अपने घर के आग्नेय कोण में दीपक या धूप अगरबत्ती जलायें तत्पश्चात ही भोजन बनायें तो आग्नेय कोण का वास्तु दूर हो जाता है।
3. अशोक वृक्ष की जड़ का एक छोटा टुकड़ा पूजा स्थान पर रखें तथा प्रतिदिन इसकी पूजा करें तो घर में धन की कमी नहीं रहती।
4. घर की सीमा में अशोक वृक्ष लगाने से तथा उसको सींचने से धन की वृद्धि होती है।
5. यदि बनते हुए मकान में किसी कारणवश काम रूक जाए तो शिव का अभिषेक करवाएँ।
6. प्रत्येक अमावस्या को पूरे घर की सफाई करें तथा ब्राहाण को भोजन करायें ऐसा करने से पितृ दोष या नजर आदि दोष दूर हो जाती है।
7. यदि आपके पास भूखण्ड है परन्तु आर्थिक कमी के कारण मकान नहीं बना पा रहे हैं तो किसी शुक्ल पक्ष में हस्त नक्षत्र वाले दिन भूखण्ड वाले ईशन कोण में एक अनार का पौधा लगायें।
8. घर में नमक के पानी का पोंछा लगाने से घर में वास्तु दोष दूर होते है।
9. भवन में दरार पड़ना भी एक दोष है इस दोष को तुरन्त मिस्त्री को बुलाकर मरम्मत करवा लेना चाहिए।
10. घर में मधुमक्खी छत्ता कबूतर घोसला बना दें तो उसे तुरन्त हटा दें।

आपको किस दिन क्या करना शुभ है।

	रविवार	सोमवार	मंगलवार
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवम् प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवम् प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवम् प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी
व्यापार सम्बधित कार्य	राज्य प्रशासन कार्य सेनाधिकारी, आभूषण औषधि, शास्त्र, अनाज सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि, मेडिकल, मंत्रानुष्ठान	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, शंख औषधि, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौन्दर्य प्रसाधन, सुगन्धि, विदेश	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी, लोहा तांबा, भूमि, शल्य

पंञ्चको में वर्जित कार्य

धनिष्ठा पञ्चक त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे।
त्याज्या दक्षिणागदिगयात्रा गृहच्छादनमेव च।।

धनिष्ठा आदि पञ्चक नक्षत्रों में कुशा, लकड़ी एवं गृह निर्माण, घर की छत (लेण्टर आदि) तथा दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है।

पुरूष के लिए नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त-

रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, हस्त, चित्रा, तीनों, उत्तरा, अश्विनी, पुनर्वसु, रेवती, नक्षत्रों में, तथा गुरू, बुध, शुक्रवार, को पुरूष नवीन वस्त्र धारण करें।

स्त्रियों के लिए नवीन वस्त्र धारण करने के लिए मूहूर्त-

अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, नक्षत्रों में एवं बृहस्पति, शुक्रवार श्रेष्ठ होता है।

आपको किस दिन क्या करना शुभ है।

	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	गणित, लेखनादि बौद्विक कार्य, बैंक, वकालत तकनीकी, ज्योतिष, वाहनादि चलाना सीखना	दर्शन शास्त्र धर्म मंत्र, ज्योतिष, संस्कृत विद्यारम्भ वकालत, उच्च पद, प्रशासनिक शिक्षा	नृत्य गायन कला, संगीत अभिनय, गीत काव्य सौन्दर्य सम्बन्धी	तकनीकी शिल्प कला मशीनरी अंग्रेजी, उर्दू फारसी का ज्ञान शुरू करना
व्यापार सम्बन्धी कार्य	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय–विक्रय शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन, शिक्षण वकालत, शिल्प सम्पादन कार्य क्रय विक्रय	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, आभूषण औषधि, लकड़ी, भूमि वाहनादि का क्रय विक्रय, विदेश गमन	संगीत, सिनेमा, विदेश यात्रा, टेलीविजन श्रृंगारिक वस्तु, रूई, कपड़ा चाँदी, रसायन, सुगन्धि	मशीनरी, लोहा, लकड़ी, सीमेन्ट, तेल, पैट्रोल पत्थर, ठेकेदार, शस्त्रों का विक्रय, अधिनस्थ कर्मचारी

अन्य विविध मुहूर्त

मुहूर्त नाम	शुभ ग्राह्य तिथि	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चों को स्कूल में डालना (विद्यारम्भ)	2, 3, 5, 7, 10 11, 12	उत्तरायण, भाद्र 5 वें वर्ष रवि, चन्द्र बु.गु.शु.	अश्विन, पुन., श्ले, रे, अनु., आर्द्रा, स्वाती, चित्रा
दुकान/बही खाता शूरू	1 (कृ) 3, 5, 7, 10, 11, 13 शुक्ल पक्ष	रवि, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, वैशाख, ज्ये, आषा, भाद्र, मार्ग, माघ, फाल्गु	अ.रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा, मूल, उत्तरा, मूल, श्रव
नौकरी करना	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 15	रवि, चन्द्र, बुध, गुरू शुक्र उत्तरायण में	अश्वि, रोह, मृग, पुन. पुष्य, हस्त चित्रा रेवती
गृहारम्भ (मकान बनाना)	2, 3, 6, 7, 10, 11, 12, 13 शुक्लपक्ष	सोम, बु.गु.शु. वैशा ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन	रोहि, मृग, पुन., अनु शत, उत्तरा धनि हस्त, चित्रा, स्वाति
नये घर में प्रवेश	2,3,5,7,10,11, 13, 15 शुक्ल	वैशाख,ज्येष्ठ, मार्गशीष माघ, फाल्गुन	अ.,रोह, मृग, उत्तरा 3, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु.
भूमि खरीदने के लिए	1 (कृ), 5, 6, 10, 11, 15 शुक्ल	मंगल, गुरू, शुक्र	मृग, पुन, श्ले, मघा विशा, अनु., पूर्वा, उ.,मूल, रे
ऑपरेशन कराने के लिए	2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13	रवि, मंगल, गुरू	अश्वि, रोहिणी, मृग चित्रा, अनु. श्रव.
कार-स्कूटर आदि वाहन खरीदना	1 (कृ), 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13 शुक्ल	चन्द्र, बुध, गुरू शुक्रवार में।	अश्वि, रोह, मृग अनु, शत, पुन, पुष्य, स्वाती, उत्तरायण हस्त, चित्रा, रेवती
शिलान्यास (नींव डालना)	गृहारम्भ वाली तिथियाँ	गृहारम्भ वाले वार-मास, प्रविष्टा15,7,9,10,21, 24 त्याज्य	गृहारम्भ वाले नक्षत्र (अ.,श्रव., त्याज्य)

अंक ज्योतिष

जानिए अपने शुभादि कारको का विचार - अंक ज्योतिष के द्वारा शुभाशुभ अंकादि कारकों को जानने के लिए जन्म-तिथि (जिस तिथि में आपका जन्म हुआ हो) के मूलांको से किया जाता है जो कि प्रस्तुत कोष्ठकों में दिया है।

जन्म-तारीख	मूलांक	जातक की प्रकृति (लक्षण)	महत्वपूर्ण वर्ष (आयु के)	शुभ अंक	शुभ वार	शुभ रंग
1, 10, 18,19	1	स्थिर चित्त, दृढ निश्चय, स्वतंत्र विचारक स्व-अनुशासन प्रिय	1,10,28,37 46,55,64, 75	1, 4 5	रविवार सोमवार	भूरा, नीला सुनहरा
2, 11, 20, 29	2	कला प्रिय, स्नेहशील, चञ्चल आत्मविश्वास की कमी	2,11, 20, 29 38 47, 56,65	2, 5 7	बुधवार बृहस्पतिवार	सफेद, हरा, लाल
3, 12, 21, 30	3	कठोर शासक, महत्वाकांक्षी कुशल संगठक एवं असन्तुष्ट	3,12,21, 30 39, 48, 57, 66	3, 5	बृहस्पतिवार शुक्रवार मंगलवार	चमकीला, गुलाबी, जामुनी
4, 13, 22, 31	4	संघर्षशील, समाजसुधारक रूढ़िवादी विचारों के विरोधी	4,13,22, 31 40,49, 58,67		रविवार सोमवार शनिवार	नीला, खाकी भूरा रंग
5, 14, 23	5	मिलनसार, व्यापार के प्रति आकर्षण, फुर्तीला, शीघ्र-क्रोधी	5,14,23, 32, 41, 50, 59, 68	1, 3 7	बुधवार शुक्रवार	सफेद पीला
6, 15, 24	6	आकर्षक व्यक्तित्व, साहित्य संगीत, कलाप्रिय, ईर्ष्यालु	6,15, 24 33, 42, 51, 60	3, 6	मंगलवार बृहस्पतिवार शुक्रवार	नीला आसमानी
7, 16, 25	7	कल्पनाशील, भावुकता यात्रा प्रिय, आर्थिक उन्नति में कमी	7,16, 25 34, 43, 52, 61	1, 3 5	रविवार सोमवार	हरा, हल्का पीला, सफेद
8, 17, 26	8	महत्वपूर्ण कार्य करने पर भी उदासीनता,	8,17, 26 35 44, 53, 61, 71	2, 4	शनिवार	काला नीला
9, 18, 27	9	उच्चपदाभिलाषी, धैर्यवान चुस्त, दु:साहसी, शीघ्र क्रोधी	9,18, 27, 36, 45, 54, 63	3, 6	मंगलवार	गुलाबी, गहरा लाल

सामान्य कार्यों में वारादि विचार

नाम वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण कराना	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	अतिशुभ	अशुभ	शुभ	अति शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकदमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

नोट :- प्रतिदिन क्षौरकर्म (दाढ़ी बनाने) वालों के लिए शुभाशुभ गौण है।

अलंकार धारण विचार :

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, रेवती, नक्षत्रों में रवि, शुक्र, बृहस्पति, बुधवार के दिन स्त्री के लिए सुर्वण आदि अलंकार (जेवर) धारण करना शुभ होता है।

राहुकाल

वार	समय
रवि	सांय 4:30 से 6:00 तक
सोम	प्रात: 7:30 से 9:00 तक
मंगल	दिन 3:00 से 4:30 तक
बुध	दिन 12:00 से 1:30 तक
बृहस्पति	दिन 1:30 से 3:00 तक
शुक्र	प्रात: 10:30 से 12:00 तक
शनि	प्रात: 9:00 से 10:30 तक

यमकाल

वार	समय
रवि	दिन 12:00 से 1:30 तक
सोम	प्रात: 10:30 से 12:00 तक
मंगल	प्रात: 9:00 से 10:30 तक
बुध	प्रात: 7:30 से 9:00 तक
बृहस्पति	प्रात: 6:00 से 7:30 तक
शुक्र	दिन 3:00 से 4:30 तक
शनि	दिन 1:30 से 3:00 तक

राहुकाल एवं यम काल प्रतिदिन लगभग 1:30 घण्टे का होता है। जिसका प्रत्येक वारों में निर्धारित समय उपरोक्त सारणी में दिया है। राहुकाल एवं यमकाल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करना वर्जित है।

राहूकाल से दूर्षित समय का विचार दक्षिणी भारत में बहुत किया जाता है। शनैः-शनैः उत्तरी भारत में भी इसकी मान्यता बढ़ रही है।

नोट: दर्शायी गई समय सारणी प्रात: 6:00 बजे के सूर्योदय के अनुसार है। अत: पंञ्चाग में दिये गये दैनिक सुर्य उदय के अनुसार राहुकाल आदि प्रारम्भ होगा तथा लगभग 1 घ. 30 मि. की अवधि का काल होगा।

श्रीहरिहर कैलास आश्रम ऋषिकेश द्वारा संचालित अन्य शाखाये

श्री बैजनाथ तीर्थ आश्रम (ट्रस्ट)

''तपस्थली सीता रमणी गुफा'' पपरोला (बैजनाथ)

जिला कांगड़ा (हि.प्र.) मो. :- 8627999523

✷

श्री हरिहर घटाटोप (रोहड़ू नाग) आश्रम

ग्राम मढेड, तहसील बैजनाथ, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

✷

श्री हरिहर (संतोषी माता मन्दिर आश्रम)

ग्राम बडसर, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)

✷

श्री हरिहर सत्संग भवन

प्लाट नं. 7, सीताराम बाजार, ब्रह्मपुरी जयपुर (राज.)

✷

श्री स्वामी हरिहर तीर्थ अन्नक्षेत्र

श्री स्वामी अच्युतानन्द आश्रम, गौरीकुण्ड, गंगोत्री (उत्तरा.)

✷

श्री स्वामी हरिहर (सेवानन्द) आश्रम

सशस्त्र सीमा सुरक्षा बल कैम्प के सामने, शीशम झाड़ी, ऋषिकेश (उत्तरा.)

✷

श्री स्वामी हरिहर (मुक्ताश्रम)

कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषिकेश (उत्तरा.)

याद्दास्ती तालिका

ता0	विवरण
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	
29	
30	
31	

याद्दास्ती तालिका

ता0	विवरण
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	
29	
30	
31	

।। श्री हरिहरेश्वरौ महादेव ।।

(श्री हरिहर कैलास ज्ञानपीठ न्यास, ऋषिकेश)



नवग्रह मण्डप

